सामुद्रिक शास्त्र

[ज्योतिष विज्ञान]

लेखकः—
ज्योतिषाचार्य "भृगराज शर्मा"

प्रकाशकः—
पुस्तक मन्दिर, मथुरा।

द्वितीय संस्करण] सन् १९५९ ई० मूल्य ४)

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

प्रकाशकः—
बा० शिवचरनलाल गुप्त,
पुस्तक मन्दिर,
मथुरा।

मुद्रकः—
चौधरी दामोदर दास सैनी,
सुभाष प्रिन्टिङ्ग प्रेस, मथुरा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ज्योतिष-शास्त्र

प्रथम अध्याय।

हस्त परीक्षा

ज्योतिष शास्त्र बहुत ही गम्भीर तथा कठिन विषय है इसके ज्ञाता बहुत ही कम देखने को मिलते हैं। कारण यह है कि इसको सीखने के लिए घोर परिश्रम तथा काफ़ी समय की आवश्यकता है। आदमी के तीनों काल की बातें बताना, सूर्य चन्द्र की गति निकाल कर ग्रहण का पता लगाना नक्षत्रों का चाल मालूम करना और संसार भर की आगामी बातों को मालूम करना इसी शास्त्र में है।

ज्योतिष शास्त्र के कई विभाग हैं। इतना बड़ा शास्त्र है कि इसके हर प्रयोग को सीखने के लिए सैकड़ों वर्षों का समय चाहिये इसलिये इसके कई विभाग हो गये हैं। जिसका प्रयोग सीख कर उसी के द्वारा गति बताई जाती है।

ज्योतिष शास्त्र के मुख्य भाग हैं।

१—रमल प्रयोग।

२—स्वरोदय।

३—सामुद्रिक।

४—जफर।

५—जातक इत्यादि।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

इन विविध प्रकार के प्रयोगों द्वारा संसार भर की प्रत्येक चल अचल व प्राकृतिक बातों के भूत, भविष्य और वर्तमान के बारे में बताया जा सकता है। संसार नाशवान है इसलिये इसकी प्रत्येक वस्तु भी नाशवान है। जब तक हर वस्तु का नाश होता है उसकी जीवन लीला तीन कालों में होती है।

तीन काल हैं :—

१—भूत काल।

२—भविष्य काल।

३—वर्तमान काल।

जब वस्तु का नाश हो जाता है तो उसकी जीवन लीला का एक काल ही रह जाता है वह है भूत काल। संसार का इतिहास ही भूत काल के कारनामों से भरा पड़ा है। सच तो यह है कि इतिहास का दूसरा ही नाम भूतकाल की लिखित घटनाओं का कोष कहा जाय तो किसी हद तक ठीक होगा।

१—भूतकाल-जीवन के वह दिन या वह समय जो गुजर गया हो उसे ही भूतकाल कहते हैं। अतीत की घटनायें इस काल का मुख्य अङ्ग हैं।

२—भविष्य काल-जीवन के वह दिन या वह समय जो आने को हो। जिस समय की मनुष्य कल्पना करता है उसे भविष्य काल कहते हैं।

३—वर्तमान काल-जीवन के वह दिन या समय जो व्यतीत हो रहा हो। जिस समय में गुजरते हुए भूत के बारे में अतीत की घटनायें सोची जा सकती हैं और भविष्य की घटनाओं का ख्याल किया जा सकता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ज्योतिष के अन्य प्रयोगों की भाँति सामुद्रिक प्रयोग भी तीनों काल की घटना स्पष्ट रूप से बताता है। वरन् कहना अत्युक्ति न होगी कि ज्योतिष के समस्त प्रयोगों में सामुद्रिक शास्त्र का प्रयोग अधिक है।

सामुद्रिक शास्त्र द्वारा—

१—हस्त रेखायें देखकर जीवन के तीनों काल के बारे में पूर्ण विवरण बताया जा सकता है।

२—पैरों की रेखाओं से भी अधिक हाल बताया जा सकता है।

३—मस्तक की रेखाओं से भी जीवन के विविध कालों की हालत स्पष्ट होती है। यह सबसे सुन्दर जटिल प्रयोग हैं।

हस्त रेखा देख कर जीवन का हाल बताना अधिक प्रचलित है। कारण यह है कि सामुद्रिक शास्त्र के सब प्रयोगों में यह सबसे सरल तथा सीधा है। हस्त परीक्षा के लिए नीचे लिखी बातें जानना जरूरी है।

१—हाथ में चार उङ्गलियाँ और अङ्गूठा होता है। किसी २ के छः अङ्गुलियाँ अङ्गूठा सहित होती हैं। उन्हें छङ्गा कहा जाता है सामुद्रिक शास्त्र द्वारा हस्त परीक्षा करते समय चार अङ्गुलियाँ और एक अङ्गूठे के बारे में ही विचार किया जाता है छटी उङ्गली या अँगूठे को वैसे ही छोड़ देते हैं। उसका असर पड़ता है परन्तु उसका निश्चित विषय नहीं।

२—कलाई से ऊपर के भाग को हाथ कहते हैं। हस्त परीक्षा करते समय :—

(अ) हथेली।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

(ब) चार उङ्गलियाँ।

(स) अङ्गूठा।

इन तीन चीजों को देखा जाता है। इन्हीं के द्वारा तमाम हाल मालूम होता है। आकृति नम्बर १—देखो कि चारों उङ्गलियाँ अँगूठे और हथेली में बहुत सी रेखायें हैं। यह रेखा भाग्य देखते समय काम में आती हैं।

चारों उङ्गलियों और पाँचवें अँगूठे में तीन लाइनें होती हैं। इन्हीं तीनों लाइनों को सार्गिक रेखा कहा जाता है। सार्गिक रेखायें उङ्गलियाँ तथा अँगूठेको तीन पर्वों में विभाजित करता हैं।

१—सबसे ऊपर वाले पर्व को=प्रथम पर्व कहते हैं।

२—बीच वाले पर्व को=मध्यम पर्व कहते हैं।

३—सबसे नीचे वाले को=तृतीय या अन्तिम पर्व कहते हैं।

प्राकृतिक नियम द्वारा इन पर्वों का अधिक महत्व है। अगर उङ्गलियों को पर्व में विभाजित नहीं किया गया होता तो यह हाथ ककरोट उठाने वाले फावड़े को तरह होता और हम लिखने, उठाने या किसी भो काम के लिये पूरी तरह अयोग्य होते। तमाम उङ्गलियाँ और अँगूठों में तीन जोड़ हैं, जिनकी सहायता से हर काम आसानी से किया जा सकता है, और किया जाता है।

हथेली इन उङ्गलियाँ और अँगूठे का मुख्य केन्द्र है। प्राकृतिक ढङ्गने तो हथेली को उङ्गलियों और अँगूठे की सहायता के लिये बनाया पर सामुद्रिक शास्त्र ज्ञाताओं ने इसको सबसे अधिक महत्व रखा है। उनका कहना है कि आदमी क

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri.

सीधा हाथ और स्त्री का बांया हाथ देखकर ही तीनों काल का हाल बताया जा सकता है।

गौर से हथेली के देखने से मालूम होगा कि उनमें अनेक आड़ी तिरछी रेखायें दिखाई देंगी। यही रेखायें बड़े महत्व की हैं। सामुद्रिक शास्त्र ज्ञाताओं का कथन है कि यह रेखायें समय या गति के अनुसार बनती बिगड़ती रहती हैं।

आकृति नं० १ में गौर से देख कर पता चल जायगा कि हथेली में कितनी रेखायें हैं। उनको सामुद्रिक शास्त्र ज्ञाताओं ने विभाजित करके उनके नाम रख दिये हैं ताकि उनके बारे में कहने में आसानी पड़े।

आकृति नं० १ दी गई रेखाओं को :—

१—विवाह रेखा।
२—आत्म रेखा।
३—चन्द्र रेखा।
४—विद्या रेखा।
५—भाग्य रेखा।
६—स्वास्थ्य रेखा।
७—जीवन रेखा।
८—मङ्गल रेखा।
९—धन रेखा।
१०—शुक्रमुद्रिका।

यह रेखायें लगभग सभी हाथों में पाई जाती हैं इन रेखाओं के बिना हस्त परीक्षा नहीं हो सकती। इनको जानना इनके स्थान को पहचानना बहुत ही आवश्यक है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१२ वर्ष की आयु वाले लड़के और १० वर्ष की आयु वाली लड़की के हाथ की रेखायें देखकर उसके तीनों काल की बातें नहीं बताई जासकती क्योंकि इस अवस्थामें उनके हाथकी रेखायें बहुत ही जल्दी२ बनती बिगड़ती हैं।कारण यह है कि इसी अवस्था में संगत का प्रभाव पड़ता है।मां बाप की शिक्षा और संगति पर ही मनुष्य का भाग्य निर्भर होता है। इसलिये कम अवस्था वालों का हाथ देख कर कोर निर्णय देदेना ठीक नहीं ऊपर दी हुई रेखाओं के विषय में नीचे लिखी हुई बातें जानना बहुत जरूरी है ।

१—रेखाओं का स्थान।

२—उनका ज्ञान।

आकृति न० 1 की रेखाओं के बारे में जानना जरूरीहै;—

१—विवाह रेखा सबसे छोटी उँगली की जड़से थोड़ा खसक कर जोती है। कनिष्ट उँगली के नीचे वाली विवाह रेखा बहुत छोटी होती है मगर उसका चिन्ह साफ दिखाई देता है। एक साफ बड़ी रेखा के पास कई और वैसी रेखायें भी होती हैं जिनका फल आगे दिया जायगा।

२—आत्म रेखा इस रेखा के बारे में विविध प्रकार के यह है और इसी तरह इसके अनेक नाम भी हैं। कुछ सामुद्रिक ज्ञाता इसे प्रेम रेखा या हृदय रेखा भी कहते हैं। विवाह रेखा के नीचे से कुछ दूर हट कर यह निकलती है और सीधी कुछ गोलाई ऊपर को तरफ लेती हुई तर्जनी की जड़ से कुछ दूर इधर ही या जड़हीं में जाकर समाप्त होती है। इससे हृदय के विचार आत्मिक भावनाओं का ज्ञान बताया जाता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

३—चन्द्र रेखा विवाह रेखा के कुछ नीचे ही से यह रेखा आरम्भ होकर धनुषाकार स्थिति से होती हुई आत्म रेखा को एक स्थान पर काटती हुई नीचे की तरफ पहुँच कर समाप्त होती है। इस रेखा की स्थिति अधिक स्पष्ट नहीं होती और इसको जानने के लिये बहुत ही ध्यान से काम लिया जाना चाहिये।

४—विद्या रेखा चन्द्र रेखा से कुछ दूर सामान्तर ढंग से चलती है। यह रेखा अनामिका उँगली की जड़ से निकल कर नीचे की तरफ चलती है। हथेली पर तह अधिक स्पष्ट नहीं होती इसलिये हथेली को थोड़ा लचा कर देखने से इस का ज्ञान करना चाहिये। अधिकतर इसकी लम्बाई अधिक नहीं होती पर काफी टूटी फूटी होती है।

५—भाग्य रेखा हथेली के निचले भाग से निकलकर अपनी स्थिति को गहरी करती हुई ऊपर की तरफ चलने लगती है। यह बहुत स्पष्ट और लम्बी होती है नीचेसे मध्यमा उँगली की ओर जाते समय बीच की रेखाओं को कई स्थान पर काटती है। अक्सर यह रेखा मस्तक रेखा या धन रेखा के पास जाकर फट जाती है और अपनी गति तर्जनी की ओर कर देती है। इसका अधिक महत्व है। भविष्य काल की बातें बताने लिये इसका पूरा ज्ञान होना बहुत ही आवश्यक है।

६—स्वास्थ्य रेखा आत्म रेखा में नीचे से नीचे की ओर जाते समय भाग्य रेखा को एक स्थान पर काटती है या उसके अन्त भाग में जाकर ही आश्रय ले लेती है। इसकी स्थिति बहुत अस्पष्ट होती है और इसका पता लगाने के लिये हथेली के पृष्ट भाग को थोड़ा सा मोड़ना पड़ता है। यह

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सीधी होती है और इसमें आंकड़िया या टूटन नहीं होती। इससे तन्दुरुस्ती का ज्ञान होता है।

७—जीवन रेखा तजनी उँगली के कुछ नीचे ही से अँगूठेकी बनावट के कारण गोलाई पड़ जाती है। इसी गोलाई से कुछ ऊपर की ओर से यह रेखा भी ऊपरकी तरफ चलती है। यह रेखा अधिक स्पष्ट नहीं होती परन्तु इसका रूप ऐसा भी नहीं होता कि उसके बारे में अधिक ध्यान की आवश्यकता हो भाग्य रेखा के पार्श्व ही में उसे आसानी से देखा जा सकता है इससे आयु और जीवन का ज्ञान होता है।

८—मङ्गल रेखा जीवन रेखा के नीचे से हो निकल कर यह रेखा उसके सामान्तर चलती हुई उससे नीचे के स्थान पर जा पहुंचती है। इसकी स्थिति का पता लगाने के लिये अधिक ध्यान की जरूरत इसलिये है कि वह कभी २ पूरी तरह एकसी न होकर टूट कर भी चलती है।

९—धन रेखा जीवन रेखा से ऊपर तर्जनी की तरफ कुछ दूरी पर ही से यह रेखा प्रारम्भ होती हैं और कनिष्टा के नीचे वाले पृष्ट भाग की तरफ चलती हैं। यह बहुत ही स्पष्ट रेखा होती हैं। यह भाग्य रेखा का और इसका मिलन हथेली के पृष्ट भाग में अवश्य होता है। भाग्यरेखा तो अक्सर इससे मिलने के बाद अपनी गति बदल देती है और तर्जनी की ओर अग्रसर होने लगती है। परन्तु यह चलती हुई आत्म रेखा के आस पास ही जाकर समाप्त होती हैं। प्रारम्भ होने के स्थान पर यह गहरी होती है और आगे बढ़ते समय यह शनैः मध्यम होती जाती है।

१०-११—शुक्र मुद्रिका हथेली में ग्रहों के स्थान होते

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हैं जिनका पूर्ण विवरण अगली आकृति नं० २, में दिया गया है। सूर्य और शनि के स्थानों को घेरने वाली रेखाओं को शुक्र मुद्रिका कहते हैं। इनमें से अधिक नहीं तो एक की स्थिति अधिक महत्व पूर्ण होती है। इनका पता लगाने के लिये बहुत तरदुद की जरूरत नहीं पड़ती क्योंकि इनमें एक तो अधिक स्पष्ट होती है और दूसरी उसके आस पास ही अनुभाव द्वारा मालूम की जा सकती है।

इन रेखाओं के अतरिक्त अनेक छोटी २ रेखायें और होती हैं उनका उल्लेख आगे किया जायगा जैसे२ उनका महत्व समझा जायगा।

सफा १२ पर ग्रहों का स्थान जानने के लिये आकृति नं० २ को गौर से देखो।

आकृति नं० २ पेज १२ को गौर से देख कर नव ग्रहों को देखना अत्यन्त आवश्यक है। इन्हीं ग्रहोंके आधार पर भूत भविष्य और वर्तमान बनता बिगड़ता है। गौर से देख कर सात ग्रहों के मान को देखो। यह ग्रह एक दूसरेसे काफी मिले जुले हैं। केवल गुरु को छोड़ कर छः ग्रह एक दूसरे की परिधि में जाकर अपना असर दिखाने से नहीं चूकते। गौर से देखने से पता चलेगा कि:—

सूर्य:—तर्जनी और मध्यमा उङ्गली के मध्य भाग में इसका स्थान है। इसका क्षेत्र ऊपर से चौड़ा और नीचे की तरफ जाते २ सर्पाकार होजाता है। तर्जनी से मध्यमा तक के तमाम भाग और मध्यमा के नीचे का कुछ भाग से लेकर यह नीचे की तरफ उतरता हुआ हथेली के मध्य भाग में आ पहुँचता है। इसके क्षेत्र में जितनी भी रेखायें आती हैं उन

CC-0:Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सब पर इसका प्रभाव अवश्य पड़ता है। शनि भी तर्जनी की की जड़ से कुछ दूर आकर इससे मिलता है।

शुक्र मुद्रिका रेखाओं पर इनके मिलने वाले स्थान का गहरा प्रभाव पड़ता है।

शनि:—मध्यमा की जड़ से यह शुरू होकर तर्जनी जड़ और अनामिका के पूर्ण भागमें से थोड़ा सा भाग छोड़कर यह समस्त क्षेत्र को घेर लेता है और अपना असर दिखाये बिना नहीं रहती। शनि का क्षेत्र यद्यपि सब ग्रहों से छोटा है परन्तु इसका महत्व सबसे अधिक है। इसका प्रभाव; स्वास्थ्य, धन, भाग्य रेखाओं पर अधिक पड़ता है। पासही बृहस्पति होने के कारण शनि से नहीं मिल सका मगर तर्जनी की जड़ के पास जाकर इसने सूर्य क्षेत्र के कुछ भाग पर अधिकार कर लिया है इसलिये उस स्थान से गुजरने वाली रेखाओं को बिना असर किये यह नहीं मानता! सूर्य के बलवान होते हुए भी यह चौकड़ियाँ लगाए बिना नहीं चूकता।

बृहस्पति अर्थात् गुरु:—समस्त नक्षत्रों में बलशाली है। तमाम शुभ काम इसी लगन में निकाले जाते हैं। अनिष्ठा का पूर्ण क्षेत्र और अनामिका के बचे हुये क्षेत्र पर इसका पूर्ण अधिकार है। किसी अन्य ग्रह की ताकत नहीं है जो इसके क्षेत्र में आकर अपना प्रभुत्व जमा सके। इसका क्षेत्र सबसे ज्यादा बेतुका है। आकृति नं० २ में देखने से मालूम होगा कि यह कनिष्ठा से लेकर अँगूठे के नीचे के भाग तक जा पहुँचा है। क्षेत्र काफी उल्टा सीधा होने पर भी अधिक महत्व है।

मङ्गल—इस ग्रह का क्षेत्र बृहस्पति से नीचे है। चिपाहु खारे के निचले भाग से प्रारम्भ होकर नीचे की तरफ पतला

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

क्षेत्र बनता हुआ यह शुक्र चन्द्र ग्रहों से मिलता हुआ चन्द्र ग्रह के ऊपरी भाग में जाकर समाप्त हो जाता है। इसके क्षेत्र में से गुजरने वाली रेखाओं पर तीनों ग्रहों का प्रभाव बिना पड़े नहीं रहता। इसका क्षेत्र सबसे सीधा और सबसे लम्बा है। ऊपर की तरफ गुरु का स्थान है और नीचे की तरफ राहु का आसन है।

शुक्रः—हथेली के निचले भाग में और अँगूठे की सामने वाली तरफ अर्ध गोलाकार क्षेत्र जहाँ कि मङ्गल से उसका मिलान होता है वही भाग शुक्र का है मङ्गल के प्रभाव के कारण यह ऊपर नहीं बढ़ पाता और नीचे राहु के प्रभाव के कारण चन्द्र पर अपना प्रभाव नहीं कर सकता इसका स्वभाव सदा से बहुत ही शान्त है मगर सदा ही से ऊदण्डता करते रहने के कारण दुखी है।

चन्द्रः—शुक्र और चन्द्र के बीच में राहु पड़ने के कारण एक दूसरे से अलग २ हैं। मगर अधिक बल शाली होने के नाते चन्द्रमा के एक क्षेत्र पर अधिकार जमाये हुये हैं। दूसरी तरफ बुद्ध ने घेर रखा है। नीचे की तरफ राहु है। सब प्रकार घिरा रहने पर भी चन्द्र नुकीली परधि बनता हुआ बृहस्पति के क्षेत्र के पास होकर सू के क्षेत्र तक पहुँच गया। गुरु के अधिक प्रभाव शाली होने के कारण सूर्य को नहीं छूपाया शनि और सूर्य के बीच में सर्प की तरह कुण्डली मार हुये केतु बैठा है। नीचे चन्द्रके पास राहु है जो समय परअपना प्रभाव अवश्य दिखाते हैं। सूर्य चन्द्रका प्रभाव अधिक होने के कारण उन्हें जैसे ही मौका मिलता है वह अपना प्रभाव बिना दिखा- नहीं मानते।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बुद्ध—अँगूठे पास ही बुद्ध का क्षेत्र है। यह सबसे सीधा और शान्त है! अधिक किसी को न तो छेड़ता है और न अपने प्रभाव द्वारा किसी को हानि पहुँचाना ही चाहता है। चन्द्र के सम्पर्क में आकर और उसी के योग से कभी २ उग्र हो जाता है परन्तु उस उग्रता में भी किसी को हानि नहीं पहुँचाता।

आकृति नं० २ को १२ पेज पर देख कर इन नक्षत्रों के क्षेत्रों को ध्यान से देख कर उनका स्थान ध्यान रखा जाना बहुत जरूरी है और उसके साथ ही यह भी मालूम कर लेना चाहिये कि कौन २ सी रेखायें इस स्थान में होकर गुजर रही है। जिस क्षेत्र से जो रेखा निकलती है और जिस क्षेत्र में गुजरती है और जहाँ जाकर समाप्त होती है। उस पर उन तमाम क्षेत्रोंका असर जरूर पड़ता है। इसी वजह से इन क्षेत्रों में से आने जाने वाली रेखाओं को गौर से देख कर पता लगाना बहुत जरूरी है!

हस्त परीक्षा के विचार से नीचे लिखी बातों का ध्यान रखना और उनको देख कर विचार करना बहुत जरूरी है।

१ उङ्गलिया।
२—अँगूठा।
३—हथेली
४—मणि बन्ध रेखा तक का भाग

इन चारों को देखने के लिये विविध प्रकार से परीक्षा करके वैसा ही विचार करना पड़ता है। वैसे तो यह इतनी साधारण बातें हैं कि इनको पढ़कर बरबस ही हँसी आने लगती है। क्योंकि रोजाना हम इन--

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चीजों को देखते हैं और काम करते हैं तो फिर इनमें ऐसी खास बात क्या रह जाती है जो इनको फिर २ कर देखा जाय और गौर से।

दूसरा अध्याय।

उँगलियां

हर मनुष्य के हाथ में चार उँगलियां होती हैं अक्सर ऐसा भी देखा गया है कि किसी २ के हाथ में पांच भी होती हैं पांचवी उँगली किसी में मिली होती है या हथेली के किसी भाग में उठी हुई होती है। सामुद्रिक शास्त्र में पांचवी उँगली का कुछ महत्व नहीं माना गया। उसका परिणाम उसी उँगली की तरह होता है जैसा कि उसकी पास वाली उँगली का।

चारों उँगलियां एक दूसरे से भिन्न होती हैं। वह आकृति ही में भिन्न नहीं होती वरन् उनका महत्व और सामुद्रिक शास्त्रीय फल भी भिन्न होते हैं अँगूठे की तरफ से उँगलियों का नाम करण विचार करने से सामुद्रिक शास्त्र द्वारा उनके नाम इस प्रकार हैं:—

१—तर्जनी।

२—मध्यमा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

३—अनामिका।

४—कनिष्ठा।

आकृति—२ को गौर से देख कर इनके नाम स्मरण करना और उनका अध्यन करना जरूरी है।

प्राकृतिक ढंग से ही उँगलियों कीक या वरन् समस्त शरीर की बनावट हैं और सामुद्रिक शास्त्र ज्ञाताओं ने उसी प्राकृतिक ढङ्ग से अपना काम निकालने के लिये विविध प्रकार के फल निालने की व्यवस्था करली है।। प्रत्येक आदमी की उँगलियों का गठन दूसरे की उंगलियों के गठन से भिन्न होगा गठन पर ही फल निर्णय करता है।

फल भिन्न हो सकता है परन्तु कुछ भाग गठन में ऐसे हैं जो तमाम उँगलियों में समान होते हैं। गठन कैसे ही हो परन्तु उतनी भिन्नता नहीं हो सकता। जैसे:—

१—हर आदमी की उँगली में प्रत्येक उँगली के तीन भाग होते हैं। मामूली भाषा में उसे पोर और सामुद्रिक भाषा में युग कहते हैं।

२—प्रत्येक उँगली के ऊपर वाले भाग में एक चिह्न होता है। इस चिह्न का उल्लेख किया जायग। अधिक तर यह चिह्न शंख, चक्र और गदा के होते हैं। हर उँगली के चिह्न भिन्न हो सकते हैं या सबके एक ही हों।

३—प्रत्येक उँगली दूसरी उंगली से कुछ दूर होगी। हथेली पर से जहां कि उंगलियों की जड़ होती है दूसरी उँगली उस जड़ से कुछ दूर होगी। पास २ या एक ही स्थान पर जड़ होना बिल्कुल असम्भव तो नहीं वरन् बहुत कम ही देखा गया है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आकृति—१

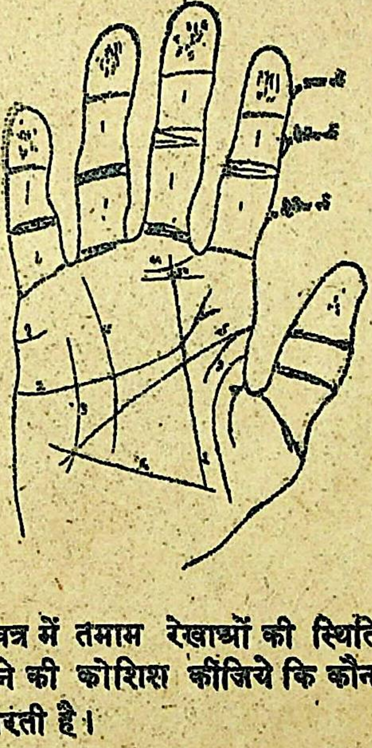

इस चित्र में तमाम रेखाओं की स्थिति को देख कर यह याद करने की कोशिश कीजिये कि कौन रेखा किस २ स्थान से गुजरती है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आकृति—२

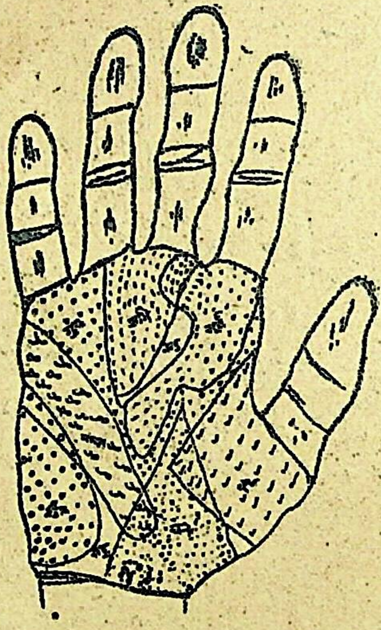

ग्रहों का भविष्य पर और मनुष्य की जिंदगी पर गहरा प्रभाव होता है। कौन ग्रह हाथ के किस स्थान पर होता है इसका जानना निहायत जरूरी है। इस चित्र में ग्रहों का पूरा विवरण मौजूद है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—३

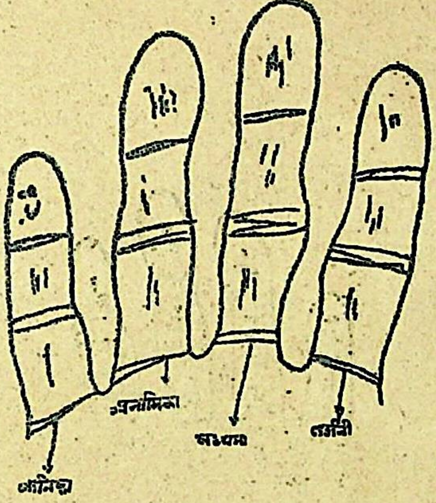

तर्जनी सबसे पहली मध्यमा सबसे बड़ी अनामिका उससे छोटी और कनिष्ठा सबसे छोटी उंगलियों को कहते हैं। ज्योतिष शास्त्र में उंगलियां इन्हीं नामों से परिचित हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आकृति—२

ग्रहों का भविष्य पर और मनुष्य की जिंदगी पर गहरा प्रभाव होता है। कौन ग्रह हाथ के किस स्थान पर होता है इसका जानना निहायत जरूरी है। इस चित्र में ग्रहों का पूरा विवरण मौजूद है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—३

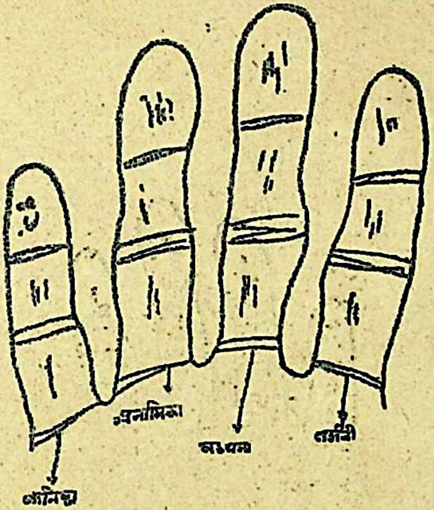

तर्जनी सबसे पहली मध्यमा सबसे बड़ी अनामिका उससे छोटी और कनिष्ठा सबसे छोटी उंगलियों को कहते हैं। ज्योतिष शास्त्र में उंगलियां इन्हीं नामों से परिचित हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—४

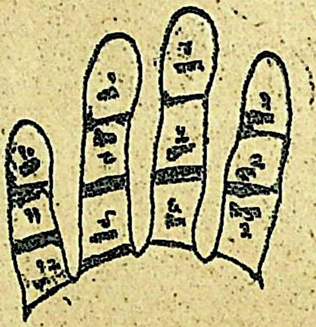

एक उंगली में तीन पर्व होते हैं। पर्वों को दो पोर भी कहते हैं। प्रत्येक पर्व में एक राशि का होना आवश्यक है। कौन राशि किस पोर में है इसका जानना जरूरी है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—५

(उंगलियों के भेद)

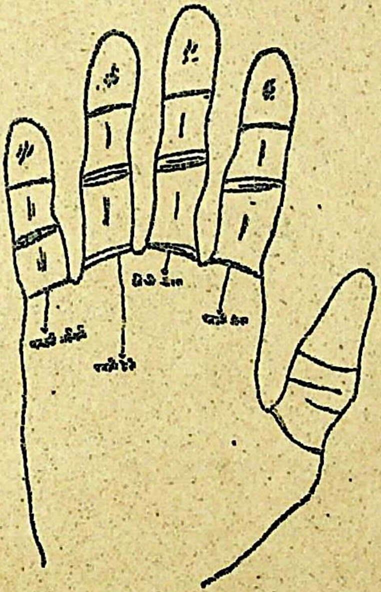

उंगलियां भी विभिन्न प्रकार की होती हैं। उनके मुख्य लक्षण क्या हैं, इनको जानने के लिये इस चित्र को ध्यान से देख कर उनकी पहचान करिये।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—६

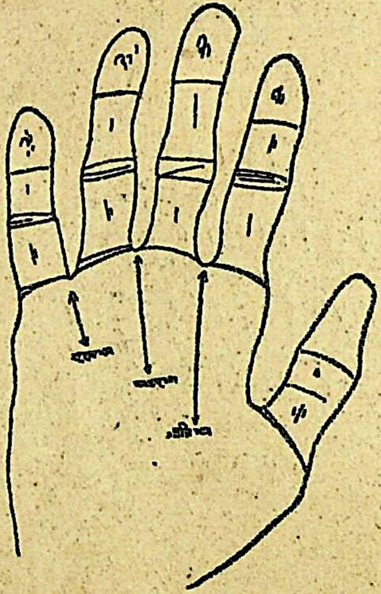

उंगलियों के बीच के स्थान को झर कहते हैं। झर का जीवन के भविष्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। झर को देख कर इस बात का ध्यान कर लिजिये कि किस प्रकार की झर का क्या प्रभाव पड़ सकता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—७

[गोल नाखून]

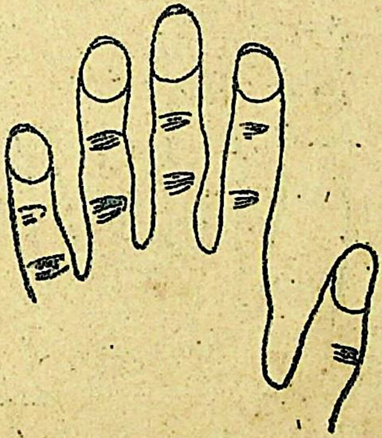

नाखूनों की बनावट से आदमी के पिछले समय का हाल मालूम होता है, और साथ ही उसकी तन्दुरुस्ती के बारे में भी हाल मालूम होता है। इस तमाम हाल को जानने के लिये नाखूनों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—६

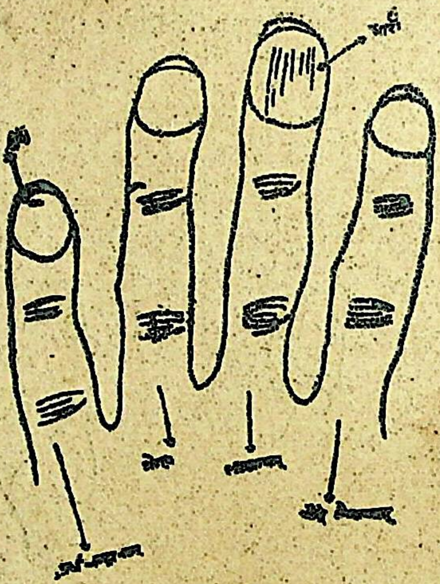

विभिन्न प्रकार के नाखूनों के लक्षण और उनका ज्ञान करने के लिये इस चित्र को गौर से देखो।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar. Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

४—उँगली के प्रथम पोर के पिछले भाग में नाखून होता है। इसी नाखून के ऊपर उँगली की सुन्दरता निर्भर करती है। लम्बी, चपटी, भद्दी उँगलियाँ नाखून की बनावट के ऊपर ही आकृत होती है।

५—उँगलियों की युग धारा रेखायें कटी हुई होती हैं। पोर भी बीच में कटे फटे होते हैं। किसी की उँगलियाँ साफ नहीं होती।

उँगलियों को गौर से देखने के बाद उनके युगों में राशियों का वास जानना निहायत जरूरी है। प्रत्येक युग में राशियों का वास होता है पूर्वी सामुद्रिक ज्ञाताओं तथा पश्चिमी सामुद्रिक शास्त्र ज्ञाताओं का इस विषय में मत भेद है। वह राशियों को भिन्न प्रकार से प्रत्येक युग के साथ मानते हैं और पूर्वी विभिन्न प्रकार से।

नीचे प्रत्येक उंगली के युग के हिसाब से राशियों का वास बताया गया है। पूर्वी और पाश्चात्य दोनों मत प्रस्तुत हैं। आकृत नम्बर ४ पर देखने से प्रत्यक्ष हो जायेगा कि प्रत्येक उंगली के प्रत्येक युग में किस राशिका वास होता है।

पूर्वी मतानुसार:—

कनिष्ठा में तुला, वृश्चिक और धन।

अनामिका में कर्क, सिंह और कन्या।

मध्यमा में मकर कुम्भ और मीन।

तर्जनी में मेष, वृष और मिथुन।

का क्रम से वास होता है। इन राशियों का फल पर प्रभाव गहरा पड़ता है इसलिये इनका पूरा २ ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पाश्चात् मतानुसार उन्होंने मासों में युग का वितरण किया है। प्रत्येक युग में एक मास होना पाया जाता है। आकृति नम्बर ४ में प्रत्येक युग में दिये हुये नम्बरों के हिसाब से मासों का वितरण निम्न प्रकार है :—

१—मार्च	पूर्वी	राशि	मेष
२—अप्रैल	,,	,,	वृष
३—मई	,,	,,	मिथुन
४—दिसम्बर	,,	,,	मकर
५—जनवरी	,,	,,	कुम्भ
६—फरवरी	,,	,,	मीन
७—जून	,,	,,	कर्क
८—जुलाई	,,	,,	सिंह
९—अगस्त	,,	,,	कन्या
१०—सितम्बर	,,	,,	तुला
११—अक्टूबर	,,	,,	वृश्चिक
१२—नवम्बर	,,	,,	धन

उपर्युक्त प्रकार हाथ की चारों उँगलियाँ ऋतु अनुसार बिभाजित की गई हैं। पश्चात् विद्वानों का कहना है कि:—

तर्जनी में बसन्त ऋतु का वास होता है।
मध्यमा में शीत का वास होता है।
अनामिका में ग्रीष्म का वास होता है।
कनिष्ठा में हेमन्त विराजमान रहता है।

प्रत्येक उँगली में एक ऋतु विराजमान है और प्रत्येक उंगली का युग एक मास का उद्योदक है। पश्चिमी तथा पूर्वी विद्वान दोनों ही चार ऋतुओं की गड़ना करते हैं। केवल भारत वर्ष

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ही में छः ऋतुयें होती हैं इसके विपरीत संसार के तमाम देशों में केवल चार ही ऋतु होती हैं इस कारण के चार ऋतुओं का ही विचार रख कर सामुद्रिक शास्त्र की गणना की गई है।

अब हम उँगलियों के प्रत्येक लक्षण को लेकर अपने कार्य पूर्ती के लिये उसके अनुसार फल पर पहुंचेंगे। इसके लिये प्रत्येक परिच्छेद में केवल एक लक्षण लेकर ही हम आगे बढ़ेंगे।

तीसरा परिच्छेद।

उंगलियों की बनावट।

प्रत्येक मनुष्य की उंगली भिन्न प्रकार की होती है। एक दूसरे की उँगली से भिन्न होती है। अधिकतर निम्नांकित प्रकार की उँगलियाँ पाई जाती हैं:—

१—बिलकुल सीधी तथा-चौरस इस तरह की उंगलियां विशेषकर स्त्रियों तथा पुरुषों के हाथ में होती हैं। इस लक्षण वाली उँगलियाँ जड़ से लेकर चोटी तक एक सी सीधी होती हैं। उनके तीनों युग बराबर मोटे होटे हैं। न तो वह किसी तरफ विशेष झुकी होती हैं और न उनका कोई भाग ही किसी स्थान पर मोटा होता।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

२—पतलीचौरस परन्तु टेढ़ी उँगलियाँ—कई लोगों की उँगलियाँ बिलकुल सीधी होती तो नहीं, पर वह पतली और चौरस होती हैं। उनका झुकाव आगे, पीछे, दायें, बायें चाहे जिस ओर हो सकता है।

३-पतली, परन्तु गोलार लिये हुए-कुछ लोगों की उँगलियाँ पतली तो अवश्य होती हैं, परन्तु वह कुछ२ गोलाई लिये हुए होती हैं। किन्हीं की उँगलियाँ तो कमान की तरह गोलाई लिये हुए तक देखी गई हैं। मगर अक्सर कम गोलाई दार उँगलियाँ ही अधिक देखने को मिलती हैं।

४—नीचे से जड़ तो मोटी परन्तु चोटी पतली—कुछ उँगलियों की जड़ें तो मोटी होती हैं परन्तु उनकी चोटी पतली होती है। वह जैसे २ चोटी की तरफ बढ़ती हैं पतली दिखाई देने लगती हैं।

५—बिलकुल सीधी परन्तु मोटी उँगलियाँ—उँगलियाँ बिलकुल सीधी हों परन्तु वह काफी मोटी हो सकती हैं। जड़ भी मोटी हो और उनकी चोटी भी मोटी हो सकती हैं। शुरू से लेकर अन्त तक वह भारी ही दिखाई देती हों।

६—जड़ के पास मोटी और बीच में पतली, परन्तु जड़ के पास मोटी होने वाली उँगलियों को गठीली कहते हैं। इनकी गांठें बिलकुल साफ ही दिखाई देती हैं। बीच के पर्व गांठों को बनिस्बत पतले होते हैं।

७—लचकीली उँगलियाँ—कुछ उँगलियाँ ऐसी होती हैं जो बहुत लचक रखती हैं, जरा से झटके से वह लचक खा जाती हैं। वह आगे पीछे दोनों तरफ मोड़ी जा सकती हैं। उनके ऊपर वाले पोर पीछे की तरफ मोड़े जा सकते हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अन्य कई तरह की उँगलियाँ भी हो सकती हैं, परन्तु वह काफी कम तादाद में पाई जाती हैं, इसलिये उनका उल्लेख ठीक नहीं होगा। समय समय पर जैसी२ उँगलियाँ देखनेको मिलती हैं, उन सबका फल ऊपर लिखी उँगलियों के अनुसार ही बताया जासकताहै। ऊपरलिखी भिन्न प्रकारकी उँगलियों के गुणों के अनुसार उनके फल दिये जाते हैं।

१. बिलकुल सीधी तथा चोरस—यह उँगली जड़ से लेकर चोटी तक बिलकुल सीधी ही होती है। वह अधिकतर पतली देखने में सुन्दर होती है। उनके नाखून भी सुन्दर और चमकदार होते हैं। अधिकतर इस प्रकार की उँगलियाँ स्त्रियां तथा नाजुक मिजाज पुरुषों के हाथों में पाई जाती हैं। इस प्रकार की उँगलियों को देखकर नीचे लिखे लक्षणोंको मिलाते हुए उनका फल कहना चाहिये:—

अन्तर—साधारणतया तो उँगलियाँ बिलकुल सीधी ही दिखाई पड़ेंगी, मगर जब उनको मिलवाया जायगा तो उनमें अन्तर अवश्य दिखाई देगा। हो सकता है कि इस प्रकार की उँगलियों में अन्तर कम हो। जैसा भी अन्तर हो उसका वैसा ही फल होता है।

तमाम उँगलियों को मिलानेसे विस्तृत छिद्र दिखाईपड़ें तो दरिद्रता का लक्षणमाना जाता है। बड़े२ स्पष्ट छिद्रदरिद्रता का आभास कराते हैं।

कनिष्ठका और अनामिका के बीच में छिद्र न हो तो वृद्धावस्था में सुखी होगा और यदि थोड़ा अन्तर हो तो वह स्वतन्त्रप्रिय पुरुष होगा या स्त्री होगी। पतली व चोरस उँगलियों के छिद्र या तो होते ही नहीं और यदि होते हैं तो वह बहुत ही कम होते हैं और मुश्किल से ही दिखाई देते हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अनामिका और मध्यमा के बीच छिद्र न हो तो सुखी होने के लक्षण हैं और यदि सूक्ष्म छिद्र हों तो स्थिर स्वभाव वाला लक्षण अवश्यम्भावी है । उसका स्वभाव स्थिर और उसकी बुद्धि बहुतही सुन्दर होती है। वह प्रत्येक कार्य पूर्णतया विचार कर और स्थिर होकर करने की क्षमता रखता है।

मध्यमा और तर्जनी के बीच में यदि अन्तर न हो तो वह आयु के प्रथम भाग में सुखी रहा होगा। जीवन का प्रारम्भिक भागसुखसे कटा होना चाहिये। यदि अन्तरहो और छिद्र दिखाई पड़े तो जीवन का प्रारम्भिक भाग कष्टमय रहा हो परन्तु वह स्वयविचार वाला होगा।

इन लक्षणों को देखकर प्रश्नकर्ता के बारे में थोड़ा सा पता लग जाता है जिसके द्वारा आगे का हाल बताने में काफी सहायता मिलती है।

इस प्रकार उँगलियों को देखकर और उनके अन्तरों के द्वारा फल सहजही में बताया जा सकता है। इन उँगलियों की यह प्रधान बात होतीहै कि वह नाजुक मिजाव और उसके जीवन के अंश अन्तरों के द्वारा गणित किये जा सकते हैं।

१. पतली चौरस परन्तु टेढ़ी—इस प्रकार की उँगलियाँ भी अधिकतर देखने में आती हैं। इस तरह की उँगलियाँ या तो आगे की तरफ झुकी हुई होती हैं या उनका झुकाव पीछे की तरफ होता है। वह बहुत ही बेढंगी मालूम होती हैं। उनको देखने से ऐसा भास होताहै कि उनके ऊपर या तो बोझ डाला गयाहै या उनसे किसी अन्य तरह का कार्य लिया गया है, जिसके फलस्वरूप उनकी आकृति में फर्क होगया है। वह दायें बायें भी झुकी होती हैं। इनमें से हरेक अपना २ भिन्न

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

असर ही रखता है, झुकाव के अनुसार ही उनका फल कहा जाता है।

अगर तमाम उँगलियाँ आगे क. तरफ रुकी हुई हों तो वह पुरुष चञ्चल हृदय वाला होता है। उसका हृदय किसी भी कार्य में नहीं लगता। यदि पोर जड़ सीधी हो परन्तु बीच का भाग हथेली की तरफ झुका हो तो वह चञ्चल स्वरूप और हठीला होता है। उसके हृदय में जो बात आती है उस पर जम भी नहीं पाता और जो कुछ वह सोच लेता है और उसके विपरीत ही उससे कुछ कहा जाय तो हठ करने लगता है। अपनी हठ पर ही दृढ़ रहकर अपनी ही पूरी कराने से उसे विशेष आराम मिलता है। आगे की ओर झुकी रहने वाली उँगलियों के स्वामी को:—

चञ्चल हृदय वाला और हठीला।
मन्द बुद्धि और कम अक्ल।
साहसहीन बिकट कार्यों से मुँह छिपाने वाला।
एकान्तप्रिय और सर्वदा खामोश रहने की इच्छा।
अपने विचारों में उलझा ही रहने वाला।

बताया जा सकता है। परन्तु किसी निर्णय पर पहुँचने से पहिले कुछ बातें और जान लेना जरूरी हैं। एकदम उँगलियों का झुकाव देखकर ही किसी विशेष लक्षण पर पहुँच जाना ही बुद्धिमानी नहीं है।

अगर तमाम उँगलियाँ पीछे की तरफ झुकी हों तो वह चालाक और गम्भीर होने का लक्षण है। जिसकी उँगलियों का झुकाव पीछे की तरफ होगा उसका प्रत्यक्ष तात्पर्य होगा कि वह चालाकहै। उँगलियाँ जड़ पर तो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सीधी और समान हों और चोटी की तरफ बढ़ती हुई ऊपर की तरफ से पीछे की तरफ झुकी हो सकती है। इनको देखकर नीचे लिखे फल कहे जा सकते हैं:—

चालाक और दृढ़ विचारक हो सकता है।

अगर नर्मी से उसे सलाह दी जाय तो वह आसानी से मान सकता है।

वह चालाक होने के साथ २ अपना मार्ग स्वयं निकालने वाला होता है।

एक वस्तु को त्याग कर उससे अच्छी पाने की लालसा में भटकने वाला होता है। वह मृग-तृष्णा में भटकने के पूर्ण लक्षण रखता है।

अगर तमाम उँगलियाँ एक तरफ ही झुकी हुई हों अर्थात् तमाम उङ्गलियाँ कनिष्ठा की तरफ़ झुकी हुई हों उससे प्रत्यक्ष है कि वह एक दूसरे के लक्षण ग्रहण करती हुई होती है। कनिष्ठा की तरफ़ जिन उङ्गलियों का झुकाव होता है, उसका फल है कि वह :—

दुष्ट प्रकृति और दुर्व्यवहारी हो सकता है।

हेकड़, अपनी बात पर अड़ जाने का लक्षण उसमें पाया जा सकता है।

शरीर में कमताकतपरन्तुक्रोधबहुतज्यादेहोना प्रत्यक्ष है।

वह अपने शरीर की शक्ति का ग़लत अन्दाज लगाता है, अपने को सबसे अधिक बलशाली समझ कर हरेक से लड़ने मरने को तैयार हो जाता है।

अगर तमाम उँगलियाँ तर्जनी की तरफ झुकी हुई हों वह पुरुष विचारवान और नम्र होता है। उसका हृदय विशाल

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

और कोमल होता है। वह प्रत्येक बातको अच्छी तरह सोचता है उस पर विचार करता है और फिर उसपर ध्यान देने के बाद उसके अनुसार ही कार्य करता है। वह स्वभाव का नम्र और शील होता है। जिसकी तमाम उँगलियों का झुकाव तर्जनी की ओर होता है, वह :—

विचारवान् और शीलवान् होता है।

उसका हृदय विशाल और कोमल होता है। वह प्रत्येक बात को सारपूर्ण समझता है।

स्वभाव का नम्र और अन्य लोगों का आदर करने वाला होता है।

वह नम्र, विचारशील व दानी होता है।

लेखक हो तो विशेष रूप से साहित्यिक विषय पर लेख लिखेगा।

यदि चित्रकार है तो वह अपने इष्ट देव की प्रतिमा बनाने में विज्ञ होगा।

२. पतली परन्तु गोलाई लिये हुये—अक्सर कुछ उँगलियाँ देखने में ऐसी होती हैं जो कि जड़ से लेकर ऊपर तक के पूर्व तक पतली ही होती हैं परन्तु वह गोलाई अवश्य लिये हुये होती हैं। हो सकता है कि उनका झुकाव आगे की तरफ हो या पीछे की तरफ हो। जिनकी उँगलियाँ आगे की तरफ झुकी होती हैं वह पुरुष :—

१—श्रमजीवी परिश्रम से पैदा करके अपना तथा अपने परिवार का पालन पोषण करने वाला होता है। वह कठिन से कठिन परिश्रम करके भी अपना भरण करने की क्षमता रखता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar· Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

२—नम्र परन्तु कम विचार शील होता है। उसमें विचार करने की शक्ति कम होती है। वह पूरी तरह से किसी विषय में गम्भीर होकर नहीं सोच सकता। शीघ्रता ही से यह एक निर्णय पर पहुंच जाता है और उस पर कार्य करने लगता है।

३—वह समझदार होता है इस विषय में वह समझदार नहीं होता कि वह किसी भी बात को अच्छी तरह सोच सके परन्तु उसमें समझदारी केवल इतनी होती है कि अगर कोई सलाह की बात बताई जाये तो वह शीघ्र ही उसे जान लेता है।

४—वह मृग तृष्णा में भटकने वाला होता है। हमेशा वह निन्यानवे के फेर में पड़ा रहता है। उसे यह चिन्ता रहती है कि किस तरह उसे उसको मन वांछित इच्छा का फल मिलेगा इसी तृष्णा में वह इधर उधर भटकता फिरता है।

कहना उपयुक्त न होगा कि वह मनुष्य जिसकी उंगलियों का झुकाव आगे की तरह होता है वह मध्यम वर्ग का आदमी होता है उसे हमेशा अपने विचार पर कार्य करने की प्रेरणा होती है।

जिन लोगों की उँगलियों का झुकाव पीछे की तरफ होता है वह पुरुष और स्त्री का स्वभाव उसकी ही गति के अनुसार होता है। पीछे की तरफ झुकी हुई उंगलियों को देख कर सहज ही बताया जा सकता है कि :—

१—वह पुरुष मन्द बुद्धि होता है। उसमें सोचने की कम ताकत होती है। वह निरा मूर्ख ही होता है। सोचने की शक्ति तो उसके प्रायः बिलकुल ही नहीं होती है वह किसी भी

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

काम को करने से पहले बिलकुल नहीं सोच पाता जो कुछ भी सोच सकता है वह काम करने के बाद ही सोच पाता है।

२—साहस हीन होता है। किसी भी काम करने से पहले ही उसकी हिम्मत टूट जाती है। उसमें साहस कम होता है। उसकी शक्ति का बांध टूट जाता है वह कार्य करने से पहले ही हिम्मत खो बैठता है और अपना हाथ उस कार्य से खींच लेता है।

३—क्योंकि वह भीरु और डरपोक होता है। उसको अपनी शक्ति पर तनिक भी विश्वास नहीं होता है इसलिये वह खामोश रहना ही अधिक पसन्द करता है। उसे अपनी अपनी शक्ति पर तनिक भी भरोसा नहीं होता। खामोशी से ही वह अपनी शक्ति के ह्रास को छुपाना चाहता है।

४—काम करने की हिम्मत तो उसमें नहीं होती इस लिये वह पड़ा २ सोचा करता करता है। काम करने की शक्ति न उसे धोखा दे जाती है। परन्तु वह खाली पुलाव ही बनाया करता है।

इन उंगलियों का झुकाव मनुष्य के स्वभाव और भविष्य का हाल बताने में काफी मदद देता है।

५—नीचे से तो जड़ मोटी परन्तु चोटी पतली हो—इस प्रकार की उंगलियों के कई प्रभाव होते है। जड़ तो मोटी है परन्तु चोटी पतली होती है। इस तरह की उंगली वाले मनुष्यों के बारे में नीचे लिखी बातें बताई जा सकती हैं

१—वह मनुष्य बहुत ही होन हार और किसी न किसी चतुर विद्या के कार्य में दक्ष होगा वह किसी न किसी हुनर को अच्छीतरह जानता होगा और हो सकता है कि वह इन्टर

डाङ्का का काम करने वाला और किसी कार्य में दक्ष होगा।

२—चालक, मक्कार या पाकिट मार होने के साथ २ वह खूनी भी हो सकता है।

३—वह अपने बारेमें बहुत कम सोच सकता है। उसका काम बहुत ही मुशकिल और कठिन भी हो तो वह कभी नहीं कर सकता है।

५—बिलकुल सीधी परन्तु मोटी उंगलियां—यह उंगलियां बिलकुल सीधी और मोटी होती हैं। उनकी जड़ भी मोटी हो और उनकी चोटी भी मोटी होसकती है शुरू से ले कर वह अन्त तक भारी भरकम ही दिखाई देती है।

चौथा अध्याय।

उंगलियों की रेखा।

जिस मनुष्य को दाहिने हाथ की चारों उँगलियों में तीन २ रेखा खड़ी १२ रेखा होवें नं० १ सो बड़ा धनी गुणी और योग्य होता है, और १३ हो तो दुःखी रोगी अनेक प्रकार के कलेश भोगने वाला होता है १४ रेखा हों दुःख सुख सम होता है। १५ रेखा से चोर होता है। १६ रेखा से जुआड़ी वंचक ठग होगा। १७ रेखा से पापी या पापी का मित्र होगा। १८ रेखा से भाग्यवान्, धर्मशील होगा, १९ रेखा से गुणवान्

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

होगा, २० रेखा होने से तपस्वी कर्मष्ठी होगा, २१ रेखा से ज्ञानी महात्मा होगा, और इनसे आगे ३२ तक अच्छी हैं और ३६ निहायत अच्छा है।

भाई बहिन।

हृदय रेखा के नीचे कर्म प्रदेश में अच्छिन्न मनोहर और बड़ी जितनी रेखायें हों; उतने भाई और छोटी जितनी रेखायें हों उतनी बहिनों की संख्या जानना।

अनामिका के पहले पर्व से तीसरे पर्व तक ऊर्ध्व रेखा शुद्ध रूप से हो तो मनुष्य सब उच्च पद प्राप्त करता है।

नाखून।

नाखूनसे ठीक-ठीक कई बीमारियां, शारीरिक व मानसिक शक्तियां, स्वास्थ्य स्वभाव;खानदानी बीमारी और अन्य प्रकार की कमजोरी की सूचना, शुभाशुभ भविष्य फलों का ज्ञान होता है।

नाखून चार प्रकार के होते हैं।—लम्बे तंग छोटे चौड़े।

लम्बे नाखून वालों का सीना फेफड़ा कमजोर होता है। खास कर जब उनमें रेखायें पड़ी हों, यदि कोई रोज न हो तो भी शरीर कमजोर और नाजुक होगा।

लम्बे तंग नाखून वालों को रीढ़ की हड्डी कमजोर होतीहै और जब मुड़ी हुई और बहुत पतली होतो यह रीढ़ की हड्डी के झुकाव और शरीर की नाजुकता की सूचना है और कायर होने का लक्षण है।

छोटे नाखून दिल को कमजोरी कार्य शक्तिको बताते हैं, खास कर जब अर्ध चन्द्र नाखून के बहुत छोटे हों याने मुश्किल से दिखाई देते हों।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि चन्द्र आकार में बड़े हों तो हृदय की चाल तीव्र, रुधिर का प्रवाह शीघ्रता से होता है।

चौड़े नाखून ऊपर को उठने वाले हों, बाहर की तरफ़ हों तो लकवा का भय है। और खास कर जब वह कौड़ी की दिखाई देते हैं।

श्वेत रङ्ग के नख सुपारी की आकृति के हों तो क्रोध तुरन्त नहीं आता है। और जब आता है तब वह जल्दी नहीं भूलता है। स्त्री के नख श्वेत होंगे तो वह चालबाज व ढीठ होगी।

चौड़े नाखून वालों को, हँसी उड़ाना, व्यंग, कटु रूप से बोलना चिढ़ना खूब आता है। और ऐसों का क्रोध देर तक रहता है, जल्द शान्त नहीं होता है।

छोटे चौड़े नाखून वालों को बहस करना खूब आता है; और अधिक छोटे चौड़े हों तो दमा, शीत और अन्य गले के रोग होते हैं।

नाखून बहुत चपटे और धसे हुये हों तो स्नायू सम्बन्धी रोग की सूचना है। नख भूसी के समान (लम्बे छोटे) हों तो वह पुरुष हिजड़ा होता है और चपटे या फटे हों तो धन हीन जिनके नख कुत्सित तथा विवरण हों वे कुदृष्टि से निहारने वाले और जिनके नख लाल ताम्रवर्ण होवें धनी होते हैं।

छोटे पीले नाखून वाले दगाबाज स्वभाव के होते हैं। और शारीरिक और आत्मिक बल कमज़ोर होता है।

छोटे और लाल नाखून वाले उग्र स्वभाव के होते हैं। छोटे, समकोण और नीले नाखून वालों को दिल की बीमारी होती है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लम्बा पतला मुड़ा हुआ नख गले में जख्म की बीमारी का चिन्ह यदि इस पर रेखायें हों तो तपैदिक होता है।

स्वभाव।

अगर नाखून चौड़ाई से लम्बे हों तो स्वतन्त्रता और निश्चयात्मक बुद्धि की सूचना है। स्वभाव कोमल, सभ्यतायुक्त आसानी से समझने वाला होता है।

छोटे गोल तथा बहुत श्वेत रङ्ग के नख वाला क्रोधी स्वभाव का होता है।

बहुत चमकीले नखून वाला मानसिक कल्पना करने में तीव्र होता है।

स्वच्छ सफेद व काले नख होने से मनुष्य दुष्ट, जिद्दी, विश्वासघाती और खेती के काम में होशियार होता है।

छोटे व फीके नख वाला लुचा व लफंगा होता है।

लम्बे सफेद रङ्ग के नख वाला नीतिमान होता है।

गोल नख होने से आनन्द सुख भोगने वाले स्वभाव का होता है।

कठोर नख होने से लकवा, पक्षाघात रोग का डर रहता है।

नखों पर श्वेत रङ्ग के धब्बे होने से पाचन शक्ति में दोष होता है।

ऊँचे झुके हुए नख से राजयक्ष्मा रोग होने का सन्देह रहता है।

छोटे अर्ध चन्द्र के समान श्वेत धब्बे होने से रुधिर की क्रिया में दोष होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पीले नाखून वाले निर्दयी और सख्त स्वभाव के होते हैं।

नखों का तल भाग नोकीला हो तो जल्द नाराज होने वाला और जल्द अपमानित मानने वालाहोता है। लम्बे और सफेद रङ्ग के नख होने से नीतिमान होवे।

नाखून पर सफेद दाग स्नायुविक की कमजोरी का लक्षण है।

कुछ विद्वानों का मत है कि सफेद दाग शुभ-सूचक है, और काला दाग नाखून पर अशुभ-सूचक है। नीचे लिखे चक्र से नाखन के दागों का लक्षण समझना चाहिये:—

नाखून	सफेद दाग	नुकसान	काला दाग
तर्जनी	फायदा सन्मान	नीचकर्म	अपकीर्ति
मध्यमा	सामुद्रिक	देशाटन	मृत्यु या मृत्यु भय
अनामिका	सम्मान पाना शास्त्र		
	श्रद्धा व्यापार में लाभ	बदनामी	हानिकारक
कनिष्टा	विश्वास, आशा फायदा,	अविश्वास, निराशा नुकसान	
अँगूठा	रोजगार में लाभ, प्रेम	विषयन्धता के कारण रोजगार में हानी	
	अपराधी होवे	त्रटि गलत कार्य	

ये बिन्दु नखाग्र भाग पर होने से भूत कालीन नख, के मध्य में होने से वर्तमान कालीन और नख के तल में होने से भविष्य कालीन परिणामों की सूचाना है।

ग्रह।

अनामिका अगुलियों के मूल में नीचे सूर्य का पर्वत होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१. सूर्य—राज्य-मान प्रतिष्ठा, कला कौशल, विद्या, धर्म, तीर्थ, कीर्ति सुन्दर वस्तुओं से प्रेम, साहित्य, कविता, चित्रकारी, सुन्दर दृश्यों आदि कलाओं की प्रशंसा; अधिक ऊंचा नाम पाने की अभिलाषा चन्द्र का पर्वत मङ्गल छुत के नीचे मणि बंध पर्यन्त कहलाता है। आकृति

२. चँद्र—आंतरिक पीड़ा, मन सम्बन्धी [illegible] विचार मार्ग प्रेम कृषि, स्त्री, धन-धनादि विचार, शुद्ध प्राकृतिक सुन्दरता का उपासक और देखने की चाह, साहित्य कविता से प्रेम धार्मिक ऊँचे-गहरे विचारों में डूबा रहना। मस्तक रेखा अच्छी न हो तो प्रभाव भयङ्कर चँद्रमा शुक्र दोनों ऊँचे एक दूसरे के पास-विषय, वासना अधिक प्रायः व्यसनी।

३—भौम-मङ्गलके पर्वत दो स्थानों में होते हैं—एक बुद्ध के पर्वत के नीचे हृदय रेखा से चन्द्र के पर्वत तक, दूसरा इसीके सामने शुक्र के ऊपर और जीवन रेखा के उदय स्थान के नीचे होता है। बल-पराक्रम, अग्निश्वास, फोड़ा-फुंसी आदि रुधिर विकार, विवाद में जय। बृहस्पति शुक्र के बीच में जीवन रेखा के भीतर—मुसीबत के समय बुद्धि से काम लेने वाला, साहसी अधिक ऊंचा झगड़ालू एवं उपद्रवी। बुध-चन्द्रमा के बीच में—सहन शीलता, सत्याग्रह, अपने ऊपर अधिक सन्तोष।

४—बुद्ध—कनिष्ठा उंगली के मूल में बुधका पर्वत होता है। विद्या, बुद्धि, वाणिज्य, काव्य, शिल्प सौभाग्यप्रद। अनेक शुभ फल, देशाटन से प्रेम, विचारों में चंचलता, दूसरे से [illegible] का ज्ञाता, [illegible] , [illegible] सीधी हो तो विज्ञान, व्यापार में उन्नति होती है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

५—गुरु तर्जनी के मूल के नीचे रहने वाले पर्वत को गुरू का पर्वत कहते हैं। मान, प्रतिष्ठा, धर्म, विवाह, धन-धान्यादि समस्त शुभ फल। उच्च पद पाने की इच्छा, स्वाभि-मान, उत्साह न्याय-प्रिय। अगली छोटी-जिम्मेदारी पसन्द नहीं। यदि अधिक ऊंची हो-स्वयं प्रशंसा, अधिकार की इच्छा अन्याय के लिये न्याय नहीं।

६—शुक्र-शुक्र का पर्वत अङ्गुष्ठ से मणिबन्ध तक फैला हुआ रहता है। विवाह, स्नेह, प्रताप, सौंदर्य, स्त्री सुख, काव्य-कला, प्रमोद इत्यादि ज्ञान। अधिक ऊँचा, रुधिर का प्रवाह उतना ही अधिक। तन्दुरुस्त, इच्छा प्राबल्य, प्रेम, लालसा अधिक, अधिक उभरा न हो-श्रेष्ठ लालसा प्रबल नहीं, नम्र प्रेमी।

७—शनि-मध्यमा उँगली के मूल के नीचे रहने वाले को शनि का पर्वत कहते हैं। क्लेश, दुख, अनेक पीड़ा, व्यसन द्यूत, पराभव, मृत्यु इत्यादि विविध कष्ट। खामोशी. एकान्त वास, चतुरता, प्रायः ऊंचे दर्जे की ज्ञान विद्या से प्रेम, किसी बात पर घंटों बहस करने की आदत। प्रायः तत्वज्ञान, अध्या-त्मवाद की रुचि। अस्वाभाविक रूप से ऊँचा हो तो प्रायः उदास, निराशा से घिरे रहना, बुरे २ विचार, किसी २ से बात करने को जी नहीं चाहना। बृहस्पति और चन्द्र ऊँचा हो तो तीर्थ में मृत्यु।

ग्रहों से फल विचार।

सूर्य से आत्मा, पिता का प्रभाव, नैरोग्य, शक्ति और सम्पति या शोभा को विचारें।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चन्द्र से मन, बुद्धि, राजा की प्रसन्नता, माता, संपदा को विचारें।

मङ्गल से बल, रोग, गुण, भाई, भूमि, पुत्र, कुटुम्ब को विचारें।

बुद्धि से विद्या, बन्धु, विवेक, मामा, मित्र, वाक् शक्ति को विचारें।

गुरु से प्रजा, धन, तन, पुष्टि, पुत्र और ज्ञानको विचारें।

शुक्र से पत्नी, वाहन, आभूषण, काम क्रीड़ा सौख्य को विचारें।

शनि से आयु, जीवन-मरण कारण, सम्पति और विपत्ति को विचारें।

राहु से बाबा को और केतु से नाना को विचारें।

ग्रहों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य

ग्रहों के नाम।

सूर्य—हेलि, सपन, दिन कृत, भानु, पूषा अरुण।

चन्द्र—शीत, द्युति, उडुपति, ग्लौ, मृगाङ्क, इन्दु, चंद्र, शशि।

मङ्गल—आर, वक्र, क्षितिजि, रुधिर, अंगारक, क्रूर नेत्र।

बुद्ध—सौम्य, तार तनय, बुध, वित, बोधन, इन्दु, पुत्र।

बृहस्पति—मंत्री, वाचस्पति, गुरु, सुराचार्य देवेज्या।

शुक्र—काव्य, सित, भृगुसुत, अच्छ, स्पुजित, दानवेज्य।

शनि—छाया, सुनू तरिणतनय, कोण, शनि, आर्कि, मंद।

राहु—सर्प, असुर, फणि, तम, सैंहकेय।

केतु—ध्वज, शिखी, गुलिक, मनि।

शुभग्रह

चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र, बुध शुभग्रह कहलाते हैं। यह सुख देते हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

[illegible] मंगल में आठवें [illegible] बैठे हों [illegible] तो शुभ फल कहना चाहिये। जो ग्रह दक्षिण की तरफ [illegible] उत्तर में बैठे हों और जो ग्रह पूर्व भाग में बैठे हों यदि पश्चिम में चले जायं तो सब ग्रह विपरीत फल को देते हैं।

पाप ग्रह

क्षीण चन्द्रमा, शनि, सूर्य, राहु, केतु, मंगल, पाप ग्रह कहलाते हैं [illegible] पाप ग्रह के साथ पापी [illegible] जाता है यह सब सुख पापी ग्रह हैं। शुभ कार्य में यदि कोई [illegible] करते समय देह ग्रह पड़े तो वह कार्य निषेध है।

पांचवां अध्याय

ग्रह ज्ञान

सूर्य प्रतापशाली चौकोर देह वाला, काला या लाल रङ्ग वाला, सर्प के रङ्ग के समान आंख वाला, शान्त स्वभाव वाला, थोड़े बालों वाला और सतोगुणी होता है।

चन्द्र—संचारशीली, कोमल वाणी वाला, ज्ञानी, अच्छी चितवन वाला, सुन्दर तथा पुष्ट अङ्गों वाला, हमेशा बुद्धिमान गोल आकार वाला, कफ व वात वाला है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मङ्गल--क्रूर दृष्टि वाला, जवान, उदारशील, पित्त प्रकृति अति चंचल, पतलीकमर, लाल गोरे अङ्ग कामी, तमोगुणी तथा मनोहर होता है।

बुध--दूर्वा श्याम शरीर वाला, नसोंवाला, साफ बोलने वाला, हँसमुख, रजोगुणी, हास्यप्रिय होता है, धनी, कफ, वापी प्रतापी और विद्वान होता है।

गुरु--बड़े शरीर वाला, पीतवर्ण, कफी, पीली आँखें तथा बाल, बुद्धिमान, सर्वगुणयुक्त, अति बुद्धिमान, शोभायुक्त और सतोगुणी होता है।

शुक्र--श्याम, घुंघराले बाल वाला, सुन्दर अङ्ग वाला, अच्छे नेत्र वाला, वादी, कफी, कामी, रजोगुणी, सुख बल और रजोगुण की स्थान वाला होता है।

शनि--कर्कश बोल तथा अङ्गों वाला, दुबला, कफी, वादी, दाँत बड़े, सुन्दर रोम श्याम, आलसी और तमोगुणी होता है।

मनुष्य के भिन्न २ प्रकार के स्वभाव बताने में उपर्युक्त ज्ञान अति आवश्यक है। जिसके लग्न में अमुक ग्रह की स्थिति हाथ में देखें उसी प्रकार फल कहना चाहिये।

ग्रहों के मित्रादि।

सूर्य के मित्र--मङ्गल, चन्द्र, गुरु। शत्रु,--शुक्र, शनि, राहु और केतु। बुध सम है। चन्द्र के मित्र--सूर्य, बुध। शत्रु कोई नहीं। सम--गुरु, मङ्गल, शुक्र, शनि हैं।

मङ्गल के मित्र--सूर्य, चन्द्र, गुरु।

„ शत्रु--बुध। शुक्र, शनि सम हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बुध के मित्र—सूर्य, शुक्र।
,, ,, शत्रु—चन्द्र।
शुक्र, शनि, मङ्गल, गुरू सम हैं।
गुरू के मित्र—सूर्य, चन्द्र, मङ्गल मित्र हैं
,, ,, शत्रु—शुक्र, बुध। शनि सम है।
शुक्र के मित्र—शनि, बुध मित्र हैं।
,, ,, शत्रु—गुरू, चन्द्र, सूर्य। मंगल सम है।
शनि के मित्र—शुक्र, बुध मित्र हैं।
,, ,, शत्रु—सूर्य, चन्द्र, मंगल। गुरू सम हैं।
राहु शनि की बड़ी मित्रता है।
चन्द्र और गुरू की बड़ी मित्रता है।
मंगल और सूर्य की बड़ी मित्रता है।
सूर्य और राहु की बहुत शत्रुता है।
गुरु और शुक्र की बड़ी शत्रुता है।
चन्द्र, बुध की बड़ी शत्रुता है।
सूर्य शनि की बड़ी शत्रुता है।

ग्रहों का शुभाशुभ विचार।

ग्रहों की शत्रुता और मित्रता का ध्यान रखना निहायत जरूरी है। इससे जब हाथ में एक ग्रह को दूसरे की तरफ झुकना देखें तो फल का विचार करते समय मैत्री और वैर के सम्बन्ध का गहरा असर जरूर पड़ता है। इन ग्रहों के फल विचार करते समय वर्षों की अवधि का ध्यान रखना अधिक आवश्यक है:-

सूर्य २२ वर्ष में फल देता है।
चन्द्र २४ वर्ष में फल देता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मंगल २८ वर्ष में फल देता है।
बुध ३२ वर्ष में फल देता है।
गुरू १६ वर्ष में फल देता है।
शनि २५ वर्ष में फल देता है।
राहु ४२ वर्ष में फल देता है।
केतु ४२ वर्ष में फल देता है।

जो ग्रह अपने स्थान में हो उसी के वर्ष निश्चय सुख, भाग्योदय होता है। जो ग्रह जहाँ है वहीं यदि टिका रहे तो शुभ फल जानना चाहिये। यदि ग्रह दक्षिण की तरफ हो तो और उत्तर की ओर बैठे अथवा जो पूर्वमें हो और पश्चिम की तरफ जावे तो विपरीत कहा जानना चाहिये। जहाँ उँगलियाँ हैं उसे पूर्व दिशा, जहाँ कब्जा है उसे पश्चिम दिशा, जहाँ अँगूठा है उसे उत्तर दिशा और जहाँ चन्द्रमा है दक्षिण दिशा जानना चाहिये। मंगल सूर्य प्रवेश काल में, शुक्र गुरू मध्य में, शनि चन्द्र अन्त में फल देते हैं।

ग्रहों कृत कष्ट।

सूर्य—अग्नि रोग, ज्वर वृद्धि, क्षय, अतिसार आदि तथा राजा, देवता, किंकरों से और ब्राह्मणों से कष्ट हो और चित्त में दोष होता है।

चन्द्र—पाँडु रोग, कमल, पीनस, स्त्री द्वारा रोग देवता आदि से व्याकुल होता है।

मंगल—बीज दोष, कफ, हथियार, अग्नि वाले रोग, गिलटी, फोड़ा, घाव, दरिद्रता से पैदा हुए रोग, स्थूल रोग

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तथा वीर शैवगण, भैरवादि गणों से भय उत्पन्न होता है। शरीर में भय का संचार रहता है।

बुध—गुदा रोग, उदर, कटिशूल, कुष्ठ, मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी आदि तथा मन विकार, ... पिशाचों से भय होता है।

गुरु—आचार्य गुरु, ब्राह्मणादि से ... गुल्म रोग होता है।

शुक्र—स्त्रियों के विकार से प्रमेह रोग या अपनी प्यारी स्त्रियों के दोष से अन्य स्त्रियों से फैलने वाले रोग ... वश कर लेते हैं उनसे कष्ट होता है।

शनि—दारिद्र्य, अपने कर्म, चोर, पिशाच, सन्धि रोगों में क्लेश देता है। इसकी अवधि में अनेक तरह की पीड़ायें तथा व्याधायें सन्मुख उत्पन्न होती हैं।

राहु—मिरगी, मसूरिका, रज्जु, चौक, चतुर्थी, दृष्टि-रोग, कीड़, प्रेत, पिशाच, कुष्ट, उदरविष, भूत, अरुचि और बहुत ही भय प्रतीत रोग होते हैं। इस ग्रह के फल अति हानिकारक और व्याधि दायक हैं। सदैव इसकी शान्ति का उपाय सोचना चाहिये।

केतु—खाज, मरीचिका, शत्रु, कीड़ों का रोग और छोटी जाति वालों और आचारहीन पुरुषों से शारीरिक तथा मानसिक कष्ट होता है।

ग्रहों के वर्ण तथा ...

सूर्य का तांबे का वर्ण या श्याम

चन्द्र का सफेद वर्ण ...

मंगल का लाल वर्ण ...

बुध का हरित वर्ण या श्याम।
गुरू का पीला वर्ण या गोरा।
शुक्र का कबरा वर्ण वा सफेद।
शनि का कशा वर्ण या काला।
राहु का नीला वर्ण।
केतु विचित्र वर्ण वाला होता है।

ग्रहों के द्रव्य।

सूर्य का तांबा।
चन्द्र का मणि।
शुक्र का रूपा।
मंगल का स्वर्ण।
बुध का सुवर्ण।
शनि का लोहा
गुरू का मोती।

ग्रहों के रत्न।

सूर्य का माणिक्य।
शुक्र का हीरा।
चन्द्र का मोती।
शनि का नीलम।
मंगल का मूँगा।
गुरू का पुखराज।
बुध का गारुत्मन।
राहु का गोमेद।
केतु का वैडूर्य।

ग्रहों के रत्नों का ज्ञान आवश्यक है। जिस ग्रह की चाल अनिष्ट कारक ज्ञान पड़े तो उस ग्रह की शान्ति के लिये

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

उस ग्रह के रत्न को पाना अति आवश्यक है। रत्न की मुद्रा बनवा कर उस ग्रह की उँगली में नीचे की तरफ झुका कर पहनने से उसका असर अच्छा होता है। तमाम पीड़ा शान्त होती रहती है और ग्रह को शान्त करके रत्न सुख शान्ति लाता है।

छठवाँ अध्याय।

रेखा-परिमाण

१४यव के बराबर यदि सूर्य रेखा हो तो श्रेष्ठ होती है, ६ से १३ यव तक मध्यम और स्थूल बुद्धि वाला होता है, ६यव से कम हो तो मन्द बुद्धि की सूचना है। १२ यव के ऊपर हो या बराबर हो तो ऐसी ऊर्ध्व रेखा उत्तम होती है और राजयोग की सूचक है, इससे कम हो तो खण्ड रेखा कहते हैं।

एक यव का नाप १० वर्ष के बराबर है, इसलिये लम्बी रेखाओं का नाप लम्बे यवसे और छोटी रेखाओं का नाप बड़े यव से करना चाहिये। सूर्य रेखा को छोटी रेखा में गिनना चाहिये, इससे इसे भी बड़े यव से नापना चाहिये। फांकदार और शाखायुक्त रेखा ज्यादा शुभ समझी जाती है, क्योंकि यह लक्षण रेखा के गुण को बढ़ा देता है। हृदय-रेखा से ऊपर जाने वाली रेखायें आशा जनक और नीचे जाने वाली रेखायें निराशा जनक होती हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मनुष्य के हाथ में अक्सर दो-तीन वर्षों में नई छोटी२ रेखायें उदय होती हैं जो आने वाले शुभाशुभ की सूचना देती हैं। रेखा का पीलापन होना खून में कम प्रवाह का होना बताती है।

गहरी और लाल रङ्ग की रेखायें आवेश आना, निर्दयता और गर्म मिजाज की सूचना है।

विनाशयुक्त याने छिन्न भिन्न रेखायें अपने शुभ फलको नहीं देती हैं।

कुशा के समान अग्र भाग वाली सुन्दर रेखाओं के होने से मनुष्य दरिद्र नहीं होते हैं।

मूल याने भाग्यादि शुभ रेखाओं के न होने से मनुष्य सुखी नहीं रहते। पितृ-रेखा से वायु प्रकृति समझना चाहिये। जो रेखा प्रधान हो उसका ही गुण कहना चाहिये। जीवन, मस्तक और हृदय रेखायें क्रम से चर, स्थिर और द्विस्वभाव समझना और क्रम से पुरुष स्त्री और नपुंसक तथा नभचर, थलचर और जलचर संज्ञक है क्रमसे सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी भी हैं।

जीवन-रेखा को ऊर्ध्व लोक, मस्तक रेखा को मृत्यु लोक और हृदय-रेखा को पाताल लोक कहते हैं। बायें और दाहिने हाथ से गमन और आगमन का विचार करना चाहिये याने बायें हाथ में जीवन-रेखा साफ हो तो पितृलोक से आया है और दाहिने हाथमें हो तो मरने के बाद पितृलोक में जायगा।

रेखायें।

मनुष्य का जीवन तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

१—जीवन, जो जीवन-रेखा से ज्ञात होगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

२—प्रेम, जो हृदय-रेखा से मालूम होता है।
३—दिमागी शक्ति, जो मस्तक-रेखा से ज्ञात होती है।

जब जीवन तो सब कुछ है, इसलिये जीवन-रेखा का जिक्र पहले जरूरी है।

जीवन-रेखा या पितृ-रेखा या आयुष्य-रेखा।

जीवन-रेखा बृहस्पति के स्थान के नीचे और अँगूठे के बीच से निकल कर नीचे मणिबंध की ओर जाती है और शुक्र के स्थान को घेरती है। नं० १ तर्जनी और अँगुष्ठ के बीच से मणिबंध तक जो रेखा जाती है, इसे नवीन लोग आयु-रेखा कहते हैं, परन्तु प्राचीन लोग इसे कर्म-रेखा या पितृ-रेखा ही कहते हैं। प्राचीन लोग तर्जनी से कनिष्ठका की ओर जाने वाली रेखाको आयु कहते हैं। कभी २ यह रेखा ऊपर बृहस्पति के स्थान पर दिखाई पड़ती है। ऐसी रेखा जिसके हाथ में हो तो वह उच्च आशावादी, अभिलाषी, कृतकृत्य, यशस्वी और दीर्घजीवी होता है।

मातृ-पितृ यह दोनों रेखायें शुद्ध हों तो माता पिता का पूर्ण सुख मिलता है। इस रेखा के द्वारा दाहिने हाथ में रोगों की सूचना मिलती है और बायें हाथ में मनुष्य के शरीर के सङ्गठन का पता लगता है, रोग का हाल बताते समय दोनों हाथ का मिलान करना चाहिये। यदि यह रेखा शुक्र के स्थान को घेर कर मणिबंध की प्रथम रेखा तक हो और दाहिनी ओर झुकी हो तो १०० वर्ष की आयु होती है। यह अखंडित साफ,न अधिक गहरी न चौड़ी,देखने में सुंदर होनी चाहिये।

यह रेखा नष्ट हो या बिगड़ गई हो या रुक गई हो तो बारम्बार रोग से पीड़ित रहता है और देह का सुख नहीं

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मिलता है क्योंकि यही असल जीवन-रेखा है जो जीवन प्रदान करती है।

दोनों हाथों में खंडित होने से अनेक कष्टों वाला होता है लेकिन मङ्गल की रेखा हो नं० ३ और टूटी न हो तो भयानक अपमृत्यु को टाल देगा।

यदि यह रेखा कुछ दूर तक मामूली तौर गई हो, फिर घूम कर चन्द्र के पर्वत पर नीचे चली गई हो तो स्त्री-जन्य क्लेश और स्त्री के हाथ में हो तो गर्भाशय के विकार से पीड़ा होती है। यदि मस्तक और हृदय-रेखा से मिली हो तो यकायक मौत की सूचना है।

यदि एक वर्ग क्षेत्र के अन्दर टूट गई हो तो भारी बीमारीसे बचने का लक्षण है और देशांतरमें भ्रमण का लक्षण है। यह रेखा भी लेखक के दाहिने हाथ में है।

यदि बड़ा घेरा बनाये, करीब २ चन्द्र स्थान तक पहुँचे तो पूर्ण रूप से दीर्घायु होने का लक्षण है।

यदि मोटी और पतली इसकी गति हो तो कभी बीमार कभी अच्छा और चञ्चल स्वभाव वाला होता है।

पीली और चौड़ी हो तो खराब तन्दुरुस्ती और डाह-युक्त स्वभाव होने की सूचना है।

जञ्जीर की तरह हो या जुड़ी हुई हो तो खराब स्वास्थ्य की सूचना है।

यदि आरम्भमें उपरोक्त प्रकार की रेखा हो तो बाल्यावस्था के जीवन में तन्दुरुस्त न रहने का चिह्न है।

यदि इसमें से एक रेखा गुरू के स्थान को जावे तो मनोभिलाषाऐं पूरी होने का लक्षण है और यशस्वी होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि गुरू के पर्वत पर किसी आड़ी रेखा से छेदन हो उन्नतिमें विघ्न होगा और निराशाके सबब से मनोभङ्ग होगा।

यदि एक काले बिन्दु पर जाकर समाप्त हो तो एकाएक आघात से मृत्यु की सूचना है।

वह रेखा साफ फटी न हो और लम्बी हो तो दीर्घायु शुद्ध स्वभाव, धनवान, सुदृढ़ शरीर वाला होता है। छोटी रेखा दोनों हाथों में हों तो अल्पायु की सूचना है।

काली चौड़ी जीवन रेखा बेईमान, चिड़चिड़ापन, डाह युक्त और कमजोर होने का लक्षण है।

टूटी हुई जीवन रेखा भारी बीमारी की सूचक है। एक हाथ में हो तो बीमारी से बच जाने का लक्षण है और यदि दोनों हाथ टूटी हो तो मौत की सूचना है।

यदि वह टूटी फूटी न हो तो वह अपने परिवार में प्रधान सबको आराम देने वाला होता है।

जब दो जीवन-रेखा हों तो भीतर वाली को मङ्गल रेखा कहते हैं। तन्दुरुस्ती की और युवावस्था आनंद भोगने की और कभी २ किसी स्त्री से थोड़ी जायदाद पानेकी सूचना है। यह मङ्गल रेखा तलवार के सदृश जिन मनुष्यों के हाथमें हो मुसीबत से रक्षा करती है और जीवन प्रदान करती है। ऐसी रेखा वाले को कष्ट बरदाश्त करने की ज्यादा शक्ति होती है। ऐसा मनुष्य जब बीमार होता है चुपचाप पड़ा रहता है, ज्यादा दुःख होने से ही चिल्लायेगा। अन्य पुरुषों की तरह बड़बड़ायेगा नहीं, बल्कि दुख सहन करेगा। स्त्री के हाथ में यह रेखा शुद्ध चरित्र का लक्षण है।

यदि जीवन-रेखा अँगूठे के समीप से निकले और शुक्र स्थान तङ्ग करके घेरे तो सन्तान रहित,संतापयुक्त होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लहरदार, दीपयुक्त, निर्बल रेशादार रेखा रोग से पूर्ण होती है। जीवन-रेखा का शुरू और आखीर में सर्प जिह्वाकार होना अच्छा नहीं है नं० १५

यदि अन्त में दो शाखा वाली हों नं०१५ तो वृद्धावस्था में कमजोर शरीर और द्रव्याभाव होने का लक्षण है; यदि १ शाखा नं० १० ज्यादा चौड़ी होकर अलग हो तो गठिया की विदेश में गरीबी अवस्थामें जीवन व्यतीत करने का लक्षण है। यदि वह शाखा चन्द्र स्थान तक जाये तो लम्बी समुद्रकी यात्रा की सूचना है। यदि इस रेखा में शाखायें निकल कर मस्तक-रेखा से मिलें तो धन और यश प्राप्त होता है।

यदि शाखायें ऊपर को जायें तो धन, आशाओं की पूर्ति और अच्छी तन्दुरुस्ती की सूचना है। यदि शाखायें नीचे की तरफ जावें तो धन की हानि और तन्दुरुस्ती के बिगड़ने का लक्षण है। यदि हृदय-रेखा से मिली हों और मस्तक-रेखा जीवन-रेखासे अलग होकर बहुत थोड़ी-सी हो तो कोई घातक होनेकी या यकायक बीमारीकी सूचना है। यदि गुरूका पर्वत उठा हो तो मस्तक सम्बन्धी रोग, यदि शनिका पर्वत उठा हो तो पैर में चोट और सूर्य का पर्वत उठा हो तो आँख में चोट यदि बुध का पर्वत उठा हो तो जिगरकी बीमारी। यदि मङ्गल का पर्वत उठा हो तो फेफड़े की बीमारी। यदि चन्द्र का पर्वत उठा हो तो लकवा की बीमारी। यदि शुक्र का पर्वत उठा हो तो आतशक की बीमारी होगी।

यदि एक शाखा चन्द्र की ओर जाये तो समुद्र यात्रा होती है। नं० ४ जब एक शाखा-इस रेखा से निकल कर चन्द्र

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

स्थान को जावे नं० ५ तो बेचैनी, जोग आने की सूचना है। मस्तक रेखा कमजोर हो तो नशा के आधीन शराब इत्यादि पीने वाला होता है और जहाँ पर ये जीवन रेखा को काटे तो मृत्यु की सूचना है। यह अक्सर छोटे मोटे हाथ में होती है और जब लम्बे पतले तङ्ग हाथ में हो तो पूर्ण शक्तिवान और बीमारी बरदाश्तकी शक्ति और चिड़चिड़े स्वभाव का होता है।

इस रेखाको छोटी रेखाये काटें तो घरेलू कष्ट या रोग की सूचना है। यदि अन्त में तारा या क्रास का चिह्न हो तो अचानक मृत्यु या कोई घटना होगी। यदि तारे का चिह्न इस रेखा के मूल में हो तो बाल्यावस्था में माता की मृत्यु होगी।

यदि श्याम तथा नीले रङ्ग का बिन्दु का चिह्न इस रेखा पर मङ्गल रेखा की तरफ हो तो निकट सम्बन्धी द्वारा विष प्रयोग होगा या दवा के बदले विषैली दवा पीने में आवेगी। यदि दोनों हाथ पर हो मृत्यु होगी। यदि इस रेखा से लगा हो या अलग ही एक दो चतुष्कोण हों तो नं० (६) फौजदारी मुकद्दमे का भय व उसके कारण जेल होगी। यदि एक ही हाथ पर हो तो जेल नहीं होगी।

यदि इस रेखा से एक या दो अखंड रेखा शनि के पर्वत पर गई हो तो नं० ७ सट्टे के व्यापारमें यश प्राप्ति और जमीन से लाभ होता है, ठेकेदारी से भी लाभ होगा और सवारी का सुख भोगता है।

यदि इस रेखासे एक सरल रेखा सूर्य के पर्वत पर जावे तो धनी, इज्जत पाने वाला और कारखाने का मालिक होता है(नं०८)यदि सूर्य रेखा उत्तम हो तो राजा से खिताब या ऊँचे दर्जे का पद पाता है। यदि एक रेखा बुद्ध के पर्वत पर जावे नं० ९) तो व्यापारी धन और मान प्राप्त होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यह नियम प्रत्येक रेखा के वारे में ध्यान रखना चाहिये कि वह जिस ग्रह स्थान को छुयेगी, क्रम से उसी देवता के गुण उसमें आ जायेंगे।

इस रेखा से निकल कर अँगुष्ठ की तरफ जावे तो स्त्री लोलुपता का चिह्न है। यह रेखा चौड़ी व लाल रङ्ग की हो तो बड़ा क्रोधी होता है। जीवन रेखा अन्त में भीतर की ओर गोल हो, दुख भोगते रहना पड़ता है।

जब कोई रेखा जीवन-रेखा से निकल कर भाग्य-रेखा से न मिले और स्वतंत्र रूप से शनि पर्वत की तरफ जावे तो वह मनुष्य कोई दूसरा कार्य धन पैदा करने का करता है, (नं० १२)

यदि भाग्य-रेखा जीवन-रेखा से मिली हो तो उस व्यक्ति के जीवन पर उसके घर वालों का विशेष अधिकार हो और भविष्य के निर्माता घर वाले होंगे। उसका बहुत समय उन लोगों की सेवा में ब तेगा। यदि इस रेखा पर नाला द.ग हो या अन्य आड़ी गह.ी रेखा छेदन की हुई होतो विषय ज्वर या मलेरया ज्वर की सूचना है।

यदि काला दाग हो ता भयंकर बीमारी या चोट की सूचना है। नेत्र पीड़ा व विष वाधा होती है।

यदि लाल दाग हो तो गर्म स्वभाव का लक्षण है।

यदि एक वृत्त हो तो काना और दो वृत्त हो तो अन्धा होने का लक्षण है। यदि आरम्भ में द्वीप हों तो पैदायशी बीमारी और कभी कभी वर्णसंकर की सूचना देती है। लम्बी गहरी लाल रङ्ग की जीवन रेखा हो तो और गुरू की उँगली का तीसरा पोरवा बड़ा हो और भारी होतो ऐसे व्यक्ति भोग विलास व नशे में भूले रहते हैं, वह दम्भी व नशेबाज होतेहैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

और इसी कारण से उसे रोग भी ऐसे होते हैं जो उसके उपरोक्त वासना ही के कारण होते हैं, और अक्सर रोग बीच २ में हमला करता है। जीवन-रेखा से कोई शाखा फूट कर शुक्र पर्वत की ओर जावे तो स्थल यात्रा का चिह्न है। यदि जीवन-रेखा के मध्य भाग से साफ सुथरी एक रेखा शुक्र के स्थान में होती है वह सब मुल्कों का सफर करने वाला होता है। साथ ही साथ वह साफ मन वाला सीधा होता है।

यदि जीवन-रेखा से एक रेखा निकल कर भाग्य-रेखा में मिले तो यह बतलातीहै किवह मनुष्य अपनी शक्ति लगाकर अपना हालत सुधार कर और अपना बंधन तोड़ कर उन्नति करके भाग्य की वृद्धि करता है। यदि यह जीवन-रेखा से एक सीधी रेखा गुरू के ऊपर हो तो यह यशस्वी विद्वान और सर्व सिद्धि पाता है। यदि शाखा जीवन-रेखा से निकल कर अधोगति हो तो धन व्यर्थ नष्ट होता है।

साँतवाँ अध्याय

मस्तक-रेखा

हृदय-रेखा से पीछे एक दूसरी जो आड़ी रेखा जाती है उसे मातृ-रेखा कहते हैं। जहाँ नं० १ है। इस रेखा से बुद्धि का ज्ञान होताहै और मस्तिष्क सम्बन्धी बातें बताई जाती हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यह रेखा तर्जनी उँगली के बीच से निकल कर चन्द्रमा, मङ्गल के पर्वत पर जाती है। यह तीन स्थान से निकलती है। जीवन रेखा के भीतर से जीवन-रेखा से मिली हुई, जीवन-रेखा से अलग होती है। जीवन रेखाके बाहर से भी निकलती है यह तीसरा स्थान है। इस रेखा से स्मरण शक्ति, धारणा शक्ति, बुद्धिमता कवित्व मालुम होता है।

शुद्ध विकसित गहरी सुन्दर मस्तक रेखा वाला बुद्धि-मान, बलवान और प्रसिद्ध होता है। काली चौड़ी मनस्तरेखा वाला सुस्त और कलेजे की बीमारी और पेट की बीमारी का सूचक है। टूटी हुई मस्तक रेखा-मस्तक में भारी आघात होने का लक्षण है और यदि दोनों हाथों में टूटी हो तो मौत की सूचना है।

चौड़ी मस्तक रेखा वाले दिमाग़ लगाने में कमजोर होते हैं और जल्द बदलने वाली प्रकृति तथा शरीर से पुष्ट होता है।

यह रेखा यदि जीवन रेखा में मिली हो तो शक्की, अपने ऊपर भरोसा कम रखने वाला, जल्द बुरा मानने वाला और अपनी बुद्धि तथा काबलियत को कम समझने वाला होता है।

यदि यह रेखा अधिक छोटी हो और शनि के स्थान के पास जाकर खतम होती है तो अकाल मृत्यु की सूचना देती है। इस रेखा को देखते समय गौर से देखने की जरूरत है, वरना फल गलत होगा।

जिस पुरुष की मस्तक रेखा अधिक लम्बी हो तो वह अधिक धनी होगा यदि रेखाओं से कटी बाधित हो तो अनेक प्रकार से द्रव्य के व्यय से व्याकुल रहता।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि यह रेखा चन्द्र व मङ्गल के पर्वतों के मध्य में हो तो उत्तम होती है। चन्द्र के पर्वत पर होकर नीचे की तरफ हाथ के बाहर जाकर मिले तो अच्छा नहीं। अधिक लम्बी मस्तक रेखा दुराचारी निर्लज्जता व चालाकी की साक्षी है। घर के कामों में उपयोगिता न्यून रहती है। व्यवहार में कुशल नहीं. एक के बाद दूसरा कार्य करने की प्रेरणा सर्वदा देती रहती है।

यदि मस्तक रेखा लम्बी गहरी हो तो महान एकाग्रता की शक्ति, गहरी और छोटी हो तो कुछ विषयों में एकाग्रता छोटी और सीधी हो तो व्यवहारिक समझ होगी. यदि लम्बी व सीधी हो तो धन जमा करने की शक्ति होगी।

यदि यह रेखा अपने स्थान को छोड़ कर ऊपर उठकर हृदय रेखा से मिले तो यह ज्ञात होता है कि वह व्यक्ति किसी इच्छा पर पक्का इरादा करेगा और अपने प्रेम को दिमागी शक्ति से दबा देगा और यदि कुछ करना चाहता है तो उसको करने में कोई तरीका न बाकी रखेगा चाहे वह काम कितना ही कठिन क्यों न हो और खून तक करने की नौबत ही क्यों न आ जावे। यदि यह चिह्न मोटे हाथ में हो तो धन की लालसा समझना और लम्बे हाथ में हो तो बुद्धि की शक्ति का अधिकार दूसरों पर चाहता है। यदि यह रेखा बांकी टेढ़ी होकर हृदय रेखा से मिल जाये तो उन्मत. भ्रष्ट बुद्धि वाला घातकी व कृतघ्नी होती है, ऐसे से मित्रता नहीं करनी चाहिये, यदि मस्तक रेखा कुछ ऊपर को झुके इस समय में बीमारी और हो सकती है कि. अधिक बीमारी या दिमागी बोझा पड़ेगा और वह व्यवहारिक कार्य कुशलता से करेगा। यदि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मस्तक रेखा ऊपर को जावेतो समझना चाहिये कि उस समय व्यवहारिक कार्य में कुशलता होगी। वह अधिक समझदार होगा और कार्य में दक्ष होगा।

यदि बांये हाथ की मस्तक रेखा दाहिने हाथकी मस्तक रेखा से बडी हो तो सुसराल धनी होती है और बांये हाथ की मस्तक रेखा हृदय रेखा से मिले तो सुसराल से धन की प्राप्ति होती है।

पतली लम्बी रेखा हो तो ऐसा मनुष्य दगावाज तथा विश्वास के योग्य नहीं होता। यदि हथेली को पार कर जावे तो खुदगर्ज, लालची, व्यवहारमें चालाक और कंजूस निंदक, क्रोधी या पीड़क, परन्तु अपने काम में दक्ष होता है। यदि जीवन रेखा आदि से आरम्भ होती है और नीचे को जाकर शाखा युक्त हो तो तर्क शक्ति वाला और साहित्य प्रेमी होताहै, यदि वहाँ चन्द्र स्थान पर चली जाय तो काव्य और गुप्त विद्याओं की सूचिवाला होता है। उसे ज्ञान की खोजमें आनंद मिलता है।

यदि जीवन रेखा के साथ हाथ में बहुत दूर तक मिली हो तो शंका और सोच विचार में समय गमाने वाला होता है। अपने अनेक अवसरों को खो देने वाला, अविश्वासी, मनके विचार वाला और बोलने की अपेक्षा लिखकर तत्वज्ञान का प्रदर्शन करने में अधिक दक्ष होता है।

यदि यह रेखा जीवन रेखा से अलग हो तो आत्मा-भयानक कार्य करने की हिम्मत रखने वाला' योग्य और विद्वान होता है। यदि यह रेखा दो भागों में विभाजित होकर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ऐसा प्रदर्शित करें कि दो रेखा ही हों तो चतुर, कंजूस और और समय २ पर दयावान तथा क्रूर और दूसरों को अच्छी सलाह देने वाला होता है।

यदि यह रेखा दोहरी हो तो किसी विशेष विषय के पढ़ने में तथा विशेष वाणिज्य या व्यवसाय में रुचि और दो प्रकार के धन्धे से धनी होने का लक्षण है। मस्तक रेखा से दो शाखा निकल कर एक सूर्य को और दूसरी पर्वत को जावे तो शास्त्र विशारद होता है। यदि यह रेखा बिलकुल नहीं हो ती यकायक मृत्यु; छोटी हो तो कम बुद्धि वाला, यदि मध्य में टूटी हो तो सिर में भयकर जख्म होता है। अत: कारण यानि हृदय रेखा और मस्तक रेखा के बीच के हिस्से में फर्क बहुत कम होता है तो वह मनुष्य रिश्वत लेनेवाला और दुष्ट प्रकृति वाला होता है।

यदि यह रेखा गुरू के पर्वत से निकली हो और जीवन रेखा को छती हुइ गई हो और लम्बी हो तो योग्य, बुद्धिमान किसी क म को ध्यान से करने वाला, बड़ी २ अभिलाषायेंरखने वाला होता है। दूसरों पर हुकूमत करने वाला, कामको समझ कर करने वाला निस्पृह और उपरोक्त गुणों के सिवाय ईमानदार होता है। वह सच्चरित और दयावान होता है।

यदि मस्तक रेखा और जीवन रेखा में अधिक अन्तरहो तो ना समझ, अहङ्कारी, आफतों में आँख मूँद कर फँस जाने वाला होता है।

यदि रेखा लहरदार हो और स्वास्थ्य रेखा की तरफ झुकी हो तो दिमागी बीमारी की सूचना है। यदि आरम्भ में मस्तक रेखा जीवन रेखा, आयु रेखा से जुडी हो तो यकायक मृत्यु की सूचना है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि जीवन रेखा से अलग हो और छोटी रेखाओं से जुड़ी होती बदमिजाज होगा और सम बुद्धि का उसमें मादा नहीं होगा। यदि उपरोक्त रेखा गुणा के चिह्न से मिली हो तो भयानक घरेलू झगड़ों की सूचना है। मस्तक रेखा जीवनरेखा से जुड़ी हो और सीधी हो और मङ्गल के स्थान तक गई हो तो हिम्मतो अपने कर्म को पूरा करने का इरादा वालाहोता है। वह जिद्दी सम्मानयुक्त होकर कार्य को पूरा करता है। ऐसी रेखा वाले अपनी लियाकत को कम समझते हैं। जब मस्तक रेखा शाखा वाली हो और जुड़ी हो और यह शाखायें करीब २ बराबर हों तो नाजुक मिजाज, शक्की. किसी बातको निर्णय करने का अभाव. तार्किक बुद्धि का प्रयोग तथा मीन-मेख की आदत वाला होता है। उस पुरुष की श्वसा लत होती है कि वह हर काम की पूरी और उससे भी ज्यादा छान-बीन करता है। वह सोचता है कि इस कार्य में ऐसी कौनसी बात अच्छी है? ऐसे व्यक्ति को सलाह देना. कि प्रथम अन्तः की बुद्धि में जो सलाह उठे वही करना। जब मस्तक-रेखा चंद्र पर्वत की तरफ झुकी हो मो मन पर काबू रहता है। जब चाहता है तो बुद्धि का स्तेमाल करता हैं और जब ज्यादा नीचे झुकी रहती है तो अपने ख्यालात के वशीभूत रहता है और अजीब कार्य करता है। उसे कार्य करने का जोश होता है। ऐसे लोग महत्व के कार्य नहीं कर पाते. क्योंकि जोश जैसे ही ठण्डा हो जाता है काम बन्द हो जाता है।

जब मस्तक रेखा पूर्ण रूप से चन्द्र के स्थान को झुक जाती है तो वह व्यक्ति ख्याल में डूबा रहता है। और तनहाई पसन्द करता है या खुदकशी तक कर डालता है। लेकिन यदि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चन्द्र के ऊपर के भाग में हो और रेखा पर द्वीप या नक्षत्र न तो आत्म हत्या का भय नहीं, लेकिन इन सब रेखाओं में उदासी, एकान्त प्रियता, जल्द ही बात से दिमाग को धक्का लगना होता है।

सूर्य के पर्वत के नीचे मस्तक रेखा पर यव का निशान हो तो नेत्रमें विकार होगा। शनि के पर्वत केनीचे मस्तक रेखा पर यव हो तो गुप्त इन्द्रिय में पीड़ा होवे। मस्तक रेखा पर तारा हो तो किसी बात का धक्का लगता है। यदि मस्तक रेखा में से शाखा नीचे की तरफ जावे तो यह बतलाता है कि उस समय व्यवहार में कमी का होना और ख्यालातका बढ़ना होगा। यदि मस्तक रेखा ऊपर को बुध पर्वत की ओर उठे तो यह बतलाती है कि उस व्यक्ति को धन इकट्ठा करने की प्रबल इच्छा होती है।

यदि यह रेखा कई स्थान में कई छोटी २ रेखाओं से कटी हो तो शिर में दर्द होता है।

यदि सफेद दाग इस रेखा पर हो तो नई वस्तुका इजाद करने वाला हो। यदि रेखा पर नक्षत्र हो तो शिरमें चोट लगे। मगर दोनों हाथ की रेखाओं पर नक्षत्र हो तो शीघ्र मृत्यु हो।

यदि आरम्भ में हो और द्वीप भी हो तो पैदायशी दिमाग या फेफड़े में शिकायत का होना बताती है।

यदि शनि के नीचे द्वीप हो तो वहरेपन का चिह्न है। यदि लहरदार स्वास्थ्य रेखा की तरफ झुकी हो तो दिमागी बीमारी होतीहै। यदि जंजीरदार या जुड़ी हुई हो तो एकाग्रता की कमी और शिर दर्द, मन्द बुद्धि वाला, कान रोग वाला होने का लक्षण है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लहरदार हो तो तंग, चतुष्कोण बनाये और बुध का पर्वत हो तो लालची, झूँठा, बेईमान, पाकिटमार और चोर, छिनरा, और निकम्मा होता है। यदि छोटे-छोटे द्वीप से बनी हो और नाखून रेखादार हो और मुड़ा हो तो तपेदिक का भय होता है। यदि आखीर में फांकदार हो और एक शाखा की फांक चन्द्र की तरफ जाती हो और दूसरी रेखा अपने स्थान में हो तो वह व्यक्ति अपने को खुद धोखे में डालेगा, और उसके बाद दूसरों के साथ खुद धोखेबाजी करेगा। यदि कोई जगह कटी हो तो शिर दर्द का लक्षण है। यदि काला या नीला दाग हो तो विषम ज्वर या सिर दर्द होता है।

मस्तक रेखा हृदय रेखा को दबोचे या उसको पार कर जावे तो निर्दयी होने का लक्षण है। ऐसा मनुष्य किसी की भी हत्या करने को तैयार हो सकता है। यदि मस्तक रेखा और हृदय रेखा दोनों पास ही पास एक दूसरे के बराबर हथेली में एक सिरे से दूसरे सिरे तक हों तो ऐसा व्यक्ति दृढ़ प्रतिज्ञा वाला होता है और यदि किसी से प्रेम हो जावे तो अन्त तक निभाता है और यदि कोई कठिनाई प्रेम के मार्ग में आ जावे तो उसका तन, मन और धन से मुकाबला करता है और विजय पाने के लिये सारी शक्ति लगा देता है। यदि किसी से शत्रुता हो जाये तो सारी शक्ति से बदला लेने का प्रयत्न करता है, ऐसी रेखा वालों के मित्रों की संख्या बहुत ही कम होती है मस्तक और हृदय रेखा का एक हो जाना शुभ नहीं है। ऐसी रेखा से हृदय और मस्तिष्क की कमजोरी होगी। यह चिन्ह बड़े बुद्धिमानों के ज्यादा पाया जाता है। ऐसा मनुष्य जल्दी ही बुरा मान लेता है और विलक्षण चाल चलन वाला चाहे

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बुरी बात हो जाय या अच्छी हो जिधर झुकेगा हद से बाहर बढ़ जायगा।

ऐसा मनुष्य अपने कार्य में एकाग्र बुद्धि करके धुनी हो जाता है और तन, मन, धन, उस कार्य में लगा देता है। ऐसे लोगों में ध्यान वस्थित होने की शक्ति अच्छी होती है। ऐसे लोगों के मित्र कम होते हैं और उन्हें एकान्त प्रिय होता है। यदि उनसे कोई अनुचित बात कही जाय तो दिल पर असर पड़ता है। ऐसे लोगों के साथ साझा किसी काम में कामयाब नहीं होना इसलिये उन्हें अपना कार्य स्वयं करना चाहिये।

ऐसी रेखा में यह देखना चाहिये कि वह अपनी जगह यानी मस्तक रेखा के स्थान पर है या नहीं। वह हृदय रेखा के स्थान पर है, यदि पहले स्थान पर है तो दिमागी शक्ति प्रबल होगी और दूसरी तरफ है तो जोश प्रेम से ताल्लुक रखती है। मस्तक रेखा के सिरे से कोई एक शाखा हृदय रेखा में जाकर मिल गई हो या हृदय रेखा से कोई शाखा निकल कर मस्तक रेखा के सिरे पर मिले तो ऐसा मनुष्य प्रेम में अन्धा होकर भयानक से भयानक काम करने की क्षमता रखता है।

यदि छोटी-छोटी बहुत सी रेखायें मस्तक रेखाओं की शाखाओं के रूप में हृदय रेखा की तरफ जारही हो तो प्रेम के साथ मोह प्रबल होता है, ऐसे दो प्रेमी एक दूसरे के सामने सदा रहना चाहते हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आठवाँ अध्याय

हृदय-रेखा

हृदय रेखा कनिष्ठा के मूल के बुध के पर्वत के नीचे से निकल कर गुरू के पर्वत पर जाती है, इस रेखा से प्रेम का परिणाम जाना जाता है। स्वच्छ शाखा युक्तिः हलके लाल रंग की, स्पष्ट पतली कटी न हो और गुरू के पर्वत तक गई हो, स्वभाव उत्तम और भाग्यवान होने की सूचना है। अधिक छोटी हो तो स्वार्थी और शाखायुक्ति न हो तो मनुष्य निठुर स्त्री का द्वेषी, प्रीति शून्य तथा शुष्क जीवन होगा।

यदि रेखा यह न हो तो वह मनुष्य हृदय-रोग वाला कुकर्मी, लफंगा, कठोर और कपटी होता है।

यदि जंजीर की तरह हो एक मध्यमा की तरफ जावे तो स्त्रियों पर प्रेम और विश्वास करने वाला नहीं होता।

यदि मस्तक रेखा की तरफ अधिक झुकी हो तो या दोनों में कम अन्तर हो तो लोभी होता है और इसके ऊपर तिल बिन्दू या चतुष्कोण हो तो शुद्ध अन्तःकरण नहीं होता है। यदि स्पष्ट और अधिक लम्बी होती है तो अधिक प्रेमी होता है। यदि पीली हो तो जिगर की बीमारी की सूचना देती है यदि असाधारण गहरी हो मगी या मूर्च्छा रोग की सूचक है। पीली चौड़ी हो तो हृदय रोग और बहुत पतली लम्बी हो तो घातक स्वभाव का मनुष्य होता है। यदि यह रेखा अधिक गहरी हो तो अपनी स्त्री पर अति प्रेम वाला हो सके परिणाम दुःख भय होता है, क्योंकि उसको स्त्री के

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सिवाय सब जगत तुच्छ दिखाई देता है। यदि शनि के स्थान से शुरू हो तो इन्द्रिय-लोलुप, स्वार्थी प्रेम वाला होता है, कपटी व कंजूस होता है।

मध्यमा उँगली के जितना ही समीप हो उतना ही अधिक कामी और अपनी तथा पराई इज्जत का ख्याल न करने वाला और दूसरों की दृष्टि में अपमानित होता है। पहली और दूसरी उँगली के बीच से यह रेखा आरम्भ हो तो प्रेम दृढ़ और सच्चा आदमी होता है। ऐसी रेखायें ज्यादा तर स्त्रियों के हाथ में पाई जाती हैं। यदि यह रेखा गुरु के स्थान के बीच से चलती हो तो प्रबल, व्यग्र, उत्सुक प्रेम की सूचना है। स्त्री पुरुष एक दूसरे पर अपना अधिकार चाहते हैं। एक दूसरे से सन्तुष्ट नहीं रहते। व्यवहार में पति-पत्नी की तरह रहते दिखाई देते हैं परन्तु उनके अतः करण यह भाव रहता है कि जितना प्रेम पुरुष करता है उतना स्त्री नहीं करती। इसी प्रकार का भाव स्त्री को भी रहता है। यह दोनों की भूल है। जैसी रेखा जिनके हाथ में हो उन्हें कह देना चाहिये कि इस भ्रम रूपी भावना को दिल से निकाल दें क्योंकि यह एक विक्षेप होने के कारण है। ज्योतिषी को चाहिये कि वह इस प्रभाव को उनके हृदयों पर से अवश्य हटादे।

यदि यह रेखा मस्तक-रेखा पर झुके तो प्रेम प्रबल होता है और कर्त्तव्य में बाधा पड़ती है। मस्तक का बल प्रेम के आगे झुक जाता है। कोई कार्य करने का मन न हो परन्तु जहाँ प्रेम का झकोरा आया और प्रेम का दबाव पड़ा तहाँ वह मनुष्य कर्त्तव्य-पथ से हटकर प्रेम के बताये हुये मार्ग को ग्रहण कर लेता है। यदि रेखा मस्तक रेखा से मिले तो प्रेम

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

में सफलता नहीं होती और निराशा घेरे रहती है ऐसे लोगों से कुछ काल तक मित्रता रहती है और फिर अनबन हो जाती है और उसमय दोषी रोपण होता है । ऐसे व्यक्ति के लिये अपने सम्बन्धियों से जो गनिष्ठ हों उनसे प्रेम करना चहिये तथा अन्य लोगों से गुड़ चिउटा होना ठीक नहीं होता । यदि दोनों हाथ में मस्तक रेखा मिलती हो तो प्रभाव बुरा होता है । कभी २ आत्म हत्या की नौबत भी आ जाती है ।

यदि यह रेखा से अधिक भारी और स्पष्ट हो तो हृदय को शासन मस्तक पर होता है । यानी प्रेम के आगे मानसिक शक्ति दब जाती है । यदि जंजीर के समान छोटी २ रेखाओं से घिरी हो तो क्षणिक प्रेम होता है । सर्प जिह्वाकार हो तो सच्चे प्रेम का लक्षण है । रेखाओं से छेदन हो तो स्त्री सम्बन्धी प्रेम में निराश होता है और यदि ऐसे लक्षण स्त्री के हाथ में हो तो वह व्यभिचारिणी होती है और इस रेखा पर बिन्दु हो तो स्त्री प्रमोद होकर अन्त में दुखी होती है । भाग्य रेखा हृदय में रुक जावे तो प्रेम प्रबल कर्म में बाधा की सूचना है । शहद के रंग की रेखा हो तो सुखी लाल वर्ण हो तो पानी फीके रङ्ग की हो तो दरिद्र काली नीली रेखा अच्छी नहीं होती विशेष श्याम रङ्ग की रेखा वाले दरिद्र दुखी नौकरी करने वाले लुच्चे और दम्भी भी होते हैं । हृदय रेखा के ऊपर जाने वाली रेखायें आशा जनक और नीचे वाली रेखायें निराशा जनक होती हैं । यह रेखा उंगलियों के नजदीक हो तो ईर्षा युक्त होना जबर दस्ती छीन लेने वाला होता है । यह रेखा नीचे की ओर उंगलियों से दूर होने से बड़ी इच्छा व विचार वाला होता है । गुरु के पास यदि इस रेखा में से एक या दो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

शाखा निकले तो भाग्यवान परिश्रमी मित्र व स्त्री के साथ प्रेम का व्यवहार करने वाला और वृद्ध अवस्था में धन सुख भोगने वाला होता है यदि स्पष्ट रेखा गुरु के पर्वत तक हो तो लोभी और मतलबी होता है। तर्जनी मध्यमा के मध्य भाग में यह रेखा मिलती हो तो किसी स्त्री सम्बन्धी व्यभिचार का दोष लगता है और अपनी स्त्री, मित्र, गुरू तथा अन्य लोगों पर सन्देह रखता है।

हृदय रेखा से नीचे के हिस्से की तरफ वाले के समान शाखा हो और शाखाओं के मुख मुड़े हुए टेढ़े हो या अन्य रेखाओं से छेदन हो तो स्त्री सम्बन्धी प्रेम में निराशा होती है और इस रेखा पर हो तो स्त्री के प्रेम में अन्धा होकर अन्त में दुखी होता है।

यदि इस रेखा पर बिन्दु हो जो गहराई में कुछ अधिक गहरे हो तो ऐसे मनुष्य को तेजी से भागना जल्दी सीढ़ी पर चढ़ना, बहुत भारी बोझा उठाना, नशा करना बहुत हानिकारक होता है। हृदय में धड़कन की बीमारी बढ़ जाने का भय है।

यदि दो हृदय रेखा हो तो भगवत आराधन में तत्पर रहता है। वह भक्त होता है और इष्ट को मानता है।

यदि एक सिरे के हाथ के दूसरे सिरे तक हो तो अत्यधिक प्रेम स्वभाव का होना बताती है। जंजीरदार हो तो शनि के स्थान की उठे तो स्त्रियों से घृणा और अशुभ हाथ में अस्वाभाविक कर्म करने वाला होता है।

यदि आरम्भ में शाखा हो और मस्तक रेखाओं में भी शाखाये हो और एक शाखा नीचे से मङ्गल के स्थान में गई हो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तो वियोग हो जिसका परिणाम दोनों का विवाह होता है ऐसी रेखा वाले के मां बाप विवाह होने में बाधक होते हैं। यदि अन्त में शाखा न हो तो निः सन्तान होने की सूचना और कई छोटी २ शाखा हो तो छोटे २ प्रम मार्ग में जाने की सूचना है यदि इसकी कोई शाखा लहरदार चन्द्र स्थान को जावे तो हिंसक और भारी घातक स्वभाव की सूचना है। ऐसे आदमी से दुशमनी नहीं करनी चाहिये।

यदि इस रेखा पर बिन्दु हो तो प्रेम में निराशा और दिल की धड़कन होये और सफेद बिन्दु हो तो प्रेम में विजय देता है, काला और नीला बिन्दु हो तो ज्वर गठिया होता है। यदि इस रेखा पर व्रत हो तो दिल की कमजोरी का लक्षण है और सूर्य स्थान के नीचे हो तो आँखों की बीमारी की सूचना है। यदि यह रेखा अपने उचित स्थानों के नीचे हो तो ठण्डा मिजाज और खुदगर्जी की निशानी है। यदि ज्यादा ऊँची हो, उँगलियों के जड़ के पास हो तो जोशीला और कामी होने का लक्षण है। छोटी बिना शाखा के स्थान तक हो तो असन्तुष्ट, कृतघ्न व निष्ठुर हो और अल्पाय की सूचना है।

यदि यह अन्त में फांकदार हो और उसकी शाखा मङ्गल के मैदान को मस्तक रेखा के नीचे होकर जाय तो वियोग के बाद संयोग होता है। यह उस व्यक्ति के हाथ में हो तो जिसके प्रेम में बाधायें चाहें माता पिता की ओर से हो या अन्य कारण से हो तो जिनका वियोग हो गयाहै तो बादमें वे लोग प्रेम में एक होकर सफल होंग। यह रेखा कहीं से टूट कर नीचे की ओर झुक जाये तो जल में डूबने का चिन्ह है और ऊपर चढ़ कर नीचे की तरफ झुके तो कहीं गिरने का चिह्न है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नवाँ अध्याय

स्वास्थ्य-रेखा।

(आकृति नं० १३)

जीवन रेखा से आयु का पता चलता है, लेकिन स्वास्थ्य रेखा से किस प्रकार का और कैसा जीवन है, यह मालूम होता है। जहाँ पर यह दोनों रेखायें मिलें और करीब करीब बराबर हों और वैसे ही स्पष्ट हों तो मृत्यु का समय बतलाती है, चाहे जीवन रेखा इससे बड़ी और आगे बढ़ी हो तो उसका कोई असर नहीं है। जब यह जीवन रेखा को काट कर बढ़ेगा तब ही मृत्यु होती है।

स्वास्थ्य रेखा जीवन का माप है और वह अकसर बदला करती है। जब मनुष्य रोग ग्रस्त होता है तो यह गहरी और भयानक हो जाता है और जब शरीर निरोग हो जाता है तो गायब भी हो जाती है। सबसे अच्छा स्थान इसका जब है जब यह नीचे को आवे और जीवन रेखा को न छुये तो समझ लेना चाहिये कि कोई रोग शरीर में है जो स्वास्थ्य को धीरे धीरे बिगाड़ रहा है।

यह रेखा हर हाथ में नहीं होती। इसके न होने से हाथ देखकर बताया जा सकता है कि वह निरोग है। यदि किंचत स्वरूप हो तो प्रमोद प्रिय निरोगी रह कर सुख अनुभव करता है। यदि पितृ रेखा से युक्त हो तो चिन्ता एवं दुखादि से युक्त हो। यदि पितृ रेखा से न मिल कर स्वच्छ

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—६

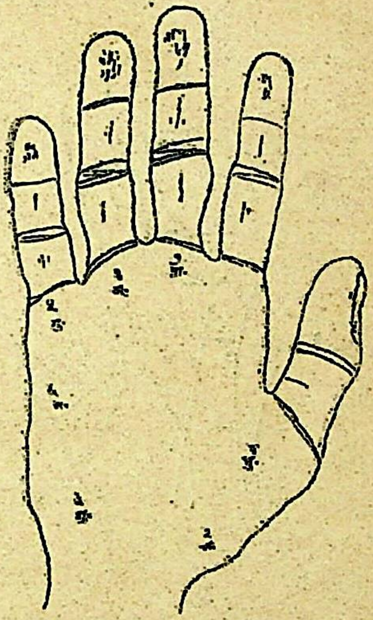

हथेली के किस स्थान पर वार का स्थान है। जानना भी अत्यन्त आवश्यक है। उसको जानने के लिये इस चित्र को गौर से देख कर उनकी सही सही स्थिति का ज्ञान हो सकता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—१०

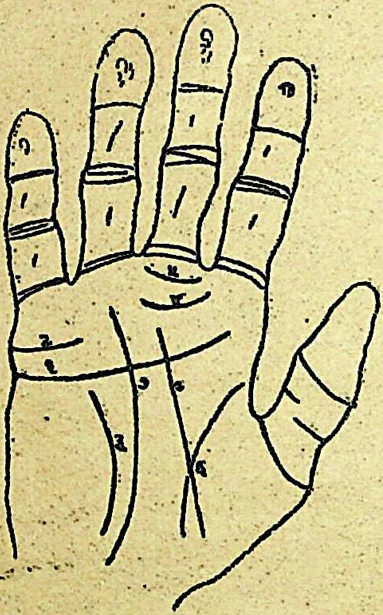

इस चित्र को देख कर रेखाओं का सही स्थान मालूम होगा। बिना रेखा ज्ञान किये हाल की स्थिति का पता नहीं लग सकता।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—११

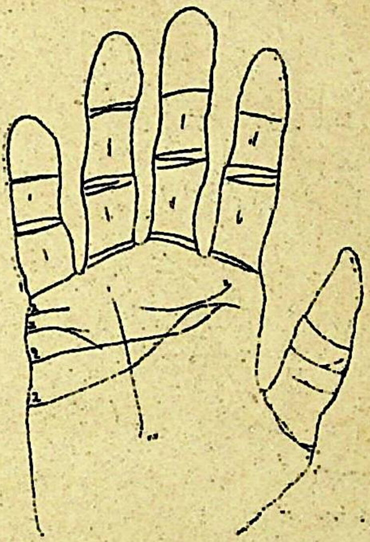

मस्तक रेखा किस स्थान से निकलती है और कहाँ समाप्त होती है ? इस मिश्रण का क्या फल होता है जानने के लिये इस चित्र को गौर से देखना बहुत ही जरूरी है !

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—१२

इन रेखाओं को एक दूसरे से मिलने पर अपना एक नवीन क्षेत्र बनाना पड़ता है। उनका जीवन के भविष्य पर क्या असर पड़ता है। यह जानने के लिये इन रेखाओं का ज्ञान पूरी तरह करना जरूरी है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar. Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—१३

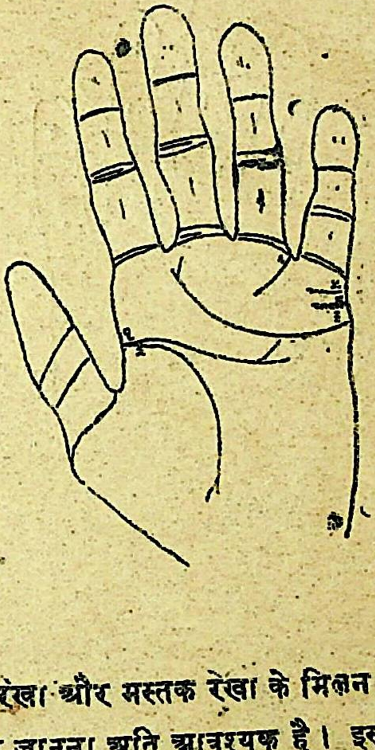

हृदय रेखा और मस्तक रेखा के मिलन का क्या असर होता है। यह जानना अति आवश्यक है। इसकी स्थिति ही इसमें दी गयी है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—१४

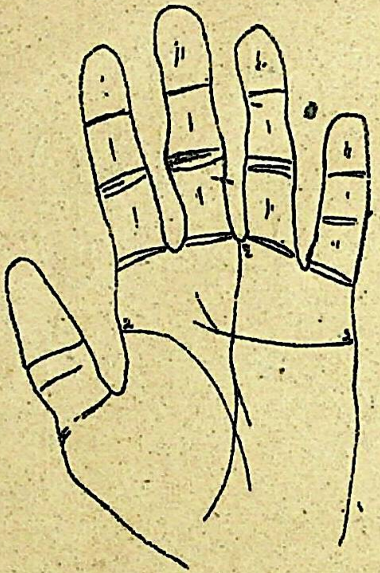

इन तीनों रेखाओं का अपना असर तो कुछ और है परन्तु उनके मिलने से एक और विषय अवस्था उत्पन्न हो जाती है उनको जानने के लिये इस चित्र को ध्यान से देखो।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—१५

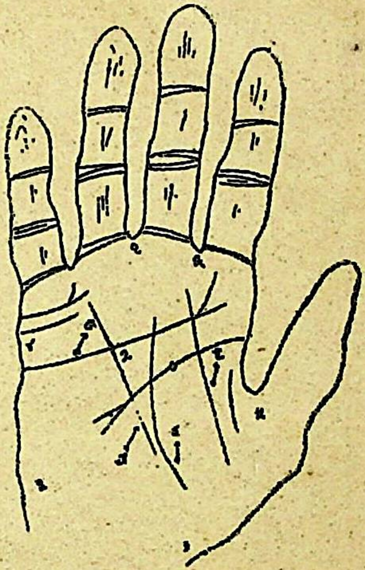

ग्रहों के स्थानों से निकलने, गुजरने व मिलने से रेखाओं पर क्या असर पड़ता है। इसकी जानकारी के लिये इनको जानना बहुत जरूरी है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—११

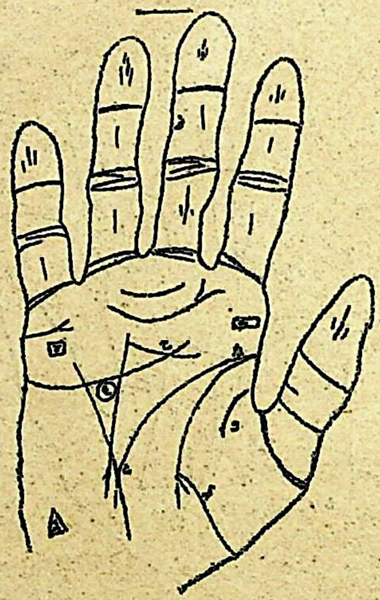

त्रिभुज, वृत, और वर्ग की स्थिति किस स्थान पर होने से जीवन घटना पर क्या प्रभाव हो सकता है। इसकी जानकारी के लिये पूरा हाल जान लेना परम आवश्यक हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तो दीर्घायु एवं भाग्यवान होता है। यदि बीच हो से चले तो पुरुष विद्वान और चपल वाचाल होवे। यदि स्वच्छ स्निग्ध एवम् रक्त वर्ण हो तो अनेक प्रकार का व्यापार करने वाला होता है।

यदि बीचमें लाल और सूक्ष्म तथा मस्तक के पास हो तो ज्वरादि रोगों से कष्ट की सूचना है। स्वास्थ्य रेखा पर तारा हो तो भीतरी रोग व कभी २ चीर फाड़ तक की नौबत आती है। स्त्री के हाथ पर अन्तःकरण रेखा के पास तारा हो तो प्रसूती समय उसे पीड़ा होती है। स्वास्थ्य रेखा पर क्रास हो तो शरीर रोगी रहा करेगा स्वास्थ्य रेखा बहुत ही पतली और सीधी हो तो बड़ा निर्दयी होता है। यदि सफेद रङ्ग और चौड़ी हो तो अधिक समय का अजीर्ण रोग होगा। आरोग्य रेखा पर बिन्दु का चिन्ह हो तो पक्का चोर होता है इस रेखा के पास कोई क्रास या गोल बिन्दु हो तो शरीर में जख्म का निशान होगा। यदि छोटी २ रेखाओं से युक्त होतो अग्निमान्द्य होने की सूचना है। यदि मस्तक रेखा से मिली हो तो यशस्वी गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होता है। यदि त्रिकोणाकार हो तो दैवी बुद्धि वाला प्रभावशाली होता है। यदि भाग्य रेखा इससे मिल कर त्रिकोणाकार हो जाय तो स्वाभाविक भविष्य वक्ता, अलौकिक कार्यों को करने वाला, तत्व ज्ञानी होता है।

यदि चन्द्र स्थान तक चली जाये तो अस्वस्थ चित्त वाला और प्रमेह रोगी होता है। यदि यह रेखा हाथ में न हो तो चतुर और बातूनी होता है। इसका न होना अच्छा है क्यों कि यह अच्छी तन्दुरुस्ती की सूचना है। यदि दो हों तो धन

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चरित्र की पवित्रता और अच्छे स्वास्थय की सूचना है। यदि पीली हो तो कलेजे की बीमारी की सूचना है। यदि लहरदार बल खाती हुई हो, रङ्ग पीला हो हाथ ठण्डा हो तो जिगर की बीमारी और बेईमानी करने का लक्षण है। यदि यह रेखा लम्बी व दीर्घ हो और जीवन रेखा छोटी हो तो यह जीवन रेखा के थोट को पूरी करके दीर्घाय करती है। यदि स्वच्छ त्रिभुजा कार नीचे की तरफ जड़ हो और जीवन रेखा से मिली हो तो बड़ा ही सौभाग्य सूचना है। वह मनुष्य गुप्त विद्या ज्योतिष इत्योदि को भारी परिश्रम कर स्वाभाविक रूप से प्राप्त करेगा। यह रेखा मस्तक रेखा को काटकर गुणा का चिन्ह मंगल के ऊपर के भाग में बनावे तो गुप्त विद्या की बुद्धि मनुष्य में होती है। यदि भाग्य रेखा और मस्तक रेखा से मिल कर त्रिकोण बनावे तो ज्योतिष तथा अन्य गुप्त विद्याओं की तरफ विशेष इच्छा होती है। और दैवी शक्ति के बल से अन्तः करण में ज्ञान होता है। जिसके बल से जो विचार उठे कह देने का लक्षण है। यदि कई जगह कटी हो तो उतनी ही बार बीमारी का आना और रोजगार में बाधायें इत्यादि होती हैं। यदि नाखून लम्बे और बदाम के शक्ल के हों तो फेफड़े की जगह कमजोरी की सूचना है और यदि उपरोक्त चिन्ह के साथ स्वास्थय रेखा पर द्वीप हो तो तपेदिक होने का लक्षण है।

यदि नाखून बहुत चपटे और कोड़ी की शक्ल के हों और स्वास्थय रेखा गहरा हो तो लकवा या अन्य बुरी बीमारी स्नायू सम्बधी होती है। यदि मस्तक रेखा और हृदय रेखा के बीच में गहरी अधिक हो और रंग लाल हो तो मस्तक सम्बन्धी रोग जैसे सिर दर्द, मृगी, मूर्च्छा इत्यादि होने का लक्षण है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

स्वास्थ—रेखा से मस्तक रेखा पे मिल जावे आगे न बढ़े तो शक्ति से बाहर कोई काम या व्यायाम नहीं करना चाहिये जिसके हाथ में हो उसे शरीर में थकान होने से पहले ही अपना काम उस समय तक छोड़ देना चाहिये जब तक गमी हुई शक्ति फिर वापिस न लौट आवे। स्वास्थय रेखा कहीं टूटी हो तो रोग अधिक समय तक रहने का लक्षण है या वह सर्वदा किसी रोग के शिकंजे ही में रहेगा।

दसवाँ परिच्छेद

भाग्य–रेखा

भाग्य—रेखा यह अत्यंत महत्व की रेखा है। इस रेखा को प्रारब्ध रेखा कहते हैं। धन रेखा, शनि रेखा, मध्य रेखा, और उर्ध्व रेखा कहते हैं। भाग्य-रेखा जीवन रेखा के बाद दूसरी मुख रेखा कहते है, मनुष्य की पहली चिन्ता जीने की रहती है। सो जोवन रेखा से ज्ञान होता है दुसरी चिन्ता भाग्य की है ये दोनों चिन्तायें साधारण है, जो सबको होती है, इस लिये इस रेखा का मनन विशेषरूप से विद्यार्थी को करना चाहिये ताकि संसार सबको उत्तर ठीक दिया जाय। यह जिस

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

समय प्रमाण की उमड़ी पाने उत्कृष्ट होती है उसी प्रकार धन सुख इत्यादि का भोगने वाला होता है। इस रेखा से भाग्योदय, धन, ज्ञान, राज्य सुख का ज्ञान होता है। यह रेखा छोटी सी भी हाथ में हो तो सुखदायक होता है, यदि अखण्ड, सरल सुन्दर हो तो महाशुभ फलदायक होती है इसमें सन्देह नहीं है। जिन पुरुषों के हाथ पर यह रेखा दिखाई देती है वे सुखी जिमीदार, श्रीमान् धनी विद्वान यानी बुद्धिमान ऐश्वर्यवान और सम्पन्न होते है। मध्यम स्थिति के लोगों के हाथ पर कम व वेश होती हैं। यह रेखा जिसके हाथ में न हो तो वह निर्धन होता है, कष्ट से परिश्रम करने वालों के हाथ पर तथा खेती ही करने वालों के हाथ पर अक्सर यह रेखा नहीं होती है।

हाथ से काम करने वाले जो लोग हैं उनके हाथ में काम करने के सबब से यह रेखा साफ नहीं देख पड़ती। यदि ऐसे लोग धनी हों तो समझना चाहिये कि हाथ से अधिक काम करते रहने के कारण हाथ का चपड़ा बड़ा हो जाने से यह रेखा होते हुये भी गायब होगई है। ऐसे लोगों का विचार उनके माथे के ऊपर की रेखा से या बांये हाथ की रेखा से यश कीर्ति के अन्य शुभ फल वाले चिन्ह देखने से समझ में आवेगी।

भाग्य रेखा के प्रारम्भ होने के मनुष्य चार स्थान है

१—मणिबन्ध रेखा के मध्य भाग से निकल कर शनी के पर्वत पर यानी मध्यमा का मूल अंगुली तक जाती है

२—जीवन रेखा से निकलती है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

३—चन्द्र पर्वत से निकलती है।

४—हथेली का मध्यभाग जो मंगल का स्थान है वहाँ से निकलती है।

१—मणि बन्ध से बीच की ओर जो रेखा जाती है उसे भाग्य रेखा कहते हैं। भाग्य रेखा मणिबन्ध से शनी तक भाग्य वानों की होती है इसे उर्ध्व रेखा भी कहते हैं यह अविच्छिन्न पूर्ण और स्पष्ट हो तो मान प्रतिष्ठा और सौभाग्य बढ़ाती है। वह बड़ा धार्मिक और परास्वी होता है। मणिबन्ध से चलकर शनी के स्थान तक जावे और रेखा सूर्य रेखा हो तो विद्वान् सम्पत्तिशाली और सुखी होना बताती है। जिस मनुष्य के हाथ में साफ सुथरी रेखा भाग्य रेखा नहीं बल्कि फीकी हो या न हो तो बल वीर्य हीन तथा दीन होता है। और मांस भक्षण में रुची नहीं होती। यदि भाग्य रेखा ऊपर को जा वे तो शुभ है और यदि नीचे को जावे तो अशुभ है।

यदि पितृ रेखा से उठ कर शनी स्थान को जाय तो सम्पूर्ण अच्छे गुणों से उन्नति को प्राप्त करता है सीधे स्वभाव वाला और कुटुम्ब को सुख देने व पाने वाला होता है। खास कर जिस वर्ष प्रमाण में जीवन रेखा से मिले तब भी उपरोक्त फल हो ता है। वह स्वयं उन्नति वाला वह सहासी हो ता है।

यदि चन्द्र स्थान से चले तो दूसरों के द्वारा उन्नति प्राप्त करता है और जहाँ कार्य करता हो नीचे से ऊपर तक के सभी लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। ऐसेमनुष्य स्वयम् उन्न ने बहुत

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कम करते हैं क्योंकि उन्नति उनकी दूसरों के ऊपर निर्भर होती है, और स्थायी रूप से जीवन का निर्वाह देर में होता है। ऐसे मनुष्य का शीघ्र ही जीवन स्वतंत्र रूप से व्यतीत करने लगते हैं और जीवन भर शरीर यात्रा के लिये कार्य करना होता है, ऐसी रेखा उन लोगों के जो किसी कारण से लोकप्रिय बन गये हों हाथ में पाई जाती हैं, भ्रमण करना भी इन्हें पसन्द होता है,

यदि भाग्य रेखा हाथ के मध्य से बुध के स्थान तक जावे तो शत्रज्ञान विज्ञान का उपदेशक होता हैं, हाथ के मध्य से सूर्य स्थान तक जावे तो शिल्प, कारीगरी, काव्य और नाटक में निपुण होता है, भाग्य रेखा के सहित अनामिका उगली का अग्र भाग चौकर हो तो काव्य शास्त्र में निपुण होता है। यदि अनामिका उँगली का अग्रभाग स्थूल हो तो नाटक की सुललित रचना में चतुर होता है।

यदि भाग्य रेखा गुरू के स्थान तक गई हो तो नीति परायण, प्रभुता सम्पन्न, क्षमावान् और बड़ी ऊची अभिलाषा वाला होता हैं। यदि भाग्य रेखा सीधी बुध के स्थान को जावे तो व्यापार में भारी कामयाबी होती हं, यदि सीधी शनि की अँगुली के तीसरे पोर तक हो तो उन्नति के बाद दुर्भाग्य की सूचना हैं। यदि पहली पोर पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो अति दुर्भाग्य वान् होने का चिन्ह है। यदि अनामिका मूल की तरफ जावे तो प्रसिद्ध कीर्ति वाला, धनवान, वाहनों से युक्त, व्यवसाथ में उन्नति करने वाला, पुत्र पौत्रादि सुख से युक्त, होता हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि कनिष्ठा की मूल की तरफ जावे तो विद्वान् परदेश में रहने वाला, श्रेष्ठ पुरुष होता है। लहराती हुई भाग्य रेखा से अनिश्चित जीवन होता है। ऐसी रेखा वाला कोई बड़ा काम न करेगा हृणना न होने से जीवन बिगाड़ देगा। भाग्य रेखा पर क्रास होने का चिन्ह हो तो यकायक हालत बदलती है। जिससे कष्ट होता है। यदि क्रास रेखा पर न हो उसके समीप हो तो किसी घनिष्ट मित्र सम्बधी से कष्ट होगा, जो रोगादिक आयु की रेखा से मालूम होता हो तो उनका पता भाग्य रेखा से मिलना चाहिये। करतल में जितनी ज्यादा ऊपर जाने वाली रेखायें हों उतने ही भाग से उसको धन प्राप्ती के उतने ही मार्ग होते हैं। स्त्री के दाहिने हाथ से पति के भाग्य का विचार करना चाहिये। यदि शुरू में टेढ़ी या जंजीर दार हो तो बालावस्था में प्रायः माता पिता के धन नाश होने की सूचना है। आगे सुधर गई हो तो सुख प्राप्त होगा। यदि हृदय रेखा पर रुक जावे तो प्रेम में बाधा जीविका प्रेग में रुकावट और बुरे हाथ में हृदय रोग का लक्षण है। यदि शुक्र के स्थान से निकले तो खानदान वालों के अधिकार में उसका जीवन व्यतीत होगा यह बात ध्यान में रखना चाहिये कि यदि भाग्य रेखा शुक्र के स्थान से निकले असर घर के लोगों का होगा। जैसे मां बाप स्त्री प्रेमिका इत्यादि और जब चन्द्र के स्थान से निकले तो बाहरी आदमी का प्रभाव होगा।

यदि हाथ के मध्य भाग से उठे तो तीस्वयम् बिना किसी सहायता के उन्नति होती है, यदि गुरु में दो शाखा हों तो गैर शख्स का प्रभाव होता है, और यदि एक शाखा शुक्र के स्थान को जावे तो लड़कपन में दूसरे के द्वारा लालन पालन

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

होता है। यदि भाग्य रेखा एक प्रभाविक रेखा से रुक जाये तो जिसके दोनों सिरों पर नक्षत्र हो तो उस व्यक्ति का अपने से बहुत उम्र वाले से विवाह होता है। और वह विशेष उम्र वाला मर जाता है, और अपने जोड़े के दूसरे प्राणी को दुःख दायी अवस्था में छोड़ देता है। यह फल है।

यदि भाग्य रेखा से एक शाखा नीचे को जाय तो हानि की सूचना है और ऊपर को शाखा हो उन्नति व अमन चैन की सूचना है। यदि टूटी हो तो दुर्भाग्य की सूचना है। यदि एक अच्छी शाखा आगे से यानी टूटने से पेशतर होवे तो जिन्दगी में बहतरी यानी फेर फार की सूचना है जिससे जीवन में परिवर्तन उन्नति के लिये होता है और बहुधा स्थान परिवतन और एक संस्था से दूसरे में जाना होता है। यदि कटी हो तो सांसारिक कष्ट या दुर्भाग्य घटनायें बताती हैं। यदि शनि स्थान पर कई छोटी २ रेखाओं से कटी हों तो जीवन के अन्त में दुःख देती है। भाग्य रेखा पर नक्षत्र कहीं पर हो तो उसका बुरा फल होता है लेकिन निज हो तो भाग्य की वृद्धि करती है। भाग्यवान पुरुष वह होता है।

भाग्य रेखा के शुरू में द्वीप हो तो वर्ण सङ्कर यानी जार जात होने का लक्षण है। यदि भाग्य रेखा टेढ़ी या दरारदार हो तो दरिद्रता और कष्ट की सूचना है। यदि भाग्य रेखा से मिले तो शुभ है और आनन्द दायक विवाह सूचक है जिसमें कोई एकाएक घटना के साथ और उस व्यक्ति की इच्छा प्रबल हुई होगी। यदि भाग्य रेखा को स्पर्श करती हो या मिल गई हो तो उस व्यक्ति के जीवन का पहला भाग गृहस्थी के बन्धनों में या ऐसे स्त्री या पुरुष के चक्करों में बीता

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

है जिन्होंने उसके जीवन के आदि काल में होने वाली उन्नति को रोक दिया है। ऐसी हालत में भाग्य रेखा जिस स्थान से जीवन रेखा को छोड़ कर ऊपर शनि की ओर उठेगी वहीं से उन्नति शुरू होगी।

यदि चन्द्र से कोई दूसरी रेखा जिसे प्रभाविक रेखा कहते हैं, भाग्य रेखा में मिले तो यह स्त्री या पुरुष जो जीवन पर अपना प्रभाव डालते हैं और कभी २ परिवर्तन कर देते हैं। यदि कोई प्रभाविक रेखा भाग्य रेखा के बराबर ऊपर की ओर जा रही हो तो वह किसी भाग्यवान् से मित्रता या विवाह सन्बन्ध बतलाती है। यदि हृदय रेखा में रुक जावे तो उन्नति के मार्ग में प्रेम में बाधक होगा और वह व्यक्ति प्रेम में आकर्षित हो कर उन्नति की ओर बढ़ने से रुक जावेगा। यदि भाग्य रेखा गर्दन के स्थान पर पहुच कर मार्ग बदल कर वृहस्पति के स्थान पर जावे तो वृद्धावस्था में इतनी अधिक उन्नति होगी कि वह व्यक्ति पूर्ण रूप से सन्तुष्ट होगा। यदि वह रेखा मस्तक रेखा से निकले तो समझ लेना चाहिये कि उस व्यक्ति की उन्नति उसकी बुद्धि और मस्तिष्क शक्ति के द्वारा होगी। यदि कोई रेखा भाग्य रेखा को काट कर जावे तो वह स्त्री या पुरुष होते हैं जो अपने प्रभाव से उस व्यक्ति को नुकसान या उन्नति में बाधा पहुचाते हैं। इस रेखा को अवरोध रेखा कहते हैं इस रेखा की यह खास बात होतीहै कि उसका फल बुरा होता है जिसकी पैदायश विरोध से होती है।

यदि भाग्य रेखा नीचे की ओर दो शाखाओं से फट गई हो तो एक शाखा चन्द्र दूसरी शुक्र स्थान को गई हो तो देश-

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

होता है। यदि भाग्य रेखा एक प्रभाविक रेखा से रुक जाये तो जिसके दोनों सिरों पर नक्षत्र हो तो उस व्यक्ति का अपने से बहुत उम्र वाले से विवाह होता है। और वह विशेष उम्र वाला मर जाता है, और अपने जोड़े के दूसरे प्राणी को दुःख दायी अवस्था में छोड़ देता है। यह फल है।

यदि भाग्य रेखा से एक शाखा नीचे को जाय तो हानि की सूचना है और ऊपर को शाखा हो उन्नति व अमन चैन की सूचना है। यदि टूटी हो तो दुर्भाग्य की सूचना है। यदि एक अच्छी शाखा आगे से यानी टूटने से पेशतर होवे तो जिन्दगी में बहतरी यानी फेर फार की सूचना है जिससे जीवन में परिवर्तन उन्नति के लिये होता है और बहुधा स्थान परिवर्तन और एक संस्था से दूसरे में जाना होता है। यदि कटी हो तो सांसारिक कष्ट या दुर्भाग्य घटनायें बताती हैं। यदि शनि स्थान पर कई छोटी २ रेखाओं से कटी हों तो जीवन के अन्त में दुःख देती है। भाग्य रेखा पर नक्षत्र कहीं पर हो तो उसका बुरा फल होता है लेकिन निज हो तो भाग्य की वृद्धि करती है। भाग्यवान पुरुष वह होता है।

भाग्य रेखा के शुरू में द्वीप हो तो वर्णसंकर यानी जार जात होने का लक्षण है। यदि भाग्य रेखा टेढ़ी या दरारदार हो तो दरिद्रता और कष्ट की सूचना है। यदि भाग्य रेखा से मिले तो शुभ है और आनन्द दायक विवाह सूचक है जिसमें कोई एकाएक घटना के साथ और उस व्यक्ति की इच्छा प्रबल हुई होगी। यदि भाग्य रेखा को स्पर्श करती हो या मिल गई हो तो उस व्यक्ति के जीवन का पहला भाग गृहस्थी के बन्धनों में या ऐसे स्त्री या पुरुष के चक्करों में बीता

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

है जिन्होंने उसके जीवन के आदि काल में होने वाली उन्नति को रोक दिया है। ऐसी हालत में भाग्य रेखा जिस स्थान से जीवन रेखा को छोड़ कर ऊपर शनि की ओर उठेगी वहीं से उन्नति शुरू होगी।

यदि चन्द्र से कोई दूसरी रेखा जिसे प्रभाविक रेखा कहते हैं, भाग्य रेखा में मिले तो यह स्त्री या पुरुष जो जीवन पर अपना प्रभाव डालते हैं और कभी २ परिवर्तन कर देते हैं। यदि कोई प्रभाविक रेखा भाग्य रेखा के बराबर ऊपर की ओर जा रही हो तो वह किसी भाग्यवान् से मित्रता या विवाह सम्बन्ध बतलाती है। यदि हृदय रेखा में रुक जावे तो उन्नति के मार्ग में प्रेम में बाधक होगा और वह व्यक्ति प्रेम में आकर्षित होकर उन्नति की ओर बढ़ने से रुक जावेगा। यदि भाग्य रेखा गर्दन के स्थान पर पहुच कर मार्ग बदल कर बृहस्पति के स्थान पर जावे तो वृद्धावस्था में इतनी अधिक उन्नति होगी कि वह व्यक्ति पूर्ण रूप से सन्तुष्ट होगा। यदि वह रेखा मस्तक रेखा से निकले तो समझ लेना चाहिये कि उस व्यक्ति की उन्नति उसकी बुद्धि और मस्तिष्क शक्ति के द्वारा होगी। यदि कोई रेखा भाग्य रेखा को काट कर जावे तो वह स्त्री या पुरुष होते हैं जो अपने प्रभाव से उस व्यक्ति को नुकसान या उन्नति में बाधा पहुचाते हैं। इस रेखा को अवरोध रेखा कहते हैं इस रेखा की यह खास बात होतीहै कि उसका फल बुरा होता है जिसकी पैदायश विरोध से होती है।

यदि भाग्य रेखा नीचे की ओर दो शाखाओं से कट गई हो तो एक शाखा चन्द्र दूसरी शुक्र स्थान को गई हो तो देश-

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

टन और समुद्र यात्रा का चिन्ह है। यदि भाग्य रेखा शुक्र के स्थान पर मिल कर भीतर से आरम्भ होती है तो उस व्यक्ति पर प्रेम का शासन होता है। यदि मस्तक रेखा निर्बल हो तो कामासक्त बना देती है और उन्नति में बाधा डाल देती है। जब प्रभाविक रेखा भाग्य रेखा को काटे और कुछ दूर तक ऊपर बढ़े तो यह सूचना है कि व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिये आकर्षित होगा और स्वार्थ सिद्धि होने के बाद त्याग देगा। श्री मान् मनुष्यों के हाथ पर चार रेखायें देख पड़ती हैं एक मणि बन्ध के मध्य भाग में, दूसरी आयु रेखा से तीसरी चन्द्र पर्वत पर चौथी सूर्य की रेखा मस्तक रेखा से सूर्य की पर्वत पर जाती है ऐसी रेखा वाला मनुष्य जमींदार, भाग्यवान, यशस्वी, सुखी, कीर्ति वाला संतती व सम्पति से युक्त होता है। यह रेखा भाग्य के फलों का पूर्ण विवरण बताती है।

भाग्य रेखा का वर्ष मान्—भाग्य रेखा और मातृ रेखा जहाँ मिलती है वहाँ मिलती है वहाँ ३५ वर्ष समझना चाहिये उसके नीचे का हिसाब उसी क्रम से करना चाहिये। मातृ रेखा से हृदय रेखा तक भाग्य रेखा का प्रमाण ५५ वर्ष और यहाँ से मध्यमा के मूल तक १०० वर्ष का मान होता है। जहाँ यह रेखा कटी हो उन वर्षों में अनुमान से कष्टादि कहना चाहिये। हाथ देखते २ वह आकृत हो जाती है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ग्यारवाँ परिच्छेद

सूर्य-रेखा

[आकृति नम्बर १५]

सूर्य रेखा बिना कटी गम्भीर और सुन्दर हो तो मनुष्य धर्मात्मा होता है और छिन्न भिन्न होना पापी मनुष्य के लक्षण है। सूर्य रेखा के बिना पूर्ण सफलता का होना कठिन है। उत्तम रेखा होने आकर्षण शक्ति, इज्जत, प्रसिद्ध, धन, सुख, इत्यादि की प्राप्ति होना है यह सम्पूर्ण रेखा को बदलने वाली इसको सम्पत्ति रेखा भी कहते हैं। भाग्य रेखा हाथ में न हो तो सूर्य रेखा धन रेखा का काम करती है।

यह रेखा भाग्य हीन, अविद्वान, अपयशी, निर्धन अप्रसिद्ध, मन्द पुरुष के हाथ में नही होती है जिसके हाथ में हो तो वह यशस्वी, तीव्र, बुद्धि, विद्वान् प्रसिद्ध धनवान, न्याय पूर्ण कला कुशल, राज दरबार में उत्तम इज्जत पाने वाला होता है। इस रेखा के रहते जो लोग दुःखी होते हैं उनकी उँगलिया टेढ़ी होंगी या करतल भाग गहरा होगा। इस रेखा का उद्गम् स्थान यह है कि जीवन रेखा से भाग्य रेखा से मंगल के स्थान से, चन्द्र के स्थान से हृदय रेखा से या अपने ही ग्रह स्थान पर होती है। यह ज्यादातर अनामिका के मूल से चलती है और उसे विद्या रेखा कहते हैं। जिस पुरुष के हाथ में एक

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

साफ सुथरी सूर्य रेखा हो वह निपुण विद्वान् और प्रसिद्ध होता है। यदि सूर्य रेखा दो तीन शाखाओं वाली तथा चमकीले रङ्ग वाली हो तो वह व्यक्ति अनेक कार्य करता है परन्तु आखरी काम में सिद्धि नहीं होती है। यदि सूर्य रेखा टूटी हो तो वह अनेक कार्य करने वाला हो परन्तु पूर्ण किसी में न हो उसकी सफलता आशातीत होती हैं।

जब वह जीवन रेखा से निकलती है तो मनुष्य शिल्प विद्या और नाटक इत्यादि में प्रसिद्धि प्राप्त करता है। जब यह चन्द्र स्थान से चले तो दूसरों के द्वारा उन्नति करके यश का भागी होता है। जब यह मंगल के स्थान से चले तो मनुष्य अपनी अति महनत मशक्कत से अनेक बाधाओं के बाद उन्नति करके भाग्यवान् होता है। जब यह हृदय रेखा से निकले तो अनेक गुणों से वृद्धावस्था में यश प्राप्त करता है। यदि दो सूर्य रेखा हो तो यश और धन की यकायक वृद्धि होती है। यदि मस्तक रेखा से शुरू हो तो मध्यमावस्था में दिमागी शक्ति के द्वारा उन्नति होती है। मणि बन्ध के पास से शुरू होने वाली सूर्य रेखा वाले को हर काम में सफलता प्राप्त होती है और शुभ फल की देने वाली है। यदि जीवन रेखा के भीतर से निकले तो यह धन या उन्नति प्रेम के द्वारा होती है। यदि भाग्य रेखा से निकलती हो तो यह निश्चय है कि भाग्योदय होगा और भाग्य की वृद्धि उस व्यक्ति की उसके महनत के कारण और सफलता उसकी बढ़ाई के कारण होगी। यदि इस पर द्वीप का चिन्ह हो तो उस वर्ष में बदनामी होने की सूचना है और कार्य में बाधा पड़ेगी। यह रेखा पुष्ट हो और ग्रहों के स्थान नीचे हों तो दूसरे को धन मिलता है। सूर्य रेखा को

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

काटने वाली रेखायें किसी व्यक्ति द्वारा डाह या व्याधा की सूचना है। यदि मङ्गल के स्थान से जावे तो पुरुष द्वारा और शुक्र के स्थान से निकल कर काटे तो स्त्री द्वारा डाह या बाधा होती है।

जब यह रेखा शुक्र के पर्वत के नींचे से निकल कर जीवन रेखा को छेदन करके आगे शनि के पर्वत पर जावे तो वह व्यक्ति लड़कपन में परतन्त्र हो और जिस वर्ष से यह जीवन रेखा को छेद कर ऊपर की ओर जाय तो उसी वर्ष मे स्वतंत्र होता है। यदि सूर्य रेखा जगह २ टूटी हो या हाथ पर बिलकुल न हो और सूर्य के पर्वत पर छोटी २ दो तीन खड़ी रेखा हो तो कार्य में यश नहीं मिलता और बराबर अपना रोजगार बदलता है। यह रेखा बांये हाथ में खण्डित हों तो जिऊ हानि होती है। सूर्य रेखा मङ्गल के मैदान से निकल कर सूर्य के पर्वत की तरफ जावे तो धन पाने में झगड़ा करने की सूचना है। भाग्य रेखा से निकल कर सूर्य रेखा से मिले तो रोजगार में साझा का होना बतलाती है। सूर्य रेखा से निकल कर बुध की तरफ जावे तो व्यवसाय से और शनि की ओर जाये तो जमीन वगैरह या खदानों से धन प्राप्त होगा। मस्तक रेखा और सूर्य रेखा दोनों उत्तम रीति से उठी हो तो विचार वान् होता है। इनके न होने से दरिद्री ही नहीं किन्तु बहुत खर्च करने वाला होता है। सूर्य रेखा पर तारा हो तो मित्र की ओर से लाभ होगा और क्रास हो तो एकाएक धन प्राप्त होता है।

सूर्य रेखा पर पथ का चिन्ह हो तो धन की हानि या दिवा लिये का या विवाद होने का लक्षण है। बांये हाथ में हो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तो कुटुम्ब की हानि और दाहिने में हो तो निज की हानि होती है। सूर्य रेखा प्रमाण से ज्यादा चौड़ी हो तो बड़े २ कामों में अपयश होता है और दरिद्र चिन्ता हीन, बुद्धि हीन होना है। यदि यह रेखा न हो तो कामयाबी का होना किसी कार्य में कठिन होना और दोनों हाथ में पूर्ण रूप से हो तो पूर्ण रूप से मनुष्य की कामयाबी होती है। यदि यह कई रेखाओं से जो आड़ी रेखायें हों कटी हों तो दिवालिये की हालत की सूचना है। यदि रेखा सीधे खोखले हाथों में हों और उंगलियां मुड़ी या बरी हों तो उस मनुष्य की शक्ति बुरे कामों में लगती है। या अन्त में दो तीन शाखा हों तो भिन्न रूप की आशायें जीवन में होती हैं। यदि विवाहिक रेखा से कटा हो तो बे मेल विवाह होने की सूचना है जिससे मनुष्य अपयश का भागी होता है। यदि कोई रेखा भाग्य रेखा से निकल कर दूसरी रेखा को छूले तो किसी कार्य में साझा लाभ दायक होगा और यदि काट कर पार हो जावे तो नुकासन होगा। अन्य स्थानों में जहाँ कहीं छुपे तो वैसा ही गुण कहना चाहिये परन्तु काट कर आगे बढ़ना उस कार्य में हानि की निशानी है।

यदि शनि के स्थान पर कोई आड़ी रेखा आजावे और काटे तो द्रव्याभाव के कारण उन्नति में बाधा पड़ेगी। यदि बुध के स्थान से ऐसी हीं रेखा आवे तो चंचल स्वभाव के कारण हानि यदि मङ्गल से आवे तो शत्रुओं द्वारा अथवा अति उत्साह के कारण हानि होगी। दो सूर्य रेखा बराबर सीधी यानि दो हरी हों तो एक से ज्यादा कार्य के जरिये से धन प्राप्त होता है और यकायक प्रसिद्ध देती है। यदि प्रभाविक रेखा कुछ दूर जावे तो सम्पति देती है। यदि यह चन्द्र स्थान से निकले तो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कुल असंभव है और उसका जीवन अन्धकार मय होगा। वह अपने कार्यों का सफलता अपने जीवन में नही देख सकेगा इस रेखा का उत्तम रूप से होना भाग्य को चमका देना है। और सोने में सुगंध का काम करता है। बिना इस रेखा के सुख और आनन्द जीवन में नही होता। वह जीवन उसी तरह जैसे सूर्य के बिना पृथ्वी यह जिनके हाथ में उत्तम होती है उनमें आकर्षण शक्ति और अपना प्रभाव दूसरों पर अधिक डालती है। यह अगर अच्छी होती है तो निर्बल भाग्य या मस्तक रेखा की कमी को पूरा कर देती है।

बारहवां अध्याय।

विवाह—रेखा

[आकृति नम्बर १७]

छोटी रेखाओं में विवाह रेखायें मुख्य हैं। यह प्रश्न ज्यादातर नवयुवकों में उठता है और इसके जानने की उन्हें तीव्र अभिलाषा रहती है कि स्त्री कब प्राप्त होगी, वह सुन्दर होगी या कुरूप, अच्छे स्वभाव की होगी या कर्कशा होगी गरीब घर ने की होगी या अमीर व कुलीन घर की होगी और प्रेम रहेगा या नहीं इत्यादि बातें जानने की प्रबल इच्छायें होती

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

किसी सम्बन्धी धन से मिलता है। यदि अनामिका उगली के बराबर हो और सूर्य रेखा बलवान हो तो उस व्यक्ति में सट्टा या जुआ खेलने की प्रवति अधिक पाई जाती है और धन इकट्ठा करने की प्रबल इच्छा होती है।

यदि सूर्य रेखा अन्त में जिव्हाकार हो या तीन शाखा वाली त्रिशल रूप हो तो कम लाभ दायक है। कारण यह है, कि ऐसे व्यक्ति एकाग्र चित नहीं होते उनकी शक्तिघट जाती है। ऐसे लोगों को चाहिये कि अपनी शक्ति दो तीन कार्य की तरफ न लगायें बल्कि एक ही कार्य में लगायें। सूर्य रेखा पर तारे का चिन्ह प्रतिष्ठा उन्नति और सफलता देती है। सूर्य रेखा भाग्य की पूर्ण रूप से सबित करने वाली होती है।

यदि सूर्य रेखा में से कोई शाखा दूसरे ग्रह स्थान को जावे तो यह उन्नति उसी स्थान के गुणों के अनुसार होगी जैसे बुध स्थान को जावे तो व्यापार, विज्ञान साहित्य तथा अन्य व्यवहारिक कार्यों में सफलता देगा। यदि अपने ही स्थान को जावे तो यश कीर्ति, सर्व जनिक जीवन में सफलता यदि शनि स्थान को जावे तो वह भाग्य को उठावेगी, यदि गुरू के स्थान को जावे तो दूसरों पर अधिकार और शासन करने में उन्नति और यश को बढ़ायेगी। यदि सर्य की उंगली लम्बी हो बरी या टेढ़ी हो तो ऐसा व्यक्ति हर प्रकार से धन पैदा करने की कोशिश करता है। यह चिन्ह चोरों के या अन्य गुनहगारों के हाथ में पाया जाता है।

यदि यह रेखा बिलकुल न हो तो वह व्यक्ति कैसा ही होशियार हो या गुणी हो उसकी प्रसिद्ध या कामयाबी बिल-

CC-0. Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—४७

विवाह रेखाओं की स्थिति तथा उनके सम्पर्क में आने वाली रेखाओं के कारण पैदा होने वाली स्थितियों के कारण जो समस्यायें उत्पन्न होती है। उनके जानने को ऊपर वाले चित्र का पूर्ण ज्ञान बहुत ही जरूरी।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—१६

सामने वालेपृष्ट पर इन रेखाओं से उत्पन्न होंने वाली स्थितियों का ज्ञान करने के लिये अति आवश्यक है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—१६

विभिन्न रेखाओं का एक दूसरे के सम्पर्क में आना किस तरह असर दिखलाता है। इसकी जानकारी के लिये पूरी तरह जानकारी रखना अति आवश्यक है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—२०

हथेली के निचले भाग रेखाओं का जीवन पर क्या प्रभाव होता है। यह जानने के लिये इस चित्र को ध्यान से देखो।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—२१

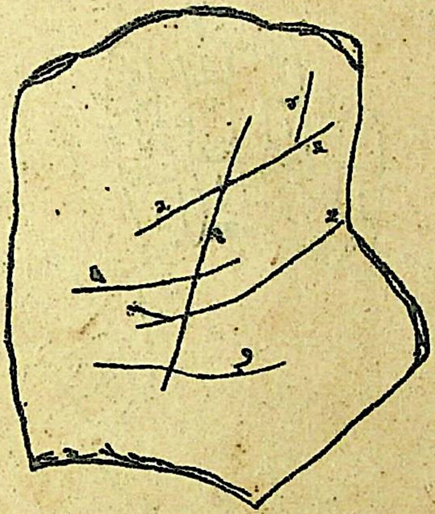

हथेली पर की रेखाओं का ज्ञान प्राप्त करना अति आवश्यक है। इनके ज्ञान के लिये इस चित्र को देखकर रेखाओं का ज्ञान करो।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—२२

मणिबंध रेखाओं का हाल और उनकी स्थिति से भी हाल जाने जा सकते हैं। उनकी जानकारी के लिये इस चित्र को देख रेख करना जरूरी है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—२३

विभिन्न रेखायें एक दूसरे से मिलने पर क्या असर रखती है। उनका ज्ञान करने के लिये इनको जानना आवश्यक है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—२४

यदि रेखाओं की स्थिति इस प्रकार हो तो उनका क्या परिणाम होता है। यह जानना लाभदायक है और इस चित्र को देखकर उनके ज्ञान का पता भी लगाना चाहिये।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हैं। एक पुरुष बड़ी छान बीन के साथ किसी जवान लड़की से शादी करता है अपने मरने के दिन तक ही, सुख का भाग्य का हंसने व रोने का साथी बनाना है। यदि उसके जीवन में अधिक उत्कंठा उस साथी के बारे में जानना चाहता है तो वह स्वभाविक है। उसको अपनी स्त्री के बारे में पहले ही से थोड़ा बहुत जान लेना बहुत है।

जो नारी अच्छे लक्षणों करके युक्त हो तो सुचरित्रों करके थोड़ी उम्र वाले पति को दीर्घायू करती है और दुष्ट लक्षण तथा कुचरित्रों वाली हो तो दीर्घायू मनुष्यों को भी अल्प आयू करती है। इसलिये सुलक्षण स्त्री को बुद्धिमान मनुष्य चाहे, लक्षणों की परीक्षा करके दुलक्षण कन्या को त्याग देना चाहिये उसी प्रकार कन्या को भी अधिकार है कि दुलक्षण वर हो तो उसको त्याग देवे ताकि उसका जीवन सुख मय रहे इसलिये छत्र रेखाओं में प्रथम् इनका विचार करना उचित है।

कनिष्ठा उँगली और आयू रेखा के बीच में जितनी रेखा हों उतनी ही स्त्री अथवा विवाह होगा स्त्री के होय तो उतने ही पुरुष जानना। कनिष्ठा उँगली और हृदय रेखा के बीच में छोटी गहरी रेखा बुध के स्थान को आती है इसे विवाह रेखा कहते हैं। शेष छोटी २ रेखायें जो हों वे प्रेम सम्बन्धी समझी जावे तो उत्तम होगा। गहरी लंबी रेखायें विवाह होने की सूचना है और छोटी कमज़ोर रेखायें विवाह की विबात लगा कर सवंध न होने की या प्रेमी स्त्रियां उपपत्नि की सूचना है। बुध के पर्वत को उलंघन न करने वाली रेखायें उपपत्न-

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

न्यादि समझना चाहिये। विवाह रेखा जितनी गहरी छेद रहित होगी उतने ही अनुमान से स्त्री का प्रेम टिकाऊ होता है। विवाह रेखा सीधी गहरी लम्बी और स्पष्ट हो तो कोई अशुभ चिन्ह न हो तो उस मनुष्य की स्त्री दीर्घायु, सुन्दर, पतिव्रता और प्रेमी भी होगी।

यदि यह रेखा ऊपर की ओर मुड़ी हो, तो विवाह नहीं होता। यदि नीचे की ओर झुक रही हो या हृदय रेखा को छू रही हो तो जिसके साथ विवाह होगा उसकी मृत्यु होने की सूचना है। पहली हालत में अच्छी उम्र पर मृत्यु होती है, और दूसरी हालत में एकाएक ग्रह आफत आती है। इन रेखाओं के अग्रभाग यदि नीचे की ओर झुक कर हृदय रेखा को स्पर्श करें उतने ही विवाहित स्त्रियों में उसका भरी समझना चाहिये। यदि यही भाग्य स्त्री के हाथ में हो तो पति का कारण समझना चाहिये।

विवाह रेखा में द्वीप का नम्बर चिन्ह आपस में पति-पत्नी वियोग होने का सूचक है। यदि वह आरम्भ में हो तो विवाह होने पर वियोग होता है यदि अन्त में हो तो अन्तिम अवस्था में वियोग होने का लक्षण है और बीच में हो तो आपस में झगड़ा होता है। यदि टूटी रेखा हो तो अधिकारी के जोड़े के मरने की सूचना है।

यदि इस रेखा पर तारा हो तो स्त्री की अकस्मात मृत्यु होती है। और यदि स्त्री के हाथ में हो तो वह विधवा होती है। यदि यह रेखा दो शाखा वाली हो और एक शाखा हृदय रेखा को जावे अथवा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

वैवाहिक रेखा शुक्र के स्थान पर हो तो तलाक हो जाने की सूचना है। यदि सूर्य रेखा से मिले तो प्रसिद्ध और धनी के साथ विवाह होने की सूचना है और यदि सूर्य रेखा को काट कर आगे जाय तो या नीचे गिरे तो वह व्यक्ति विवाह करके अपने स्थान से भ्रष्ट होगा और बदनाम होगा। यदि इस रेखा से कुछ बारीक २ रेखायें नीचे गिर रही हों तो जिसके हाथ में हो उसके जोड़े के लिये रोग सूचक है यानि स्त्री को बार-म्बार पीड़ा व दुःख सहना होगा और अन्त में मरण होगा। यदि यह पतली हो तो प्रेम में फँस जाने की सूचना है और साथ २ विवाह रेखा के पास कोई पतली रेखा हो तो विवाह होजाने के बाद किसी अन्य स्त्री के प्रेम में फँस जाने का भय है। यदि कोई शाखा इसमें से हृदय रेखा को जावे तो उसके विवाहित व्यक्ति की बीमारी की सूचना है। यदि कोई खड़ी रेखा वैवाहिक रेखा को काटे तो विवाह में अड़चन पड़ने की सूचना है। विवाह रेखा होने से भी अक्सर विवाह नहीं होता है ऐसे पुरुषों के हाथ में छोटी २ रेखा होती है और उनकी लम्बाई हाथ के बाहर पृष्ट भाग से ज्यादा बढ़ होती है ऐसे लोगों का विवाह नही होता परन्तु मन माफिक स्त्रियों से सम्बन्ध हो जाता है स्त्री रेखा के भीतर को ओर छोटी २ शाखायें लटकती हो तो स्त्री को बराबर पीड़ा व दुःख सहना होगा। जिसकी कनिष्ठा उँगली के प्रथम पोर पर क्रास होता है तो वह विवाह नहीं करता है। यदि विवाह रेखा से शाखा निकली हो और हृदय रेखा में न मिली हो तो पति और स्त्री हर रोज लड़ते रहेंगे लेकिन इकट्ठा रहकर पति-पत्नि का सुख

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अवश्य भोगेंगे ऐसी रेखा यदि स्त्री के हाथ में हो तो समझो कि पति कुचाली और शराबी है।

वह रेखायें जो मङ्गल के पर्वत से निकल कर ब्याह रेखा को ऊपर की तरफ जावे तो किसी व्यक्ति द्वारा विवाह में बाधा और झगड़े की सूचना है। और जब शुक्र की तरफ से ऐसी रेखा आवे तो परेशानी को सूचना है। परन्तु बदला लेने की संभावना नहीं होती विवाह होगया या होगा इस बात का निर्णय करना कठिन है वह केवल अनुभव व अन्तर ज्ञान के ज़रिये मालूम होता है। यह केवल वही हस्त-रेखा विशारद बता सकता है जो सत्य भाषण करता है मिथ्या भाषण से सदा अपने को बचाता है। इस प्रश्न को हल करने के लिये नीचे लिखे लक्षणों की सहायता जरूरी है—

१—एक रेखा चन्द्र के पर्बत से निकल कर भाग्य रेखा से मिले।

२—जब बुध के पर्वत की रेखा बिला किसी रेखा से काटे या अन्य दोष रहित सीधी हो।

३—जब जीवन-रेखा के भीतर की प्रभाविक रेखा सीधी, सरल दोष रहित होगी।

४—गुरू के पर्बत पर क्रास का चिन्ह देखना चाहिये।

यदि उपरोक्त लक्षण न मिले तो समझना चाहिये कि विवाह नहीं हुआ और न जीवन में किसी स्त्री का प्रभाव ही

CC-0:Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पड़ा है। पुरुष के स्त्री रेखा का विचार बांये हाथ की रेखा पर से और स्त्री के पति का विचार स्त्री की दाहिने हाथ पर की रेखा से करना चाहिये। पुरुषों के बांये हाथ में हृदय रेखा से स्त्रियों का विचार करना और इस रेखा में दाहिने तरफ शाखा यानि पल्लव हो तो सुख और बांये तरफ पल्लव हो तो दुःख कहना चाहिये। फलको बहुत ही सोच विचार कर कहना चाहिये।

यदि विवाह रेखा न हो तो प्रभाविक रेखाओं से विवाह सम्बन्ध निश्चय करना चाहिये। यह रेखा चन्द्र स्थान की तरफ से आकर भाग्य रेखा में मिलती हैं। और दूसरे किस्म की प्रभाविक रेखा शुक्र के स्थान पर जीवन रेखा के पास उसके सामान्तर जाती है। इसलिये विवाह सम्बन्धी सवाल का जवाब देते समय तीनों रेखाओं पर ध्यान देकर उत्तर देना चाहिये नहीं तो विवाह के बारे में अक्सर गलती हो जाती है। इसमें हस्त रेखा देखने वाले को धोखा होता है और ठीक उत्तर देना कठिन हो जाता है। यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि प्रभाविक रेखा वाले संबन्ध ज्यादातर प्रेम को ही लक्ष्य बनाते हैं। जब प्रभाविक रेखा भाग्य रेखा को काट कर आगे निकलती हैं तो सम्बन्ध टूट जाने का लक्षण है।

यदि शुक्र के स्थान वाली रेखा प्रभाविक रेखा जीवन रेखा के पास हो तो स्त्री पुरुष में मतभेद नहीं होता है प्रेम पूर्ण व बेउज्र होता है। यदि यह रेखा जीवन रेखा से दूर पर हो तो कह देना चाहिये कि तुम दोनों में मतभेद रहता है,

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यानी जो कुछ तुम कहते हो वह तुम्हारी स्त्री नहीं मानती है, जो वह कहती है सो तुम नहीं मानते हो। इस तरह का मत-भेद जीव-पर्यन्त रहेगा यह निश्चय है। अक्सर लोग इस बात को और लोगों के सामने पूछने पर छिपाते हैं इसलिये तुरन्त समझ लेना चाहिये कि वह छुपाते हैं। उनसे घुमा फिरा कर सवाल करना चाहिये ताकि वह यह न समझ लें कि स्त्री के पटने या न पटने की बात है, सिर्फ मतभेद ही कहना चाहिये जो कि अधिक बढ़ने से झगड़ा कहा जाता है।

यदि प्रभाविक या भाग्य-रेखा के मिलने के स्थान से रेखा सूर्य के स्थान की तरफ जावे तो सुख मय विवाह होगा, धन, सम्मान प्राप्त होगा। यदि प्रभाविक रेखा भाग्य-रेखा के पास होकर सीधी ऊपर उठे तो और भी अधिक श्रेष्ठ विवाह होगा और अवश्य ही होना चाहिये।

प्रभाविक रेखा चन्द्र स्थान पर जाकर सीधी चले फिर अचानक घूम कर भाग्य-रेखा से मिले तो विवाह का कारण प्रेम पालन और अक्सर काम-वासना को तृप्त करना होगा।

यदि भाग्य-रेखा प्रभाविक रेखा के मिलनेके बाद हलकी लहरदार द्वीपयुक्त या टूट गई हो तो इस प्रकार का विवाह सबध अवनीति और दुर्भाग्य का लक्षण है और यदि भाग्य रेखा बलवान दिखाई पड़े तो विवाह या संबंध अच्छा समझना चाहिये।

यदि यह दोनों रेखाये हाथों में एकसी साफ दिखाई दें तो दोनों ओर समान प्रेम समझना चाहिये। यदि बांये हाथमें ज्यादा गहरी और सीधे हाथ में मध्यम हो तो जिसके हाथ में

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हो उसके ऊपर प्रभाव डालने वाले की तरफ ज्यादा प्रेम पाया जायगा। यदि विवाह रेखा जिव्हाकार हो और उसमें से कोई रेखा हृदय रेखा पर जा रही है और हृदय रेखा भी मस्तक रेखा पर मिली हो तो अत्यन्त दुखदाई विवाह होता है। ऐसी हालत में आत्म हत्या करके जैसे आग में जलकर जल में डूब कर विष खाकर प्राण दे डालना इत्यादि विविध प्रकार के कांड देकर प्राण दे सकते हैं।

अङ्गुष्ट मूल से एक रेखा निकल कर कनिष्ठा उँगली तक गई हो तो पति का खून करने वाली होती है। ऐसी स्त्री से विवाह करने से बहुत अनिष्ट हो सकती है।

विवाह का समय जानने के लिये विवाह रेखा जितनी ही अधिक कनिष्टा कीअंगुली के पास हृदय रेखा से दूर हो उतना ही शीघ्र और कम आयु में विवाह होता है। विवाह रेखा हृदय रेखा के करीब हो तो १६ वर्ष के भीतर यदि बीच में हो तो २५ वर्ष के करीब यदि और ऊपर हो तो ४० के पहले यदि उंगली के करीब हो तो ५५ वर्ष की आयु तक विवाह सम्बन्ध होता है।

तर्जनी उंगली के मूल में जो टेढ़ी रेखा स्पष्ट हो वो दीक्षा रेखा कहलाती है और इस रेखा से ब्याह नहीं होता है बल्कि मित्रों की संख्या बढ़ती है। जिन महात्मा या योगि योगिनी के यह रेखा हो उनके हाथ में स्त्री रेखा या पति देने वाली रेखा हो तो उनके भक्त या शिष्य होंगे और योगियों के दक्षिण हाथ से ज्ञान, यात्रा, तप, शौच और गुरु के सुख का विचार करना चाहिये।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

स्त्री के दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली के मूल्य में जो पति सेवा हो और इसमें से जितनी शाखा निकली हों उतने ही सपत्नि होगी। अंगुष्ठ मूल और जीवन रेखा के बीच में जितनी अर्थात् शुक्र पर्वत के नीचे जितनी आड़ी रेखायें हों उतने ही उपपत्नियों से भोग रहा होगा। और इन रेखाओं में जितनी कटी टूटी हों उतने ही स्त्रियों में कष्ट होगा।

यदि विवाह रेखा फांकदार हो तो दोनों व्यक्तियों के अलग २ रहने का लक्षण है यदि फांकदार रेखा हृदय रेखा पर जावे तो न्यायालय से तलाक या वियोग का लक्षण है। जब एक विवाह रेखा विवाहिक रेखा को काटे तो विवाह में बाधा पड़ेगी और विवाह की रेखा सुन्दर सरल हो तो बाधा के बाद विवाह हो जायगा।

जब जीवन रेखा के भीतर की प्रभाविक रेखा द्वीप युक्त हो या फांकदार हो तो वियोग होने की सूचना है। अन्य लक्षणों को मिलाकर फल कहना चाहिये।

———

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तेरहवां अध्याय।

प्रभाविक रेखायें

कोई रेखा शुक्र के स्थान से शनि के पर्वत पर हो और दो फाँक की हो तो दुर्भाग्य युक्त विवाह हो। सीधी रेखा शुक्र स्थान से सूर्य्य के स्थान तक हो तो नाम और धन प्राप्त हो, यदि यह रेखा टेढ़ी लहरदार हो तो उपरोक्त कार्य में बाधा होवे।

जब प्रभाविक रेखा में द्वीप हो तो (आकृति १६ नं०) तो प्रेमी का दुराचरण विवाह में बाधक होगा। जब बुध की रेखा यानी विवाह रेखा हृदय रेखा पर गिरे तो विधवा होने की सूचना है। यदि एक गहरी रेखा शुक्र के स्थान से बुध के स्थान तक हो और सब प्रधान रेखाओं को काटता है तो दुर्भाग्य सूचक प्रेम होता है। यदि एक रेखा शुक्र के स्थान से भाग्य-रेखा को काटती हुई चन्द्र के स्थान को जावे तो दुर्भाग्य सूचक है। जो किसी अन्य व्यक्ति द्वारा हो। स्त्री हो तो पुरुष और पुरुष हो तो स्त्री से नुकसान होता है। एक रेखा शुक्र के स्थान से भी बन्द जीवन और भाग्य रेखा को काटे तो कोई सम्बन्धी सांसारिक कामों में बाधा करेगा। एक रेखा शुक्र स्थान से जीवन-रेखा और हृदय-रेखा को काटे तो कोई संबंधी प्रेम के भाग में बाधा डालेगा। एक रेखा जिसके आदि में द्वीप हो और शुक्र के स्थान से चले और बुध के स्थान में समाप्त हो तो स्त्री झगड़ा हो और कुछ अर्से तक काट प्रद हो।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दो रेखायें शुक्र के स्थान से भाग्य रेखा में मिलें जहाँ नक्षत्र हो तो दो मनुष्यों से एक ही समय में प्रेम होने की सूचना है। शुक्र के पर्वत के भीतर की रेखायें स्त्रियों का प्रभाव पुरुष पर और पुरुष का प्रभाव स्त्रियों पर जाहिर करती हैं और जैसी छोटी बड़ी होती हैं वैसी ही कम बेश प्रेम होने का लक्षण है। यदि रेखा भाग्य-रेखा के पास पहुँच कर रुक जावे, उससे न मिले तो सम्बन्ध टूटने का लक्षण है।

जब द्वीप बीच में हो कष्ट और वियोग विवाह होने के बाद मध्य आयु में होगा और जब शुरू में द्वीप होगा तो ब्याह देर में होगा और ब्याह के बाद दोनों प्राणी अलहदार रहेंगे और जब द्वीप आखिर में होगा तो ब्याह के अन्त में कष्ट और वियोग होगा। जब ब्याह की रेखा फाँकदार हो तो दोनों अलहिदा २ रहेंगे। जब एक शाखा फाँक की हृदय रेखा के नीचे जाय तो न्याय लय से वियोग होगा और जब मेजक के मैदान को जाय तो तलाक होगा। जब प्रभाविक रेखा का अन्त रस द्वीप पर हो तो उस व्यक्ति का प्रेमी कष्ट यानी बदनामी और बेइज्जती पायेगा। शुक्र के पर्वत पर से रेखा निकल कर आयु तथा मस्तक रेखा को पार कर मङ्गल के पर्वत पर जावे तो उस व्यक्ति को स्त्री का विवाह कोर्ट यानी कचहरी से होगा और अलग हो जायेगा।

शुक्र के पर्वत से रेखा निकल कर मस्तक-रेखामें मिलती हो तो उसका इच्छित से विवाह होगा और सबकी सहायता होगी। इस प्रकार की जितनी रेखायें शुक्र पर से निकल कर आयु-रेखा से मिलेंगी उतने ही विवाह होंगे। खासकर मस्तक या आयु रेखा को मिलने वाली शुक्र के पर्वत पर से निकली

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हुई आड़ी रेखा विवाह कारक होती है। यही सच्ची विवाह-रेखा या विवाहित स्त्रियों की देने वाली समझनी चाहिये।

शुक्र के ऊपर के भाग याने मङ्गल पर्वत से रेखा निकल कर जीवन रेखा में मिले तो १२ वर्ष के पहिले विवाह की सूचना है। यही रेखा जीवन-रेखा के जिस वर्ष में मिले उसी वर्ष विवाह होता है।

स्त्री-पुरुष का प्रेम।

मस्तक-रेखा से कोई शाखा निकल कर या मस्तक-रेखा जीवन-रेखा से मिलें तो स्त्री-पुरुष को चाहती है।

जीवन-रेखा मस्तक-रेखा से मिले तो पुरुष स्त्री को चाहता है। उपरोक्त दोनों रेखायें आपस में मिली हों और सुन्दर साफ हों तो आपस में अधिक प्रेम होता है।

उपरोक्त दोनों रेखा अलग २ हों तो दोनों स्त्री-पुरुषों में प्रेम अक्सर नहीं होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar . Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चौदहवां अध्याय।

संतान-रेखा.

अँगुष्ठमूल में सन्तान-रेखा होती है। यहाँ जितनी रेखा होती हैं उतनी सन्तान होती है, पर शुद्ध गम्भीर रेखा से सन्तान दीर्घजीवी और कटी फीकी रेखा से अल्पायु सन्तान का ज्ञान होता है। गहरी से पुत्र उथली से कन्या का बोध होता है। अँगुष्ठमूल में यव का चिह्न होने से सन्तान का सुख पूर्ण होता है।

भाग्य-रेखा दोषयुक्त हो तो सन्तान द्वारा अनेक-अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं और भाग्य-रेखा शुद्ध हो तो मनुष्य पुत्र पौत्रादि से युक्त और सुखी रहता है।

यह रेखा विवाह-रेखा के ऊपर सीधी खड़ी होती है, किसी-किसी के मत से करम-स्थान में भ्रातृ-भागनी सूचक रेखाओं को भी सन्तान-रेखा कहते हैं। अँगुष्ठ के बीच स्थान में रहने वाली रेखाओं को भी सन्तान-रेखा कहते हैं। सीधी सुन्दर गहरी रेखा या रेखायें पुत्र और कुछ झुकी हुई टेढ़ी रेखायें कन्यायें होती हैं।

यदि सन्तान-रेखा प्रमाण से अधिक गहरी, लाल या मैले रङ्ग की हो तो सन्तान अधिक जानना।

यदि बुध के पर्वत स्थान पर सन्तान रेखा न हो तो हृदय के नीचे मङ्गल के पर्वत पर बाहर से भीतर आई हुई

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar .Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आड़ी रेखायें जो आत्म- रेखा और मस्तक-रेखा के बीच में हों उन्हें मङ्गल के पर्वत पर देखना चाहिये।

इन दोनों जगह रेखा न हों तो हृदय-रेखा के मूल में एक दो शाखायें निकल कर मङ्गल के पर्वत पर निकलती हैं। देखो व्याह की रेखा (आकृति १८ नं० २) हृदय-रेखा के नीचे ऊपर बारीक रेखायें निकलना भी सन्तानदायक समझना चाहिये।

सन्तान सम्बन्धी मुख्य विचार करना हो तो स्त्री-पुरुष के दोनों हाथ देख कर निश्चय करना चाहिये। उपरोक्त प्रकार की रेखायें हों तो निस्सन्देह सन्तान होगी।

बुध के पर्वत पर बाहर साफ रेखायें हों तो शीघ्र संतान होगी और अन्दर दीख पड़े तो ३० वर्ष की उम्र के बाद होगी।

अंगुष्ठ के मूल में जितनी बड़ी मोटी, लम्बी, साफ रेखायें होवें तो वे पुत्र की होती हैं और जितनी पतली छोटी होती हैं वे कन्यायें हैं। इनमें कटी, टूटी, फूटी, छिन्न भिन्न अल्पायु के होते हैं।

अंगुष्ठ के मूल में जितने यव बड़े हों उतने पुत्र, जितनी छोटी हो उतनी ही कन्यायें होती हैं।

कोई आश्चर्य मणिबन्ध से आयु-रेखा के बीच के स्थान में जो रेखायें हों उनसे पुत्र-पुत्री लिखते हैं और अंगूठे के मूल में जो रेखा हो उनसे भाई-बहिन लिखते हैं। किन्तु मेरा अनु-

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

भव तो अंगुष्ठ मूल में सन्तान और मणिबन्ध से आयु-रेखा के बीच तक भाई-बहिन जानना चाहिये।

सुन्दर स्पष्ट रेखायें स्वास्थ्यपूर्ण और टेढ़ी सीधी या लहरदार रेखायें सन्तान के रोगी होने का लक्षण है।

अगर रेखा के सिर द्वीप हो और आगे रेखा साफ हो तो यह सूचित करती है कि सन्तान रोगी होकर आगे तन्दुरुस्त हो जायगी।

यदि द्वीप आखिर में हो तो सन्तान की मृत्यु की सूचना है।

अति छोटी रेखा या टूटी रेखा गर्भ-मंडल की सूचना है। शुक्र के उच्च स्थान से भी सन्तान का ज्ञान होता है। सीधी स्पष्ट पुत्र सूचक, टेढ़ी पतली पुत्री सूचक। अल्प टूटी हुई रेखायें सन्तान के नाश की सूचक हैं।

यदि कोई सन्तान रेखा बाकी सन्तान रेखाओं से ज्यादा साफ और बलवान हों तो वह सन्तान दूसरी सन्तानों से शुभ समझना चाहिये। विवाह रेखा पर सन्तान रेखा को हथेली के बाहर से भीतर की ओर गिनना चाहिये।

सन्तान रेखा पुरुषों के हाथ की अपेक्षा स्त्रियों के हाथ में ज्यादा देख पड़ती हैं और ये रेखायें अंगुष्ठ के मूल में शुक्र पर्वत पर बाहर से भीतर आती हैं, लेकिन यही रेखा भीतर न होकर पीछे बाहर की ओर गई हों तो सन्तान नहीं होती,

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बल्कि यह बतलाती है कि यह स्त्री स्वेच्छाचारी है, किसी पुरुष से प्रेम करती है। लेकिन अक्सर यह पाया गया है कि कन्या-रेखा पुरुष के हाथ में और पुत्र-रेखा स्त्री के हाथ में ज्यादा दिखाई देती है। स्त्रियां के हाथ में तर्जनी तथा अनामिका के तृतीय पर्व में सीधी और स्पष्ट रेखा हों तो पुत्र और सूक्ष्म तथा टेढ़ी होने से कन्या की उत्पत्ति जानना। हथेली में लाल रेखाओं के होने पर तो स्त्रियों को सन्तानयुक्त कहना चाहिये।

यदि पिता का प्रेम अधिक न हो तो अक्सर सन्तान-रेखा उस व्यक्ति के हाथ में नहीं होती है।

सन्तान रेखायें यदि दोषयुक्त हों और बुध व गुरु स्थान उच्च हों तथा मनोहर हों तो रक्षक सन्तान का सुख जानना। इन ग्रहों के स्थान नीचे हों तो गोद लेने में बाधा पड़ती है। शान्ति करने से बाधा निवृत्त होती है।

हाथ में कुंडल, अंकुश, कमल, घट, मत्स्य, हल इत्यादि रेखा हो तो भी सन्तान योग्य जानना। चन्द्रमाका क्षेत्र मनोहर और शुभ रेखा युक्त तथा नख रक्तवर्ण हों तो भी सन्तानीय कहना चाहिये।

सन्तान सम्बन्धी विषय बड़ा कठिन है और यह प्रश्न ज्यादा पूछा जाता है। इससे इसका उत्तर देते समय सावधान होकर खूब सोच कर उत्तर देना चाहिये। इस प्रश्न का उत्तर अक्सर गलत हो जाया करता है। यह एक सूक्ष्म विषय है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

इसके बारे में विद्या के आचार्यों में भी मतभेद है। इस लिये यह बात अनुभव द्वारा जानने के लिये छोड़ता हूँ।

"भाई-बहिन"

जितनी रेखा पहुंचे के और आयु-रेखा के बीच में मोटी दीखें उतनी ही गिनती के भाई कहे जांय फिर वही रेखा जो पतली हो तो बहिने हों।

पन्द्रहवाँ अध्याय

"मणिबन्ध"

मणिबन्ध मजबूत हो चिकने सन्धि वाला अर्थात् चिकने जोड़ वाला जो न दिखाई पड़ता हो वह शुभ फलदायक होता है और जिसका मणिबंध ढीला हो, हिलने से शब्द होता हो वह दरिद्रता का सूचक है।

तीन रेखायें जो कलाई को घेरती हों मणिबन्ध कहलाती हैं। उनमें प्रथम धन, द्वितीय शास्त्र और तृतीय शक्ति को जानना चाहिये। पुरुष के हाथ में और स्त्रियों के हाथ में दो रेखा उत्तम समझी गई हैं

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तीन रेखा हों तो उत्तम दो रेखा से मध्यम, एक रेखा से कनिष्ठ (दरिद्री) फल होता है। कभी-कभी चार रेखायें भी होती हैं।

पश्चिमी विद्वान् इसी को आरोग्यता धन और अमन चैन की सूचना लिखते हैं।

स्वच्छ और पूर्ण रेखायें तन्दुरुस्ती, शाँति और भाग्य-वान होने की सूचना है।

जंजीरदार मणिबंध गरीबी और लड़खड़ाता हुआ जीवन व्यतीत करने की सूचना है।

मणिबंध के ऊपर त्रिकोण हो या कोण हो तो वृद्धवस्था में सम्मान के साथ धन प्राप्त होता है।

और यदि तारा का चिह्न है तो अजनबी मनुष्य से धन प्राप्त की सूचना होती है।

यदि एक रेखा यहाँ से निकल कर गुरु स्थान तक जाय तो विशेष उम्र वाले के साथ विवाह सम्बंध होने की सूचना है। यदि सूर्य स्थान को जावे तो किसी प्रकार धनी पुरुष की विशेष कृपा होने का लक्षण है। यदि एक रेखा बुद्ध के स्थान को जावे तो एका एक धन प्राप्त करने की सूचना है।

मणिबंध से आयु का भी ज्ञान होता है। हर रेखा ३० वर्ष की आयु की सूचना है। यदि तीनों रेखा पूर्ण रूप से स्वच्छ हो तो ६० वर्ष के लग-भग आयुष्मान होने का लक्षण

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

है। ४ रेखा होने से २० वर्ष की आयु होती है, मध्य में कोई खण्डित हो तो आधा, या चौथाई आदि हो तो अनुमान से अवस्था जानी जाती है। जैसे आधी से १५ डेढ़ से ४५ वर्ष आयु इत्यादि।

मणिबंध रेखा से यदि रेखायें (आकृति १६ नम्बर ६) निकल कर चंद्र स्थान को जावे तो समुद्र यात्रा होने की सूचना है। यदि यह रेखायें जीवन-रेखा में समाप्त हो तो यात्रा में मौत होना बताती है।

यदि प्रथम रेखा मणिबन्ध रेखा के ऊपर को उठकर वृता कार हो तो आंतरिक स्वाभिक कमजोरी का लक्षण है, और स्त्री के हाथ में हो तो गर्भाधान में बाधा और समय से पहिले गर्भ खंडन होना बतलाती है। तीन से अधिक रेखायें शनि के पर्वत के ठीक नीचे से टूटी हुई हो तो शेखी और झुठाई उत्पन्न करती हैं।

यदि मणिबन्ध के ऊपर गुणा का चिह्न हो तो मुसीबतों का सामना होता है। परन्तु जीवन आराम और शांति से समाप्त होता है।

धनुषाकार (आकृति ११ भेट १ नं० १) मणिबन्ध हो तो आंतरिक हिस्सा कमजोर का चिह्न व पुत्र उत्पन्न करने में बाधक यह रेखा किसी हाथ में अर्द्ध व कलाकार, किसी भी हाथ में आड़ी किसी हाथ में तीन या चार और इस प्रकार

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यह भिन्न प्रकार की रेखा होती हैं। वैसा ही भिन्न प्रकार का फल भी होता है।

सोलहवाँ अध्याय।

शुक्र-रेखा या शुक्र मुद्रिक

शुक्र-रेखा पहली अँगुली से चौथी अँगुली तक जाती है। शुक्र—रेखा जिससे हाथ में स्पष्ट एवं गहरी हो, उठावदार आड़ी बुद्ध के पर्वत के पास हो तो न्यायाधीश जैसे पद की अधिकारी और पढ़ने की जीवका या अखवार के सम्पादक होने का लक्षण है। ऐसा व्यक्ति बड़ा दिमागी शील वाला और साहित्य—प्रेमी होता है। उसकी स्त्री पवित्र श्रेष्ठ होती है और सन्तान से युक्त होती है।

शुक्र—रेखा वाला कभी उत्साह के पूर्ण, निराशा से घिरा हुआ है। और यह उलट—पलट उसके जीवन में होता है। इसी तरह बराबर उसके जीवन में ज्वार-भाटा आता रहता है। यदि यह रेखा टूटी फूटी हो तो स्वार्थी, चिड़-चिड़ा चँचल जोश में आने वाला होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि यह रेखा विवाह रेखा तक जावे तो अशांति देने वाली है। क्योंकि ऐसा मनुष्य अपनी स्त्री में इतने गुण देखना चाहता है जितने तारे आकाश में हैं। ऐसे पुरुष को कहना कि अपनी भूल को सुधारे, नहीं तो जीवन में विशेष विक्षेप होगा,

दो या तीन शुक्र—रेखा हो तो दुर्गुणी, अस्वाभाविक बुराई करने वाला होता है। यदि तीन चार हों—एक के नीचे एक या कोई स्थानों पर टूटी हो तो कामी पुरुष होता है।

यदि लम्बी वैवाहिक रेखा को काटती हो तो यह अत्यन्त कठोर हृदय खुद गर्ज और मूर्छा रोग ग्रस्त होता है और उसके प्रेमी का जीवन दुःखमय कर देता है और अपनी स्त्री को दुख देता है।

यह छोटी २ रेखाओं से कटी हो (आकृति २१ नं ३) तो हिस्टिरिया की बीमारी होती है।

यह इस रेखा पर कोई नक्षत्र हो और दो तीन रेखायें हों तो धातु आतशक सुजाक बात विकार इत्यादि की बीमारी होती है जिससे सेहत होना असम्भव होता है। ऐसे लोगोंको ब्याह नहीं करना चाहिये शुक्र की रेखा तीन-चार हो और टूटी होवे तो अनिवार्य स्त्री-व्यसन होता है।

शुक्र—रेखा गहरी स्पष्ट, लाल रंग की हृदय-रेखा की तरफ लुढ़कती हो तो वेदान्ती बनाती है और अनेक विद्याओं में पूर्ण तथा साफ़ कहने वाला होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अत्यन्त छोटी शुक्र-रेखा चंचल दयालु द्रव्याभाव और चिंताजनक होने का लक्षण है।

शनि स्थान से चली गोलार्द्ध रेखा यदि बुद्धालय पर्यन्त आवे तो वह बड़ा झूँठा धूर्त, छली तथा कामी होने का लक्षण है।

जिसके हाथ में साफ चौड़ी रेखा हो तो वह भूत-प्रेत की बाधाओं से पीड़ित और गाने वाला होने का लक्षण है।

सत्रहवां अध्याय।

बेलाप्रिक्व रेखा।

यदि यह रेखा शुक्रालय से चलकर टेढ़ी बुद्धालय पर्यन्त जावे तो चोरी करने वाला तथा हत्यारा आदि होता है।

यदि सीधी गहरी रेखा बुद्धालय पर्यन्त जावे तो सौभाग्य शाली विद्वान् विख्यात, कीर्ति वाला और सिद्ध होना बताती है। यह रेखा भी लेखक के बांये हाथ में है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आकृति ३६ नं० ८)

शनि–मुद्रिका या शनि–रेखा

यह अर्द्ध चन्द्राकार शनि के पर्वत पर होती है। यह एक अशुभ है (आकृति २० नं० २ व आकृति २१ प्लेट १ नं० १) इसे गलती से गर्डल आफ वेनस या शुक्र–मुद्रिका न समझ लेना चाहिये। यह भाग्य और शनि के स्थान को काटती है। जिससे उन्नति में बाधा पड़ती है। ऐसे लोग अपने साथियों से बेढङ्ग तौर से अलहिदा रहते हैं और उदास और तनहाई महसूस करते हैं इनके कार्य सलाह देने से इनको अच्छा नहीं लगता। ये शनि के स्वाभाव वाले सिद्धि होते हैं और मुसीबत गरीबी और भयानक दुःख भी जीवन में आजाते हैं।

सोलो मन रिङ्ग।

यह रेखा पहली अँगुली को घेरती है इस रेखा से व्यक्ति गुप्त—विद्या तथा खास कर हस्त रेखा की विद्या का स्पेशलिस्ट होता है, यह रेखा भी लेखक के हाथ में है और दाहिने हाथ में तो बिलकुल स्पष्ट रूप से है। यह रेखा बुद्धिमानी की रेखा है इसके होने से बड़े बड़े महात्माओं की सहायता अकसर होनी हैं जिसका प्रमाण स्वयं लेखक को मिल चुका है और आगे भी मिल चुका है और आगे भी मिलेगा।

चन्द्र—रेखा।

चन्द्र—रेखा स्वास्थ रेखा के पास ही पूर्व भाग में हृदय रेखा से निकल कर मङ्गल व चन्द्र इन दोनों पर्वतों को चककर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

देने वाली अर्ध वतु लाकार होती है, इसी को अन्तरज्ञानी की रेखा कहते हैं।

ऐसी रेखा जिनके हाथ में हो वह गुप्त-विद्याजानने वाला समाधि लगाने वाला या चमत्कार दिखलाने वाला है यदि यह रेखा चन्द्र के पर्वत या बुद्धके पर्वत तक हो तो बड़ा योगी होता है। और अन्तज्ञनी से सब बातों को जान लेने वाला होता है। इस रेखा पर यव का चिह्न हो तो अलौकिक पदार्थ देने की शक्ति होगी।

यह रेखा हो और शनि शुक्र के कुंकण हो और करतल के बीच में त्रिकोण हो और गुरु का पर्वत ऊँचा हो और वहाँ क्रास का चिह्न हो या चतुष्कोण हो तो बड़ा महात्मा त्रिकालज्ञ ईश्वर का साक्षात् करने वाला ज्ञानी और योगी होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अठारहवां अध्याय।

अन्य रेखा।

पितृ—रेखा से कोई रेखा शुद्ध रूप से निकल कर शुक्र स्थान तक जाय तो वह व्यक्ति किसी स्त्री का उत्तराधिकारी होकर सम्पत्ति-शाली होता है।

एक प्रभाविक रेखा शुक्र के पर्वत से या जीवन रेखा से निकल कर शनि के पर्वत पर जाय तो किसी जानवर से या किसी सवारी से चोट लगने का भय है।

बहुत पीली हथेली छोटी और पीले नाखून चंद्र का पर्वत अधिक उठा हो या ज्यादा रेखायें हों तो अनीमिया या साधारण कमजोरी व खून में शिकायत होती है।

यदि सूर्य का पर्वत अधिक उठा होय यो कई एक रेखा हो या हृदय-रेखा शनि के पर्वत के पास टूटी हो तो आँतड़ी में सूजन होती है।

लचीली हथेली अँगुलियाँ हथेली से लम्बी दूसरी गाँठ उठी हुई अच्छी मस्तक रेखा का पर्वत उभड़ा हुआ साथ ही साथ चौथी अँगुली औसत से ज्यादा लम्बी एक रेखा मणि-बँध से बुध के पर्वत तक रेखायें मस्तक रेखा से बुध के पर्वत तक स्वास्थ्य-रेखा साफ और सुन्दर सुन्दर भाग्य रेखा और

CC-0.Courtesy Shri.K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सूर्य रेखा या उपरोक्त गुणों में से कोई गुण होवे तो तो वह व्यक्ति रोजगार की इच्छा वाला होवे और उसको कामयाबी होती है ।

औसत दर्जे का हाथ नाखून चौड़े लम्बे और जड़ पर गोल हों तो साधारण बुद्धि वाला होता है । छोटे और पीछे नाखून लम्बी पतली अँगुलियाँ चौथी अँगुली अक्सर टेढ़ी या अधिक लम्बी बुद्ध और चँद्र के पर्वत उठे हुए बुध के पर्वत पर गुण का चिह्न या काटती हुई रेखायें हों मस्तक-रेखा झुकी हुई साथ साथ दो चौड़ी शाखा हों ये चिन्ह जिसमें हों वह दगाबाज होता है ।

उन्नीसवां अध्याय ।

कठोर और कोमल हाथ ।

हाथ दो तरह के होते है-कोमल और कठोर ।

कठोर हाथ परिश्रमी, जोशीला, धैर्यवान होने का लक्षण है । कोमल हाथ आराम पसंद' आलसो और तनिक मुसीबत में घबरा जाने वाले का लक्षण है । दाहिना हाथ बांये हाथ की रेखाओं को सही करता है और जो कुछ स्वयं उन्नति

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

करके जीवन में परिवर्तन किया है उसे बतलाता है। इस हाथ को कर्ता कहना चाहिये। बाँया हाथ जो कुछ पैदायशी खासियत है उसे बतलाता है इस लिये इसको अकर्ता हाथ कहना चाहिये।

जब कोई रेखा दोनों हाथों में पायी जाती है तो उसका पूरा फल होता है और यदि कोई रेखा दाहिने में पाईजाय तो उसका फल आधे से ज्यादा होता है और यदि सिर्फ बांये ही हाथ में पाई जाय तो उसका फल आधे से कम होता है। हाथ बड़े लम्बे गठीली उँगली अँगूठेकी गांठ मजबूत और अंगुली तथा सब अंगुलियों के दूसरे पोर कुछ बड़े हों या उपरोक्त कोई भी चिह्न हो तो वह व्यक्ति किसी बात को पूरे विवरण के साथ जानने की कोशिश करेगा। यदि हाथों में बहुत रेखा होवें तो चिड़ चिड़ा पन, तनिक बात में नाराज होजाना और उसे बहुत बढ़ा देना स्वभाविक हो जाता है जिससे बेचेनी और स्वास्थ्य को हानि पहुंचती है यह मानसिक चिंता और जल्द थक जाने की भी निशानी है।

हाथ में गड्ढे का होना दुर्भाग्य का लक्षण है और लगा तार जीवन में नाकामयाबी का होना और सफलता का कई प्रकार के कार्यों में न होना बतलाता है।

गर्म लाल रङ्ग अछिद्र अँगुलियाँ सटी हों चिकना मास से भरा चमकीला लाल रङ्ग के नख वाला बड़ी २ अँगुलियों वाला हाथ उत्तम दर्जे का हाथ होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हथेली का रङ्ग लाल हो तो धनी नीले रंग का हो तो मदिरा सेवन करने वाला, पीले रंग का होतो दुष्ट स्त्रियों में आसक्त रहने वाला, सफेद किंवा काले या कषेते रंग का हो तो निर्धन होता है।

हथेली ऊँची हो तो दाता, गोल हो तो धनी, ऊँची नीची हो तो निर्धन मध्य भाग गहरा हो तो कृपण होता है।

लम्बे हाथ वाले क्रिया शील और काम नियमित रूप से करने वाले होते हैं।

छोटे हाथ वाले बहुत सा समय सोच विचार में और तरह २ के मनसूबे बांधने में ही व्यतीत करते हैं, छोटे हाथ वाले जितना कहते हैं उतना करते नहीं और ऐसा सोचतेहैं जो पूरा करना उनकी शक्ति से बाहर होता है लिखते समय बड़े२ अक्षर लिखते हैं।

हथेली और अँगुलियों की लम्बाई दोनों की एक समान बराबर हो तो शुभ जानना चाहिये जिस कदर बड़ी छोटी हो उसी के अनुमान से भाग्य की कल्पना करना चाहिये।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बीसवां अध्याय ।

(हथेली)

हथेली न बहुत संकुचित न बहुत चौड़ी होनी चाहिये। हथेली चौड़ी हो तो उदार अनुभवी और परिश्रमी होने का लक्षण है।

हथेली अधिक पतली सिकुड़ी हुई शुष्क और सख्त हो तो निरुत्साही डरपोक निर्बल बुद्धि हीन चरित्र हीन चचल स्वाभाव और तनिक परिश्रम से थक जाने वाला होता है। लम्बी मुलायम हथेली मनुष्यको आलसी और आराम पसन्द प्रकट करती है।

हथेली अधिक भारी मोटी मुलायम बेढंगी होतो स्वार्थी इन्द्रियलोलुप व्यसनी और विषय भोग में मग्न रहने वाला होता है।

कोमल ढीले हाथ वाला मनुष्य निरुत्साही आलसी काल्पनिक और आराम पसंद होता है। परिमित से छोटा करतल वाचाल मनुष्य का होता है दृढ़ करतल चंचल तथा योग्य प्रकृति वाला होता है। गहरी हथेली दुर्भाग्य का सबसे बुरा लक्षण है यदि यह गहराई पितृ रेखा की तरफ लुढ़कती हो तो गृहस्थी सम्बन्धी कामों में निराशा की सूचना है और रेखायें कोई रोग बतावें तो भयानक रोग का लक्षण है। यदि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गहराई हृदय रेखा की तरफ हो तो इष्ट मित्रों की ओर से निराशा और कोई सहायता न मिलने की सूचना है।

यदि गहराई भाग रेखा के नीचे पड़ती हो तो सांसारिक व्यवहार व्यापार रुपये पैसे के संबंध में बुरा फल बतलाता है। जिसके हाथ में हो उसका भाग्य डांवाडोल रहता है वह जिससे लेता है उसको चुकाना मुश्किल हो जाता है और किसी को देने से रुपया पैसा इत्यादि मिलना कठिन हो जाता है।

अँगुली और अँगूठा यदि शुभ सूचक हो तो इस प्रकार की हथेली के फल को रोक नहीं देते पर हां मध्य कर देते है।

कोमल और मजबूत हथेली साहस, प्रबल इच्छा शक्ति की सूचक है।

सफेद हथेली हो तो खुद गरज आत्म प्रशंसी पराये दुख में सहानुभूती नहीं करने वाला होवे।

पीली हथेली हो तो पित्त प्रकृति का और सन्तप्त स्वभाव वाला होवे।

काली हथेली हो तो दुखी निस्तेज कफ प्रकृति का और बहुत कोमल स्वभाव वाला होवे। अरुण वर्ण लाल का हो तो धनी और उम्मीद रखने वाला होता है।

भूरी हथेली हो तो निस्तेजता और पुरुषत्वहीनता का सूचक है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गुलाबी हथेली सबसे अच्छी होती है यह तेजस्विता और न्याय बुद्धि होने की सूचना है।

इक्कीसवां अध्याय।

(करपृष्ठ)

करपृष्ठ पर परकेश नहीं होना चाहिये चौड़ा कछुवे की पीठ के समान अच्छा ऊँचा उठा हुआ जिस पर नसें न दिखाई पड़ती हों तो उत्तम होता है।

सूखा सिकुड़ा हुआ नीचे दबा हुआ चपटा नसें दिखाई पड़ती हो और बाल सहित हो तो शुभ माना जाता है।

स्त्रियों का हाथ ऐसाही हो तो विधवा होती है पश्चिमी विद्वानों का कथन है करपृष्ठ भाग पर ज्यादा बाल हो तो चञ्चल और आराम तलब खाने पीने में शोकीन होता है। बिलकुल केश न हो तो डरपोक व पुरुषत्वहीन होने की सूचक है।

अँगूठा।

अँगुलियों की सहायता बिना कोई कार्य नहीं हो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सकता। मनुष्य के हाथ में चार अँगुली और पाँचवां अँगूठा है, यदि उन उँगलियों को अँगूठे की सहायता न हो तो हर काम करने में मनुष्य असमर्थ होता है इसलिये अँगुलियों की अपेक्षा अँगूठा अत्यन्त लाभ दायक अवयव है। इस लिये इसका वर्णन पहले ही करना उचित है इससे मनुष्य की इच्छा शक्ति तथा तर्क शक्ति का ज्ञान होता है।

अँगूठे के समान ही पांव के अँगूठे का वर्णन भी पौर्वात्य शास्त्रकारों ने किया है जिसका अँगूठा ऊँचा उठा हुआ मास से भरा हुआ गोल आकृति का हो तो उत्तम भोग देने वाला होता है, तथा टेढ़ा बांका छोठा चपटा हो तो सुख सोभाग्य का नाशक होता है।

चौड़ा फैला हुआ अँगूठा हो तो दुखी स्त्री हीन और स्त्री का ऐसा हो तो विधवा होती है जिस स्त्री के पांव का अँगूठा पूरी तरह से गोल शक्ल का हो तो वह पतिव्रता होती है।

जब मनुष्य तर्क शक्ति का प्रयोग करता है तो अक्सर वह सब अँगुलियों को भीतर दवा के अँगूठे को ऊपर रखता है, और जब मनुष्य क्रोध करता है तब उसकी विचार शक्ति नष्ट हो जाती है। यह दूसरों को मारने के मुट्ठी बांधता है, अँगुलियों के भीतर अँगूठा दवा कर घूंसा लगाने की तैयारी करता है याने विचार शक्ति क्रोध के आवेश में नष्ट हुई अँगुलियों के अन्दर अँगूठा हो जाता है और जब विचार शक्ति जागृत होती है तो अँगूठा बाहर रहता है इससे यह ज्ञात

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar. Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हुआ कि अँगूठा इच्छा शक्ति को बताता है जब तक इस शक्ति का शरीर और मन पर अधिकार रहता है तब तक वह अँगुलियों के भीतर नहीं रहता है इससे यह साफ प्रकट है कि अँगूठा मुख्य और अति महत्व का है। अगुष्ट में दो ही पोर होते हैं। तीसरा पोर शुक्र के ऊपर के भाग की करतल में की ही एक हड्डी याने हिस्सा होता है। मनुष्य का स्वभाव जानने के लिये अँगूठा बहुत उपयोगी है अंगूठे के मुख्य तीन विभाग है। पहिला प्रेम, दूसरा तर्क, तीसरा इच्छा शक्ति।

अधो भाग प्रेम की है मध्य भाग विचार शक्ति है और ऊर्ध्व भाग यानी नाखून वाला भाग इच्छा शक्ति का। इन तीनों में जो भाग बड़ा हो या है उसी के मुताबिक उस भाग का गुण बढ़ जाता है।

ऊर्ध्व भाग यदि बड़ा हो तो स्वेच्छचारी हटी होने की शक्ति विचार शक्ति से अलग होती है। इस भाग के छोटे होने से आत्माये निर्बल होती हैं और अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं होता है। स्वभाव चञ्चल और विचार कमजोर होता है।

मध्य भाग यदि ऊर्ध्व भाग से बड़ा हो तो विचार शक्ति अधिक बली होती है और ऐसा पुरुष किसी निश्चय पर नहीं पहुँचता हैं, सोच विचार में समय नाश करता है और अवकाश को गवां देता है ऐसे लोग प्राय: वहमी और कुतर्की देखे गये हैं। यदि मध्य और ऊर्ध्व भाग बराबर हो तो अधिक उपयोगी होता है। अपना काम खूब सोच विचार कर करता है और अपने सभी कामों में सफल होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अघो भाग प्रेम का स्थान है। जब यह लम्बा हो तो अपनी काम वासनाओं पर विशेष अधिकार रखता है और छोटा और मोटा तो कामी वासनायें विशेष पाशविक रूप की होती है।

बाइसवां अध्याय।

(अँगूठे के दो भेद)

१—सीधा, सुदृढ़।

२—कोमल और झुका हुआ।

सीधा सुदृढ़ अँगूठे वाला मनुष्य अधिक स्वेच्छाचारी हठी होता है। ऐसे लोग आसानी से दोस्ती नहीं करते हैं और सफर में खामोश बैठे रहते हैं।

कोमल और झुके हुये अँगूठे वाला मनुष्य आसानी से अपरिचित मनुष्यों से सफर में मेल कर लेता है। ऐसे अँगूठे वाले संसार में अधिक हैं।

यदि ऊपर का जोड़ मुड़ा हो तो दूसरे के कहने में आ जाते है और दूसरों के फायदे के लिये खुद नुकसान उठाते हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

और प्राय: धन को व्यर्थ के कामों में बरबाद करते हैं उपकार के बहाने दूसरों के कहे में आकर धोखे में आजाते हैं और अपना धन दे डालते हैं या व्यर्थ बर्बाद करते हैं।

यदि अँगूठा पहिले के नीचे दूसरे जोड़ पर झुक रहा हो तो ऐसा मनुष्य समय को अपने अनुकूल या प्रतिकूल देख कर विचार बदलता है। किसी के कहने में नहीं आता। वह आसानी से किसी से धोखा नहीं खा सकता और जहाँ रुपये पैसे का सवाल सामने आता है वह सावधानी से काम लेता है और प्राय: रूखापन प्रकट करता है।

जिनका अँगूठा बहुत मोटा सिरे पर गोल और चौड़ा होता है वे उग्र और जानवरों की तरह वे सबब जिद वाले और थोड़ी बातों में जोश में आ जाने वाले होते हैं। मरने मारने को तैयार हो जाते हैं। ऐसे लोगों से सावधानी के साथ व्यवहार करना चाहिये।

यदि अँगूठा बीच में पतला हो तो मनुष्य होशियार जल्द बाज चतुर होता है मौका पाकर अवसर को नहीं छोड़ता और अपना काम निकाल लेता है और सोच विचार में समय नष्ट नहीं करता।

अँगूठा लचीला हो तो मीठे रागों के गाने की शक्ति प्रगट होती है नुकीला अँगूठा हो तो चापलूसी पसन्द होता है।

अँगूठे के गुणों पर विचार करते समय हाथ, अँगुलियों की बनावट ग्रह स्थानों पर और एक निगाह मस्तक रेखा पर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

डाल कर फल कहना चाहिये। क्योंकि इनके अच्छे होने से स्वभाव में बहुत कुछ परिवर्तन हो जाता है और फल कहते समय गलती हो जाने का भय नहीं रहता। नीचे लिखे हुये नियमों को ध्यान में रखने से अँगूठे के पहचानने में और फल कहने में विशेष सुविधा होती हैं:—

अँगुष्ट भेद।

१—लम्बा सामान्य आकार वाला।

२—छोटा, मोटा और कुरूप।

३—अधिक नोंकदार।

४—वर्गाकार सिरे पर मोटा।

५—बीच में पतला।

६—मध्य भाग मोटा जोड़ भद्दा।

७—मध्य भाग अधिक पतला।

गुण।

१—बुद्धिमान एवं चतुर।

२—मूर्ख एवं क्रोधी।

३—अस्थिर डावांडोल, तीक्ष्ण

४—स्वभाव।

५—हठी एवं स्वेच्छा चारी।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

६--विचार शील निर्बल दूर दर्शी।

७--अदूरदर्शी अविवेकी, मोटे विचार वाला।

८--निर्बल इच्छा शक्ति कमजोर विचार।

९--ऊर्ध्व भाग अधिक मोटा-धूर्त हठी निर्दयी झगड़ालू

१०-ऊर्ध्व भाग बहुत मोटा सिरे पर गोल और चौड़ा चपटा--अत्यन्त क्रोधी झगडालू निर्दयी।

अंगुलिया।

(अँगुलियों के आगे का हिस्सा)

अँगुलियों के अग्र भाग चार प्रकार के होते हैं पहला चपटा दूसरा गोल तीसरा चौथा नोंकदार इनके गुण आगे लिखे हैं।.

अँगुलियों का पर्व।

पौर्वात्य आचार्यगण पर्वके विषयमें कहते हैं कि अँगुष्ट के दो पेटी और अन्य अँगुलियों में तीन पेटिया होती हैं पेटि-यों के ऊपर खड़ी रेखाओं के रहने से शुभ फल होता है अगु-लियों का संयोग करने से छेद देख पड़े तो निर्धनत्वकारक है।

भाग्यवान और बुद्धिमान पुरुषों के हाथ की अँगुली निरंतर मिली हुई होती है और बड़ी आयु वाले पुरुषों की अँगुली सीधी और बड़ी होती हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

धन हीन पुरुषों की अँगुली मोटी होती है और हथियार वाले पुरुषों की अंगुली बाहर को झुकी होती है और दासों की अंगुली छोटी और चपटी होती है।

जिसके अँगूठे की अँगुली प्रगट कामती बढ़ती जैसे पाँच से छटी संख्या हो तो पृथ्वी में धन धान्य करके हीन और थोड़ी आयु वाला होता है।

अँगुली दो प्रकार की होती है चिकनी और गठीली अँगुली वाला बुद्धिमान चतुर दूरदर्शी समझदार और जो कुछ काम करता है उसका विवरण रखता है और सामाजिक कार्य को करने में दत्त चित्त होता है।

चिकनी अंगुलियां वाले तरङ्ग और स्वभाविक कार्य में लगने वाले होते हैं। ऐसे अँगुली वाले किये हुये कार्य को बिना पूरा किये मध्य में ही छोड़ देते हैं बिना विचारे उतावलेपन से कार्य आरम्भ कर देते हैं और उनको अपनी शक्ति का वृथा विश्वास रहता है।

१—पहली अँगुली (तर्जनी) का स्वामी बृहस्पति है।
२—दूसरी „ (मध्यमा) „ शनि है।
३—तीसरी „ (अनामिका) „ सूर्य है।
४—चौथी „ (कनिष्ठका) „ बुध है।

पहली अँगुली याने तर्जनी लम्बी हो तो स्वामी मान शासन शक्ति भोग विलास की इच्छा और उच्च पद पाने की अभिलाषा देती है। और जब अधिक लंबी यानी दूसरी अँगुली

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

के करीब २ बराबर हो तो निष्ठुरता उपद्रव आत्म प्रशंसा और अधिकार पाने की अधिक अभिलाषा देती है। और यदि यह अँगुली छोटी हो तो शांत स्वभाव और जुम्मेवारी न लेने वाला मनुष्य होता है। यदि टेढ़ी हो तो शासन के अयोग्य है। और उद्देश्य हीन और अल्प प्रतिष्ठा वाला होता है।

यदि शनि की अँगुली की तरफ झुकी हो तो घमण्डी होता है यदि वह अँगुली पतली चपटी नोकदार हो जड़ बुद्धि वाला होता है।

दूसरी अँगुली याने मध्यमा लम्बा हो तो एकान्त वास सावधानता अध्ययन शक्ति और गुप्त विद्याओं में रुचि देती है। और अधिक लम्बी हो तो उदास चित्त, निर्दल इच्छा शक्ति और भाग्य पर भरोसा करने वाला होता है यदि छोटी या नौकदार हो तो ओछापन विचार हीन और टेढ़ी हो तो गन्दे विचार उत्पन्न करती है और नित्य रोगी होता है।

प्रथम पोर लम्बा हो तो मृत्यु आवे तो अच्छा ऐसी अभिलाषा होती है।

यदि दूसरी पोर लम्बी हो तो गुप्त विद्या जैसे ज्योतिष वेदान्त मेसमेरिज्म आदि में प्रीति होती है।

यदि तृतीय लम्बा हो तो लोकप्रिय मित व्यतीत होता है।

तीसरी अँगुली अनामिका लम्बी हो तो यश प्राप्त करने की इच्छा कला कौशल दस्तकारी साहित्य इत्यादि की

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तरफ रुचि होती है और यदि अधिक लम्बी हो तो व्यापारिक चतुरता जूआ और धन प्राप्ती की लालसा देती है।

छोटी हो तो उदासीनता और कला कौशल की ओर से अरुचि पैदा करती है टेढ़ी हो तो अयश देती है।

यदि लम्बाई मध्यमा के बराबर तो और दूसरा पोर कुछ भरा हो और मङ्गल का पर्वत उठा हो तो तर्क शक्ति वाला द्यूत में रुचि नीलाम लाटरी तथा अन्य भाग्य परीक्षक खेलों से प्रेम रखने वाला होता है, यदि उपरोक्त लक्षण के साथ बुध का पर्वत ऊँचा हो तो सट्टे का व्यापार करने वाला होता है।

चौथी अँगुली कनिष्ठिका लम्बी हो तो ज्ञान शक्ति व्याख्यान देने की शक्ति और भाषाओं के ग्रहण करने की योग्यता प्रदान करती है और अधिक लम्बी हो तो छल चतुरता और तीव्र बुद्धि देती है। यदि छोटी हो तो मन्द बुद्धि कार्य में असफलता और बात आसानी से समझना इत्यादि गुण उत्पन्न करती है। यदि टेढ़ी हो तो चुप चाप रहने की आदत दूसरों के कहने में आसानी से आ जाना और विचारों का निर्बल होना इत्यादि होता है उत्तम बन्धन तथा नैतिक ज्ञान की कमी होती है और आया हुआ लाभ का अवसर हाथ से खो देगा। जिनसे सहायता मिलेगी उनकी ओर ध्यान न देगा। यदि अग्रभाग की नोक चौरस हो तो उत्तम शिक्षक होता है।

अँगुलियाँ लम्बाई में हथेली माफिक होनी चाहिये ऐसा होने से बुद्धि और दिमागी शक्ति विशेष रूप से होती है. और यह भाग्यवान का चिह्न है अंगुलियाँ अधिक लम्बी हो तो वह मनुष्य विरह वेदना से व्याकुल अपने ध्यानमें मस्त रहने

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

वाला और प्रायः बहमी याने शकी होता है। ऐसा पुरुष आस्तिक होता है और हर बात को बिना अनुसन्धान किये विश्वास नहीं करता है बोलने तथा काम करने में सुस्त होते हैं शीघ्र निर्णय नहीं करते हैं।

छोटी अँगुली वाला मनुष्य चालाक साहसी संकुचित स्वभाव तुरन्त काम में लग जाने वाला और बहुत जल्द सोचता है, उल्लेखन शैली संक्षेप में तात्पर्य दर्शाने वाली गम्भीर होती है। और आसानी से उभाड़ा जा सकता है। लम्बी मोटी अँगुलियों वाला कठोर होता है संक्षेप में मतलब समझ लेते हैं बाहरी देखावे की परवा नहीं करते यदि छोटी अंगुलियां पुष्ट हों तो निर्दयता सूचक है।

तेईसवां अध्याय।

(त्रिभुज)

त्रिकोण के आकार का त्रिभुज होता है यह शुभ फल दायक होता है।

गुरु के स्थान पर लोकहित कार्य करने वाला और किसी रियासत का खास अधिकारी की सूचना है। शनि के

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

स्थान पर ज्योतिष सामुद्रिक मन्त्र तन्त्र और गुप्त विद्याओं का जानकार होता है। यदि तीसरे पोर पर नक्षत्र शनि की अँगुली पर हो तो इस विद्या का दुरुपयोग होता है।

सूर्य के स्थान पर शिल्प विद्या का अच्छा जानकार होता है और विज्ञान-द्वारा कार्य या औषधि के कार्य में उन्नति होती है।

बुध के स्थान पर शुभ लक्षण है, वैज्ञानिक व्यवसाय सेवा विद्वता के कार्य में सफलता होती है राजनीतिज्ञ और अच्छा वक्ता होता है।

मङ्गल के स्थान पर बुध के पर्वत के नीचे चीर-फाड़ के काम में होशियार होता है गुरु के नीचे मङ्गल पर्वत पर हो तो कुशल सेनापति और दृढ़ निश्चय वाला होता है।

शुक्र के स्थान पर स्वार्थवश प्रेम में फंस जाने का सूचक है और गणित का जानने वाला होता है।

ऊँचा मङ्गल के स्थान में सैनिक कार्य में कुशलता देता है।

इन्द्र के स्थान पर गुप्त विद्या का ज्ञान तथा जादूगरी सिखाता है।

भाग्य-रेखा के आदि में यदि त्रिकोण हो तो थोड़ी अवस्था में माता-पिता का वियोग होता है।

पितृ-रेखा पर त्रिकोण हो तो मनुष्य पैतृक सम्पति का अधिकारी होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मातृ-रेखा में त्रिकोण हो तो ननिहाल की सम्पति प्राप्त होती है।

यदि आयु-रेखा पर त्रिकोण हो तो पुरुषार्थ से गृह भूमि और वाटिका और अनेक ऐश्वर्य प्राप्त करता तथा बनाता है।

यदि मणि बन्ध पर त्रिकोण हो तो वृद्धावस्था में सम्मान के साथ धन की प्राप्ति होती है।

यदि भाग्य-रेखा पर त्रिकोण हो तो अनायास धन की प्राप्ति होती है यदि छोटा त्रिकोण हो तो थोड़ा धन और बड़ा त्रिकोण हो तो ज्यादा धन मिलता है।

चौबीसवां अध्याय।

नक्षत्र।

तारे के समान होता है यह अच्छा लक्षण नहीं है इससे चिंता, संताप, मुसीबत और दुःख होता है।

एक वर्ग के अन्दर नक्षत्र हो तो भयानक खतरे से रक्षा हो जाने की सूचना है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चन्द्र स्थान पर नक्षत्र झूठा रोग ग्रसित और पानी में डूबने की सूचना है।

मङ्गल के स्थान पर बुध के नीचे हत्या करने वाले विचार और किसी जङ्गली जानवर से चोट लगने की सूचना है।

मङ्गल के स्थान में यह चिह्न हो तो रेलवे भूडोल से हानियाँ व चोट लगती है।

शुक्र के स्थान पर किसी स्त्री कष्ट पाने की और निराशा कीया दुःखदायी विवाह होने की सूचना है और किसी सम्बन्धी की मृत्यु की सूचना है।

यदि दाहिने हाथ पर तारा हो तो पिता की मृत्यु बाल्यावस्था में होती है। यदि यही चिह्न बांयें हाथ पर शुक्र के पर्वत पर हो तो बाल्य अवस्था में माता की मृत्यु जानना यदि किसी रेखा पर शुक्र के स्थान पर तारा हो तो किसी सम्बन्धी या सनेही के आफत में फँसने या भाग्य हानि की सूचना है।

भाग्य--रेखा के ऊपर और मस्तक रेखा के नीचे वाई-सिकल से चोट लगने की सूचना है।

हृदय रेखा पर दिल की बीमारी बतलाता है।

यह चिह्न बुधके स्थान में हो तो जहर से मृत्यु की सूचना है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

उच्च तङ्गल के स्थान में हो तो आँखों को चोट पहुँचाता है।

शुक्र के स्थान में बीमारी की सूचना है।

पच्चीसवाँ अध्याय।

गुणक।

एक आड़ी दूसरी ठड़ी रेखा के मिलने से गुणक बनता है। अँग्रेजी के अक्षर की तरह होता है प्रायः इसका फल अशुभ होता है। परन्तु किसी अवसर पर शुभ फल दायक है।

सूर्य और शनि के पर्वतों के बीच में हो तो दुख होता है और इज्जत बट्टे में मिल जाय ऐसी चिंता रहती है।

वृहस्पति के पर्वत पर हो तो धनी के यहाँ ब्याह और सुख मय ब्याह होने की सूचना है यह देख लेना चाहिये कि कोई रेखा काट तो नहीं रही है। यदि ऐसा हो तो फल विपरीत होता है। यदि हल्का हो तो मस्तक पर जख्म होगा।

शुक्र के स्थान में भयानक प्रेम या दुख दायी विवाह की सूचना है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यह चिह्न शनि व सूर्य पर्वत के नीचे मस्तक पर हो तो भारी घातक का लक्षण है।

हृदय रेखा पर प्रेमी के वियोग होने की सूचना है। बुध के स्थान पर बेईमान और चोर स्वभाव होने का लक्षण है, शुभ हाथ में मजाकिया स्वभाव और रोजगार और समाज में चतुरता प्रदान करता है और धोखा देना आता है

चन्द्र के पर्वत पर यह चिन्ह हो यो झूँठा ठग और डूब जाने का भय होता है।

चन्द्र स्थान पर बीच में हो गठिया रोग की सूचना है। विवाह रेखा पर विवाहित जोड़े की एकाएक मृत्यु की सूचना है।

बुध की अँगुली के तीसरे पोर में हो तो अविवाहित रहने की सूचना है।

यदि बुध के पर्वत पर यह चिन्ह हो और कनिष्ट का अँगुली टेढ़ी हो तो चोर होता है। चोर की हृदय रेखा शनि के पर्वत तक ही जाती है।

शनि के स्थान पर भाग्य में बाधा उत्पन्न करने की सूचना है। और स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता देता है।

मङ्गल के स्थान पर गुरू के नीचे लड़ाई झगड़ा करने वाला क्रोधमें आकर भयङ्कर प्रहार कर डालने वाला होता है, और चोट लगने का भय है और आत्मघात करने की इच्छा होती है।

CC-0 Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सङ्गत के क्षेत्र में उन्नति बाधा डालने वाला होता है।

मँगल के मैदान में बुध के स्थान के नीचे भारी विरोध होने की सूचना है। और शत्रु भय भी होगा।

सूर्य के स्थान पर धार्मिक प्रवृत्ती की सूचना है, परन्तु धन पाने में गुरू के स्थान पर धनी और सुखदायी विवाह की सूचना है। और कुटुम्ब सम्बन्धी संतोष भी देता है।

सूर्य के स्थान पर यश और धन की प्राप्ति की सूचना है, परन्तु धन से सन्तुष्ट न होने की भी है चाहे जितना धन प्राप्त हो जावे। अपनी सम्पत्ति तथा देवयोग से प्रसिद्धी प्राप्ति की चिन्ता दोती है।

शनि के स्थान पर बिजली से आघात और सर्प के काटने के भय की और लकवा होने की सूचना है। यदि चतुष्कोण का चिन्ह हो तो रक्षा होती है।

बुध के स्थान पर झूँठा और चोर स्वभाव होने का लक्षण है। यदि शुभ हाथ में हो तो साहित्यक उन्नति करता है और दूसरों के ख्यालात को जल्दी ग्रहण करने वाला होता है।

यदि स्त्री के अँगूठे के दूसरे पोर में नक्षत्र हो तो अति धनवान होने की सूचना है।

मंगल के मैदान में हो तो रण में जय देता है और कभी अति क्रोध में प्राण देता है। ऐसा मनुष्य खून करने को नहीं चूकता और शस्त्र से मृत्यु का भय रहता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जीवन—रेखा पर मस्तक सम्बन्धी रोग बतलाता है।

यदि शनि के स्थान पर भाग्य रेखा के पास हो तो जोश में आकर मृत्यु भारी अपयश का कारण होता है।

शुक्र रेखाओं के बीच में भयानक आतक की बीमारी का सूचक है, जिससे मृत्यु होवे।

यदि चन्द्र के नीचे स्थान पर हो तो जालन्धर रोग होवे।

यदि चन्द्र के स्थान पर हो और प्रभाविक-रेखा से जुड़ा हो जो जीवन रेखा से मिली हो या शुक्र के स्थान पर हो तो हिस्टीरिया या पागलपन अतिशय दर्जे का होता है।

जीवन रेखा के पास यह चिह्न राजदर्बार में अभियोग लगने का चिन्ह है! भाग्य- रेखा पर यह चिन्ह अनर्थ का कारण होता है।

भाग्य-रेखा के प्रारम्भ में यह चिह्न हो तो माता-पिता के रहते भी मनुष्य दुःखी रहता है और साथ ही चिह्न शुक्र स्थान पर भी हो तो लड़कपन में ही माता-पिता का विनाश होता है।

—:❀:—

CC-0. Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

छब्बीसवां अध्याय।

(वृत्त)

यह गोल भीतर से पोला होता है। रेखाओं पर इस चिन्ह का होना अशुभ व भाग्य हानि कारक होता है। परन्तु ग्रहों के पर्वतों पर होना शुभ फलदालक है।

गुरु के स्थान में वृत्त काम याबी, शान शोकत इज्जत और नाम देता है।

सूर्य के स्थान में यश हर कार्य में सफलता और धन देता है। और उसका कार्य क्रम आनन्द से बीतता है। यदि सूर्य-रेखा अच्छी न हो तो आंखों में कष्ट होता है।

चन्द्र के स्थान में एका एक मोत की सूचना है। सम्भव है जल में डूब जाने से मृत्यु हो।

शनि के स्थान में खनिज पदार्थों के व्यापार में सफ-लता पाने की की सूचना है।

जीवन रेखा पर आंख में रोग या आंख खो बैठने की सूचना है।

निराशा होती है और व्यापार व दस्तकारी में हानि करता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि स्त्री के हाथ में हो तो वह स्त्री धन के लोभ से कितनों का प्राण लेने में नहीं चूकेगी। ऐसी स्त्री चाहे कितनी ही सुन्दर हो उससे बचे रहना चाहिये।

कई छोटे छोटे गुणा के चिन्ह बुध के स्थान में हों तो अत्यधिक बुराई का चिन्ह है।

यदि चन्द्र के स्थान में ऊपर भाग में हो तो अंतड़ियोंमें कष्ट और नीचे हो तो ब्लैडर या स्त्रियों की जननेन्द्रिय में कष्ट होता है।

मस्तक रेखा पर वह चिन्ह मस्तक को आघात पहुँचने का लक्षण है।

आयु तथा मातृ-रेखा के बीच में यह चिन्ह हो या भाग्य रेखा के समीप हो तो।

यकायक मृत्यु हो जाने का लक्षण है। अक्सर लोगों के हाथ में एक बड़ा गुणाका चिन्ह होता है। जो मे आयु और मातृ रेखा से मिलता है, यह डमरू की शक्ल का होता है। इसका गुण और याचना वृत्ति या किसी संस्थासे सहायतापाने की सूचना है। इसीलिये इस चिन्ह को छोटे गुण के चिन्ह से जो अक्सर बीच में होता है नहीं मिला देना चाहिये।

इसके भीतर यदि लाल दाग हो तो गर्भवती के चिन्ह हैं।

यदि गुणा का चिन्ह मध्य में हो दूसरों से झगड़ा होने का लक्षण है, जिसमें कसूर ज्यादातर उसी का होगा जिसके हाथ में चिन्ह है।

यदि दोनों हाथों में यह चिन्ह हो तो मारे जाने का लक्षण है। यदि कई चिन्ह हों तो दुर्भाग्य की सूचना है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि इसकी शाखायें किसी खास रेखा को न छुएँ तो मुकद्दमे में जीत जाने का चिन्ह है वरना हार होगी।

यदि अर्ध-चन्द्र इसके भीतर हो तो स्वास्थ्य और शक्ति की सूचना और हर प्रकार से उन्नति का लक्षण है।

अट्ठाइसवाँ अध्याय।

वर्ग।

समकोण चतुर्भुज चौकोना होता है। इससे अक्सर अशुभ घटनाओं रोगों विघ्न व भयों व सब संकटों से रक्षा होती है यह चिन्ह शुभ फल दायक है,यह किसी रेखा के पास होने से भयानक खतरे व बीमारी से बचाता है।

यह शुभ चिन्ह है। यदि गुरु के स्थान में हो तो खतरों से या रोगों से बचाता है और अमन चैन देता है। शासन शक्ति और समाज में गिरने से बचाता है। और प्रतिष्ठावान होता है।

यदि शनि के स्थान में हो तो भारी मुसीबत से रक्षा होवे और यदि इसके बीच में नक्षत्र हो तो जान से मारे जाने से रक्षा होती है और यदि इसके चारों कोनों पर लाल दाग हों तो अग्नि से रक्षा होती है। शुभ सूचक है।

यदि सूर्य के स्थान पर हो तो व्यापारिक शक्ति बढ़ाने वाला है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि बुध के स्थान पर हो तो भारी धन की हानि से बचाता है और यश मान प्रतिष्ठा देता है।

ऊँच मंगल के दोनों स्थान से शरीर को चोट से रक्षा करता है और शुभ सूचक है।

चन्द्र के स्थान में डूबने तथा हर संकट से बचाता है।

यदि किसी टूटी हुई जीवन रेखा को जोड़ रहा हो तो रोग से बचाता है। यह वर्ग मेरे दाहिने हाथ में टूटी हुई जीवन-रेखा को जोड़ रहा है और मेरी भारी रोग से बचा कर प्राण रक्षा की है।

शुक्र और मंगल के स्थान पर चतुष्कोण हो तो कारागार सेवन कराता है।

यदि शुक्र पर्वत पर अखण्ड सुन्दर हो तो किसी प्रेमिका के प्रेम में फँस जाने से बेइज्जती या अन्य प्रकार की विपत्ति से बचाता है और यदि यह खंडित हो तो जेल की सम्भावना होती है।

दूसरा चिन्ह जेल यात्रा का है कि अंगुली में चार पर्व हों तो भी जेल होता है।

यदि हाथ के मध्य में हों तो श्रेष्ठ सब का स्वामी होता है।

॥ द्वीप ॥

यह अक्सर जवा के सदृश होता है यह यदि खड़ा हो तो अशुभ और आड़ा हो तो प्राय शुभ फल दायक होता है।

द्वीप का चिन्ह एक अशुभ चिन्ह है।

बृहस्पति के स्थान पर द्वीप अपयश आने की सूचना है और वह पुरुष झगड़ालू होता है।

हृदय रेखा पर नाजायज प्रेम और निराशा प्रद की सूचना है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि बुध की अंगुली के नीचे हृदय रेखा पर हो या बुध पर्वत पर हो तो नाजायज प्रेम किसी रिश्तेदार से होना बताता है। बेईमान लफंगा और चोर होता है।

शुक्र के स्थान पर प्रेम में उत्पात का होना बताता है। और किसी बड़े हितैशी को नाराज कर देने की सूचना है।

भाग्य-रेखा पर किसी व्यक्ति से लुभाये जाने की सूचना है। स्त्री के हाथ में हो तो पुरुष से और पुरुष के हाथ में हो तो स्त्री से लुभाये जाते हैं।

सूर्य-रेखा पर या सूर्य के स्थान पर अपयश आने की सूचना है।

विवाह-रेखा पर वियोग होने की सूचना या अलग अलग पति-पत्नी के रहने की सूचना है।

जीवन और मस्तक रेखा की जोड़ पर द्वीप हो तो प्रेम में झगड़ा होने की सूचनाहै। यह बात एक समय एक बंगाली सज्जन का हाथ देखते समय बताई गई थी, तो उसने इसे कबूल किया और कहा कि उसने प्रेम के झगड़े में आकर आत्महत्या करने का प्रयत्न किया था जहर खालिया था पर भाग्यवश बचगया।

जीवन रेखा पर द्वीप बीमारी की सूचना है।

रेखा पर मस्तक सम्बन्धी रोग बतलाता है जैसे सिर-दर्द, आधासीसी सिर से चोट स्मरण शक्ति का नाश इत्यादि।

यदि वह मष्तक रेखा के नीचे के भाग में हो तो असवर्ण यानी गैर जाती के पुरुष से स्त्री और असवर्ण स्त्री से पुरुष मोहित होता है।

भाग्य और मातृ-रेखा पर द्वीप हो भाग्य रेखा टेढ़ी हो तो उस व्यक्ति का विवाह नहीं होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

भाग्य रेखा के शुरू में यव का चिन्ह हो तो थोड़ी अवस्था में माता पिता का वियोग होता है। कोई कोई विद्वान इस चिन्ह को वर्णसंकर की उत्पत्ति वाला मनुष्य होता है, ऐसा कहते हैं और कोई स्त्री के हाथ में हो तो उसे प्रलोभन देकर भगाई हुई का चिन्ह बताते हैं। लेखक ने उपरोक्त चिन्ह देख कर उपरोक्त फल कथन किया है और सत्य पाया है।

अट्ठाइसवां अध्याय।

रेखा-जाल।

छोटी २ आड़ी और सीधी रेखाओं को आपसमें मिलने से जाली के समान चिन्ह होता है यह विघ्नकारक और बुरा फल तुरन्त देता है जिस स्थान पर होता है उसके शुभ फलों को नष्ट कर देता है।

चन्द्र के स्थान में कंजूसी, आत्महत्या की तरफ रुझान और अति सोच विचार वाला पुरुष तथा उदासी चिन्ता भय भाग्य हानि और दुख होने का लक्षण है।

बुध के नीचे मंगल के स्थान पर एकाएक मृत्यु या भयानक खतरे की या आत्महत्या की सूचना है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

शुक्र के पर्वत के ऊपर मङ्गल के पर्वत पर हो तो कोर्ट में विवाद होने की सूचना है।

शुक्र के स्थान पर अति कामी व्यभिचारी होने की सूचना है।

उसको जेल या पागल खाना वगैरह में जाने का भय होता है। यदि जाल चौड़ा हो तो गुप्त रीति अन्य स्त्रियों पर आसक्त रहने वाला होता है।

सूर्य के स्थान पर शक्की कुटिल मंद बुद्धि और ओछा-पन की सूचना है। और बड़प्पन का गर्व करने वाला अप्राप्य की प्राप्ति करने वाला होता है।

शनि के स्थान पर दुर्भाग्यवान तथा व्यभिचारी होने की सूचना है और जेल जाने की सम्भावना है।

बुध के स्थान पर बेईमान और चोर स्वभाव वाला बताती और कभी-कभी गबन के मामले में मृत्यु होती है।

गुरु के स्थान पर स्वार्थी उपद्रवी निर्दयी और घमंडी होने का लक्षण है और सामायजिक तथा विवाह कार्य में बाधा होती है।

अ ऊ मगल के स्थान में मौत होने की सूचना है। इसके नीचे भाग में हो तो अंतड़ियों की बीमारी और अक्सर पेट की बीमारी होती है।

रेखाओं का यह जाल जिस स्थान पर होगा उसका विरोध करके उसमें एक विलक्षणता पैदा कर देता है। यदि हमारी इच्छा शक्ति प्रबल हो तो हम बहुत कुछ इसके बुरे फलों का कम करने में समर्थ होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

उन्तीसवां अध्याय।

दाग।

बिंद, तिल, डाढ़ वाष्पाढ किसी भी जगह रेखा पर काला, नीला, लाल, सफेद, गुलाबी रंग का बिन्दु हो तो अशुभ फल दायक है। इस चिन्ह के फल को पौर्वात्य शुभ और पश्चात्य अशुभ मानते हैं।

बृहस्पति के स्थान पर काला दाग अपयश और धन हानि का सूचक है।

बुध के नीचे मङ्गल के स्थान पर मुकदमे में जायदाद नाश करने का लक्षण है। यदि दोनों हाथ पर न हो तो कुछ सम्पत्ति बच जावेगी।

चन्द्र स्थान पर दिवालिया होने का लक्षण है। हिस्टीरिया आदि के भी लक्षण हैं।

जीवन रेखा पर आंखों को कष्ट और भारी रोग का भय सूचक है।

मस्तक रेखा पर शनि के नीचे दांतों में कष्ट होवे, आँख की बीमारी और स्नायविक कमजोरी का लक्षण है।

शनि के स्थान पर बुरे कर्म होने की सम्भावना है।

सूर्य के स्थान पर अपयश और समाज में गिर जाने का भय है।

बुध के स्थान पर रोजगार में हानि की सूचना है। और बड़ा होवे तो अंगों की हड्डियों में चोट लगने की सूचना है और बेईमान, लफंगा, चालाक तथा चोर होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि ऊँच मंगल के स्थान में हो तो किसी झगड़े या लड़ाई में चोट लगने का लक्षण है।

यदि यह शुक्र के स्थान में हो तो कोई बीमारी की सूचना है जो प्रेम का परिणाम होगा और किसी परम हितैषी को ना खुश कर देने की सूचना है।

स्वास्थ्य-रेखा पर ज्वर होने की सूचना है।

जीवन रेखा पर नीले रंग का दाग जान से मार डालने का भय या जहर से मरने का भय होता है।

यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि यदि दाग सफेद हो तो शुभ सूचना है।

अर्ध चन्द्र।

सूर्य के स्थान पर चुगलखोरी की आदत और आँखों को कष्ट होता है। यदि अनामिका अंगुली के तीसरे पोर में हो तो दरिद्रता और बद किस्मती देता है।

बुध और चन्द्र के बीच में हो तो गुप्त विद्या जैसे ज्योतिष इत्यादि की शक्ति वाला होना बतलाता है।

चन्द्र के स्थान पर हो तो जल में डूबने का भय रहता है।

कोण।

चन्द्र स्थान पर कोण हो तो डूबने का भय होता है मणिबंध पर अनायास सम्मान पूर्वक वृद्धावस्था में धन प्राप्ति होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बड़ा चतुष्कोण

यह मस्तक रेखा और अन्तःकरण रेखा के बीच के भाग का नाम है।

यदि यह चिकना और रेखायें न हों तो धैर्यवान, शान्त वफादार होने का लक्षण है। यदि गदेली की तरफ चौड़ा हो तो स्पष्टवक्ता होने की सूचना है। यदि बराबर चौड़ी जगह हो तो स्वतन्त्र विचार वाला और कभी २ मूर्खता के साथ व्यवहार का होना बताता है।

यदि शनि के स्थान में ज्यादा चौड़ा हो तो नेकनामी की तरफ से बेपरवाह स्वभाव वाला होता है।

यदि सूर्य के स्थान में ज्यादा चौड़ा स्थान हो तो दूसरे की राय पर विशेष रूप से भावुक होता है।

यदि कम चौड़ा होवे तो कंजूसी और कमीनेपन का लक्षण है।

यदि बीच में कम चौड़ा हो तो लोभ कृपणता और धोखेबाजी का चिन्ह है।

यदि यह चौड़ा अधिक हो तो व्यर्थ धन का खर्च करता या फिजूल खर्च का व्यसनी पाया जाता है। यदि बुध के स्थान के नीचे चौड़ाई में कुछ फर्क पड़गया हो तो वृद्धावस्था में किफायतशारी की ओर ध्यान देगा। यदि बहुत ही कम चौड़ा हो तो तस्सुववना, तंगख्याल और धर्मोन्मा दी होने के लक्षण हैं।

यदि यह जगह तंग हो और गुरू की जगह उभड़ा हो तो अत्यंत धार्मिक विचार वाला हो साधुनक हो ज.न.का लक्षण है।

यदि अधिक तंग हो और बुध का स्थान उठा हो या अशुभ रेखायें हों तो झूठ बोलने की आदत होती है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि तंग हो बुध और मङ्गल का स्थान उठा हो तो बेई नानी करने का लक्षण है।

यदि बहुत छोटी रेखायें इसके भीतर हों तो चिड़चिड़ापन और कम बुद्धि का लक्षण है।

यदि कोई रेखा इसमें से निकल कर सूर्य-स्थान को जावे तो किसी बड़े मनुष्य की रक्षा से कामयाबी होने की सम्भावना है।

यदि कोई रेखा शाखा वाली आड़ी पड़ी हो तो बद-मिजाज और असमय पर कार्य करने वाले होते हैं।

यदि गुणक चिन्ह और हृदय-रेखा को छूता हो तो किसी व्यक्ति का भारी असर होगा पुरुष हो तो स्त्री का और स्त्री हो तो पुरुष का।

यदि यह चिन्ह मस्तक-रेखा को छूता हो तो वह व्यक्ति प्रेमी के ऊपर भारी असर पैदा करेगा।

यदि यह शनि स्थान के नीचे हो तो गुप्त विद्याओं में जैसे ज्योतिष इत्यादि में प्रेम होगा।

यदि यह न हो और जब हृदय-रेखा न होगी तभी यह न होगा। ऐसी हालत में सख्त मिजाज वाला और दिल की हरकत की कमी का लक्षण है।

यदि मस्तक रेखा के ऊपर की ओर उठी हो तो लज्जाशील होने का लक्षण है। ऐसा मनुष्य दूसरों का उपकार करने में ज्यादा प्रसन्न रहता है यहाँ तक अपनी बुराई करने वाले के साथ भी भलाई करने से आगा पीछा नहीं करता। यदि कोई काम करने से इकरार करता है तो उसे भूल जाता है। समय बीतने पर झूठा कहलाता है जो कि वह वादे को पूरा करने

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

की कोशिश करता है परन्तु अनिश्चित सम्भाव से वह पूरा नहीं कर पाता।

शुक्र के स्थान से चतुष्कोण को काटने वाली रेखायें जिस मनुष्य के हाथ में होती है उस पर किसी व्यक्ति का समय पर हृदय और मस्तक पर प्रभाव पड़ता है।

बड़ा त्रिभुज

यह जीवन रेखा, मस्तक-रेखा और स्वास्थ्य रेखा के मिलने से बनता है।

चौड़ा और साफ होतो सदाचारी, उत्साही, उदार होने का लक्षण है।

बड़ा साफ स्वच्छ रङ्ग का हो तो भाग्यवान दीर्घजीवी और हिम्मत वाला होता है।

छोटा हो तो कायरपन, चरित्र-हीनता, कमीने मिजाज का पुरुष होता है।

प्रथम कोण

जो मस्तक-रेखा और जीवन-रेखा से बना हो। यदि स्वच्छ साफ न्यून हो तो सभ्य और बुद्धिमान, शुद्ध चरित्र होने का लक्षण है। छोटा और चपटा यानी फैला हो तो असभ्य मंद-बुद्धि तथा आलस्य पूर्ण होने का लक्षण है।

यदि शनि की अगुली के नीचे हो तो कपट, धोखे बाजी पाई जाती है और यहाँ पर और भी ज्यादा कम चौड़ा हो तो कार्य में कुशल होता है परन्तु इश्क का भाव पाया जाता है। भद्दा चौड़ा हो तो कंजूस और दूसरों के हित की परवाह न करने वाले का लक्षण है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar · Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि तंग हो बुध और मङ्गल का स्थान उठा हो तो बेई ।ानी करने का लक्षण है।

यदि बहुत छोटी रेखायें इसके भीतर होंतो चिड़चिड़ा-पन और कम बुद्धि का लक्षण है।

यदि कोई रेखा इसमें से निकल कर सूर्य-स्थान को जावे तो किसी बड़े मनुष्य की रक्षा से कामयाबी होने की सम्भावना है।

यदि कोई रेखा शाखा वाली आड़ी पड़ी हो तो बद-मिजाज और असमय पर कार्य करने वाले होते हैं।

यदि गुणक चिन्ह और हृदय-रेखा को छूता हो तो किसी व्यक्ति का भारी असर होगा पुरुष हो तो स्त्री का और स्त्री हो तो पुरुष का।

यदि यह चिन्ह मस्तक-रेखा को छूता हो तो वह व्यक्ति प्रेमी के ऊपर भारी असर पैदा करेगा।

ादि यह शनि स्थान के नीचे हो तो गुप्त विद्याओं में जैसे ज्य तिष इत्यादि में प्रेम होगा।

·दि यह न हो और जब हृदय-रेखा न होगी तभी यह न होग. । ऐसी हालत में सख्त मिजाज वाला और दिल की हरकत · कमी का लक्षण है।

  दे मस्तक रेखा के ऊपर की ओर उठी हो तो लज्जा शील हो का लक्षण है। ऐसा मनुष्य दूसरों का उपकार करने में ज्यादा प्रसन्न रहता है यहाँ तक अपनी बुराई करने वाले के साथ भी ·लाई करने से आगा पीछा नहीं करता। यदि कोई काम कर.। से इकरार करता है तो उसे भूल जाता है। समय बीतने पर झूठा कहलाता है जो कि वह वादे को पूरा करने

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

की कोशिश करता है परन्तु अनिश्चित सम्भाव से वह पूरा नहीं कर पाता।

शुक्र के स्थान से चतुष्कोण को काटने वाली रेखायें जिस मनुष्य के हाथ में होती है उस पर किसी व्यक्ति का समय पर हृदय और मस्तक पर प्रभाव पड़ता है।

बड़ा त्रिभुज

यह जीवन रेखा, मस्तक-रेखा और स्वास्थ्य रेखा के मिलने से बनता है।

चौड़ा और साफ होतो सदाचारी, उत्साही, उदार होने का लक्षण है।

बड़ा साफ स्वच्छ रङ्ग का हो तो भाग्यवान दीर्घजीवी और हिम्मत वाला होता है।

छोटा हो तो कायरपन, चरित्र-हीनता, कमीने मिजाज का पुरुष होता है।

प्रथम कोण

जो मस्तक-रेखा और जीवन-रेखा से बना हो। यदि स्वच्छ साफ न्यून हो तो सभ्य और बुद्धिमान, शुद्ध चरित्र होने का लक्षण है। छोटा और चपटा यानी फैला हो तो असभ्य मंद-बुद्धि तथा आलस्य पूर्ण होने का लक्षण है।

यदि शनि की अंगुली के नीचे हो तो कपट, धोखे बाजी पाई जाती है और यहाँ पर और भी ज्यादा कम चौड़ा हो तो कार्य में कुशल होता है परन्तु इश्क का भाव पाया जाता है। भद्दा चौड़ा हो तो कंजूस और दूसरों के हित की परवाह न करने वाले का लक्षण है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि भद्दे तौर पर मस्तक-रेखा से स्वास्थ्य रेखा मिले और जीवन रेखा से अलग हो तो भयानक स्वतन्त्र कार्य करने वाला आत्मविश्वासी होता है।

दूसरा कोण

जब मस्तक-रेखा और स्वास्थ्य रेखा में बनता है। साफ शुद्ध हो तो बुद्धिमान और दीर्घजीवी होवे, चौड़ा और भारी हो तो आलसी अनुदार और घबराहट वाला हो, यदि किसी बालक के हाथ में यह कोण अच्छा न होवे यानी कम चौड़ा हो तो उसके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिये क्योंकि ऐसे बालक की बुद्धि स्वयं तीव्र होवेगी परन्तु स्वास्थ्य की तरफ से चिन्ता होगी।

तीसरा कोण

जीवन-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा से बनता है। यदि यह स्वच्छ हो और नीचे जीवन-रेखा के पास हो यानी मिला न हो तो स्वास्थ्य अच्छा होगा। दीर्घ आयू और कारवार में क़ामयाबी का चिन्ह है।

यदि अधिक पास हो तो शरीर कमजोर धन इकट्ठा करने की इच्छा प्रबल होगी।

यदि अधिक पास हो तो आलस्य, अशुद्ध विचार निर्बलता इत्यादि गुण होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तीसवां अध्याय

चिन्ह-विचार

गुरु का चिन्ह

गुरु का चिन्ह गुरु के स्थान में हो तो अतिशय गुरु के गुणों के होने का परिचय है।

यदि यह चिन्ह शनि पर्वत पर हो तो तत्वज्ञान में यश पाने की इच्छा होती है।

यदि यह चिन्ह सूर्य के स्थान में हो तो वाक्-शक्ति राजनीतिज्ञ होने की शक्ति देता है।

यदि यह चिन्ह बुध के स्थान में हो तो शक्ति और यश विज्ञान या वाक्शक्ति देता है।

यह ऊँचे मङ्गल के मदान में फतह की इच्छा का दाता होता है।

शनि का चिन्ह

यह चिन्ह गुरु के पर्वत पर हो तो गुप्त विद्याओं में प्रेम होवे।

यह चिन्ह शनि के पर्वत पर हो तो अतिशय अध्ययन गुप्त विद्याओं के करने वाला होता है।

शनि का चिन्ह गुरु पर्वत पर हुनर की तरफ प्रवृत्ति और अशुभ हाथ में गुप्त विद्या का दुर्व्यवहार कराता है।

यह चिन्ह बुध के स्थान पर उदास बुद्धि का दाता होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यह ऊँच मंगल के मैदान में उदार चित्त और जहर देकर बदला लेने का औगुण देता है।

शुक्र के स्थान में हो तो आस्वाभाविक प्रेम की सूचना है।

बुध का चिन्ह

यह चिन्ह शनि के पर्वत पर हो तो गणित और भूगोल विद्या का प्रेमी होता है।

यह चिन्ह सूर्य के स्थान पर अद्भुत धन-प्राप्ति की शक्ति देता है।

यदि यह चिन्ह बुध के स्थान पर हो तो उसके गुणों को बढ़ता है।

यह चिन्ह ऊँचे मङ्गल के स्थान में व्यापार में काम-याबी की फतह की इच्छा और ...आ में प्रवृत्ति देता है।

शुक्र का चिन्ह

यदि गुरु के स्थान में हो तो घनिष्ठ स्थायी प्रेम का चिन्ह है।

यदि शनि के स्थान में हो तो प्रेम में निराशा का लक्षण है।

शुक्र का चिन्ह सूर्य के स्थान पर हुनर और कविता में प्रेम उत्पन्न करता है

यह चिन्ह बुध के स्थान पर बुद्धियुक्त प्रेम दाता है।

ऊँच मंगल के स्थान में और जबरदस्ती प्रेम के मामले में प्रदान करता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चन्द्र का चिन्ह

यदि चन्द्र का चिन्ह गुरु के स्थान पर हो तो अभिलाषायें अतिशय सोच विचार से पूर्ण नहीं होतीं।

यदि यह चिन्ह शनि के पर्वत पर हो तो गहरी चिन्ता में डूबे रहने वाला होता है।

यह चिन्ह सूर्य के जगह पर शिल्प विद्या तथा साहित्य में बड़े विचार प्रदान करता है। कभी कभी बेतुका अतिशय विचार देता है।

यह चिन्ह बुध के जगह पर उन युक्तियों का देता है जिससे वह व्यक्ति तथा उसके साथी धोके में आजाते हैं।

ऊँच मंगल के जगह में उअपागलपन की निशानी है।

मंगल का चिन्ह

यदि शनि के पर्वत हो तो धर्मोन्माद से धर्म पर बहस करने वाला होता है।

मंगल का चिन्ह सूर्य स्थान पर रंगसाजी चित्रकारी में निपुणता और सैनिक विषय लेखन शक्ति प्रदान करता है।

यह बुध के जगह पर डांका चोरी को तरफ प्रवृत्ति करता है।

ऊँच मंगल के जगह में उसके गुणों को बढ़ाता है या घटाता हैं जैसा ऊँचा नीचा यह जगह होवे वैसा ही गुण करता है।

सूर्य का चिन्ह

यदि यह चिन्ह शनि के पर्वत पर होवे तो वाक् शक्ति और सुंदर ताका प्रेमी होना है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सूर्य का चिन्ह सूर्य जगह पर यश और धन शिल्प विद्या द्वारा प्राप्त कराता है।

यह चिन्ह बुध के जगह में हो तो ज्योतिष वेदान्त इत्यादि में उन्नति का दाता है।

ऊँच मंगल के जगह में दिखावा, घमण्ड, ओछापन देता है।

खड़ी रेखा गुरु के पर्वत पर

एक साफ, लाल रेखा तर्जनी और शनि के अंगुली को अलग करते हुए गुरु के पर्वत पर हो तो अंतड़ियों के कमजोर होने की सूचना है और यदि एक सरल रेखा गुरु के पर्वत पर हो तो यशस्वी और कामयाबी का लक्षण है। और दो हों तो कार्यों में बाधा होने का क्योंकि शक्ति दो भाग में लगती है।

यदि एक रेखा गुरु के पर्वत पर हृदय-रेखा को काटे तो दुर्भाग्य प्रेम का लक्षण है।

कई छोटी-छोटीरेखायें इस पर्वत पर होवें तो हानी और अभाग्य के लक्षण हैं।

इस पर्वत पर बहुत रेखा रहना अपयश की सूचना है।

खड़ी रेखा शनि के पर्वत पर

यदि एक रेखा इस पर्वत पर हो और किसी दूसरी आड़ी रेखा से कटी न हो तो अति भाग्यवान होने का लक्षण है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दो रेखा यहाँ हों तो वृद्धावस्था में कार्य में सफलता बड़े परिश्रम के साथ होती है।

यदि कपी रेखायें हों तो दुर्भाग्य का लक्षण है जितनी ज्यादा रेखायें होंगी उतनाही खराबी होने के मार्ग हैं और दरिद्रदायक समझना।

कई रेखायें इस पर्वत से हृदय रेखा को काटे तो गठिया का चिन्ह है।

सीढ़ी नुमा रेखा यानी एक दूसरे से जुड़ी हुई गुरु के पर्वत की तरफ झुकी हुई हों तो जनसाधारण में धीरे धीरे इज्जत हासिल होती है।

खड़ी रेखा सूर्य के पर्वत पर

एक खड़ी रेखा पर्वत पर हो तो धन और यश की प्राप्ति होवे। दो खड़ी रेखा हैं थोड़ी कामयाबी हो। कारण यह कि शक्ति दो तरफ बटी होती है। यदि वे दो रेखा काफी लम्बी हों तो धनी होता है।

यदि कई रेखाहों तो उन्नति में बाधा क्योंकि उस व्यक्ति की शक्तियाँ कमी तरफ लगी होती हैं।

आयुष्य रेखा यनी जीवन रेखा से निकल कर सूर्य के पर्वत को रेखा जावे तो भाग्यवान होता है।

खड़ी रेखा बुध के स्थान पर

यह रेखा इस स्थान पर एकाएक भाग्य उदय की सूचना है। यह रेखा गहरी हो तो विज्ञान की तरफ विशेष रूचि देती है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तीन से छै रेखा तक हों तो वैद्यक की तरफ रुचि की द्योतक होती है। यदि स्त्री के हाथ में ऐसी ही रेखायें हों तो नर्स होती है।

कभी मिली जुली रेखायें हों तो चपलता और विज्ञान की रुचि होती है।

कई मिली रेखा हृदयरेखा के पास हों तो अतिशय मूर्खता युक्त दान की सूचना है। आड़ी रेखा हो और उसके अग्रभाग पर यव का चिन्ह हों तो गुप्त चिंता से व्यग्र रहती है।

खड़ी रेखा ऊंच मंगल के स्थान पर

एक रेखा हो तो हिम्मत वार होता है।

कई रेखा हों तो उग्र स्वभाव प्रेम में निर्दयता और सीने की बीमारी होती है।

यदि आड़ी रेखा होवे तो शत्रुओं की सूचना है। और जितनी रेखा हों उतने ही शत्रु यदि लम्बी हों तो शत्रुओं का विशेष जोर होता है।

यदि यह रेखा स्वास्थ्य रेखा को काटे तो तन्दुरुस्ती खराब होगी। यदि सूर्य रेखा को काटे तो धन हानि यदि भाग्य रेखा को काटे तो जीवन के व्यवसाय में हानि यदि जीवन-रेखा को काटे तो कोई सम्बन्धी दोषी होता है।

मंगल के पर्वत पर छोटी२ आड़ी रेखायें हों तो झगड़ा बखेड़ा उत्पन्न करती हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

खड़ी रेखा चन्द्र के स्थान पर

एक रेखा होवे तो बुराई करने की सूचना है, यदि यह नीचे को चली जाय तो गठिया की सूचना है।

कई बेतरतीब रेखायें में हों तो उदासी, स्वप्नदोष इत्यादि का भय होवे। गदेली से आड़ी रेखायें चन्द्र स्थान को आवें तो समुद्र-यात्रा की सूचक है।

कई बेतरतीब रेखायें हों और अन्य कई आड़ी रेखाओं से कटी हों और हृदय रेखा पर द्वीप हो तो व्यभिचारी के लक्षण हैं और ऐसी रेखा ऊपरी भाग में हो तो डामरिया और यदि गहरी होकर जलसा बनायें तो भारी बीमारी अन्तड़ियों में होगी।

और यदि यही चिन्ह नीचे के भाग में होवे तो ब्लैडर में कष्ट और डायबेटीज का लक्षण है।

यदि चन्द्र पर्वतपर एक आड़ी रेखा हो तो उसको आने वाले कष्टों की सूचना और उनके उपाय मालूम हो जांयेगे। यदि तीन से अधिक आड़ी रेखायें होवें तो उसको रोजगार सम्बन्धी स्वप्न होंगे जो सत्य हुआ करेंगे। चन्द्र के पर्वत पर से आड़ी रेखा शुक्र पर्वतपर जावे तो मनुष्य बहुत और अनेक काम करता है।

खड़ी रेखा शुक्र के स्थान पर

आड़ी रेखायें स्त्री के हाथ में पुरुष के, और पुरुष के हाथ में स्त्री के प्रभाव को जीवन में कुछ अर्से तक होने की सूचना है। और यदि किसी द्वीप में हो तो प्रेम नाजायज रखने का होना बताया जाता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि बहुत सी रेखायें सीधी आड़ी एक दूसरे को काटती हुई होवें तो अतिकामी होने का लक्षण है।

शुक्र के पर्वत पर तारा हो और उसमें से कोई रेखा निकल कर आयु रेखा को पार कर आगे निकले तो माता, पिता, काका, भाई की मृत्यु की सूचना है, ऐसी रेखा जब भाग्य रेखा को काटे तो धनकी हानि समझना और जो मिल गई हो तो मृत पुरुषों की सम्पत्ति का लाभ होगा।

शुक्र के पर्वत पर आड़ी टेढ़ी बहुत सी रेखायें हों तो चंचल, विषयी विलासी होता है।

मणि बंध से निकल कर एक ऊर्ध्व रेखा शुक्र के पर्वत पर हो तो सन्तति सम्पत्ति का उत्तम सुख होता है।

शुक्र के पर्वत पर से एक टेढ़ी रेखा निकल कर आयुष्य तथा मस्तक रेखा को छेद कर गई हो तो कुटुम्बी प्रियजनों की मृत्यु या उसकी स्त्री का मरण होता है।

शुक्र के पर्वत पर छोटी २ रेखायें हों तो वह पराधीन होता है और बहुत समय तक स्वतन्त्र नहीं हो पाता।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

इकतीसवां अध्याय।

पर्वत।

इन पर्वतों को एक ग्रह का नाम दिया हुआ है और वही उस ऊँचे उठे हुऐ स्थान का मालिक ग्रह माना गया है। जैसे आकृती नम्बर ११ में तर्जनी के मूल के नीचे जिस स्थान पर 'गु' अक्षर लिखा है वह गुरु का पर्वत है और उस जगह का मालिक बृहस्पति है। इसी तरह मध्यमा के नीचे 'श' अक्षर जिस जगह है, वहाँ शनि का पर्वत है और उस स्थान का मालिक शनैश्चर है! तथा अन्नामिका अंगुली के नीचे जिस जगह पर 'सु' अक्षर लिखा है, वही सूर्य की जगह है और इस जगह का मालिक सूर्य है वैसे ही कनिष्टका के मूल के नीचे 'बु' अक्षर जहाँ है बुधकी जगह है और बुधके नीचे जहाँ 'म' अक्षर है वह मंगल की जगह है। मङ्गल के नीचे 'च' अक्षर है इस जगह को चन्द्र का पर्वत कहते हैं। चन्द्र के सामने ही अंगुष्ठ मूल के नीचे जिस जगह 'शु' अक्षर है वह शुक्र के आधिपत्य का शुक्र पर्वत है। शुक्र के ऊपर जहाँ 'म' अक्षर लिखा है वह मंगल का दूसरा पर्वत है, और इसका भी मालिक मङ्गल ग्रह है।

यह पर्वत की कल्पना पाश्चात्य देश में अतिशय प्रचलित है और फल के कहने में बहुत ही महत्व दिया है।

गुरु।

गुरु का पर्वत अच्छा उठा हो तो कुटुम्ब में प्रीत उच्चाभिलाषी, यश की इच्छा वाला और आत्माभिमानी होता है। सत्य वक्ता, चतुर पंडित पुत्र, पौत्र, धन, धान्यादि होता।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि यह पर्वत नीचे दबा हो तो स्वार्थी और दुराचारी होता है। चर्म समवायु रोग से मुक्त तथा शुभ गुण रहित होता है।

यदि पर्वत अधिक उठा अहंकार अन्याय के हो तो के लिये अधिकार पाने की इच्छा वाला होता है और बड़े २ अक्षर लिखता है। स्वार्थी, ठग, धूर्त, अपव्ययी, निर्दयी होता है।

गुरु का पर्वत शनी की तरफ झुका हो तो आत्मनिष्ठा-वान होता है।

शनि।

शनि का पर्वत अच्छा उठा हो तो शान्त स्वभाव मितभाषी गुप्त विद्याओं का ज्ञाता, सदाचारी, स्नेही, एकान्त वास प्रिय, सदाचारी खेती बगीचा का शौक रखने वाला स्त्रीयों में प्रीत कम करने वाला होता है। अक्षर छोटे नजदीक लिखने वाला होता है।

यदि यह पर्वत नीचे दबा हो तो बकवादी व्यभिचारी और झूठा होता है। दुखी, जुआरी, व्यसनी, मूर्ख और अल्पायू होती है।

यदि यह पर्वत उठा हो तो बात रोग, दंत रोग, बद हजमी होती होती है। निष्ठुर नीच, अपवित्र, आत्महत्या चाहने वाला उदर वायू तथा मूत्राशय रोग युक्त होता है।

शनि का पर्वत सूर्य की ओर झुका हो तो शिल्प कार्य में उदासीन होगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सूर्य ।

यदि सूर्य का पर्वत अच्छा उठा हो तो कारीगरी में प्रवीण, साहित्यवेत्ता, विद्वान लेखक, देशभक्त, पराक्रमी, चतुर, उच्चाभिलाषी, उदर राज्यमान प्रतिष्ठा आदि गुणों से युक्त होता है। यश की इच्छा प्रेमी, शुद्धता के साथ सौन्दर्य प्रियता और दयालु होता है और सामान्य अक्षर स्पष्ट लिखता है।

सूर्य का पर्वत नीचे दबा हो तो सुस्त, मंद, दुश्चरित्र बुद्धि, निर्दयी विलासी होता है। यदि यह रेखा अच्छी हो तो वह गुण नहीं होता पूर्वोक्त शुभ फलों से रहित होता है।

यदि सूर्य का पर्वत अधिक उठा हो तो बकवादी, गर्वीला, डाही लोभी कान का कच्चा, आराम तलब और हुनर जानने वाला होता है।

बुध ।

यदि बुध का पर्वत अच्छा उठा हो तो साहसी बुद्धिमान, विनोदी, बहादुर घूमने और दृश्य देखने का शौकीन, धैर्ययुक्त, कष्ट की चिन्ता न करने वाला और छोटे अक्षर लिखता है। वैद्य व ज्योतिषी, वाचाल व कारीगर अल्पावस्था में विवाह सुन्दर स्त्री युक्त, वाणिज्य कर्मकारक।

यदि बुध का पर्वत नीचे दबा हो तो रोज नाखुश रहने वाला होता है। और विपरीत फल होता है।

यदि बुध का पर्वत अधिक उठा हो तो प्रपंची, ठग व लुच्चा झूठा झगड़ा लगाने वाला होता है।

यदि बुध का पर्वत मंगल की तरफ झुका हो तो स्वयं प्रसन्न रहने वाला होता है, परन्तु दूसरे के दुखों को पर्वाह

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नहीं करता है यदि सूर्य की ओर झुका हो तो वक्तत्वकला और चिकित्सा में निपुण होता है।

मंगल।

पहिला मङ्गल का पर्वत बुध के पर्वत के नीचे ज्यादा नीचा उठा हो तो धर्म पर निष्ठा नहीं होती। अन्यायी और सैनिक होता है। कोने निकले हुए अक्षर लिखता है।

मङ्गल का स्थान उच्च हो तो उदार, प्रतापी पराक्रमी, हठी, युद्ध प्रिय व्यवसायी, बली, क्रोधी, विचार रहित, गृह कलह के कारण दुखी होता है।

यदि वह पर्वत नीचे दबा हो तो साहस और शान्ति का अभाव होता है, दूसरा मङ्गल का पर्वत गुरु के पर्वत के नीचे उठा हो तो साहसी, धैर्यवान आत्म विश्वासी होता है।

यदि अधिक उठा हो तो संकोची और जिद्दी झगड़ालू होता है।

यदि दोनों ही पर्वत ऊँचे उठे हों तो डरपोक और छिछरा होता है रुधिर विकार तथा अग्निमान्द्य युक्त होताहै।

यदि बुध के पर्वत की ओर झुका हो तो सलाह देने वाला होता है।

चन्द्र।

चन्द्र का पर्वत अच्छा उठा हो तो सदाचारी, दयालु, कल्पना करनेवाला साँगीत प्रिय और सुन्दर दृश्य देखने का शौकीन, रसिक, मधुर भाषी, लेखक दयावान, श्रमशील, थोड़ी उमर में विवाह कारक, मातृ सुख, कृषी, स्त्री धनधान्यादि युक्त

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

होता है। कविता के लिखने का गुण होता है। उल्टे अक्षर यानी दाईं ओर से बांई ओर को मुड़े हुए लिखता है।

यदि दबा हुआ हो तो प्रकृति फल, कल्पना शक्ति का अभाव; क्षणिक बुद्धि वाला और असन्तोषी होता है।

यदि अधिक उठा हो तो आलसी, आत्म हत्या का अभिलाषी, उदासीन, झूंठा और व्यसनी होता है। शुक्र तथा उदर सम्बन्धी रोग होता है।

जब मणिबन्ध की तरफ झुका हो तो दिन में स्वप्न देखने वाला और हवा में महल बनाने वाला होता है।

शुक्र

शुक्र का पर्वत अच्छा उठावदार हो तो सदाचारी कारीगर, स्नेही, जीतेन्द्रिय विलासी उदार प्रभावशाली आत्म-भिमानी चिकित्सक होता है, परोपकारी संगीत का प्रेमी अक्षर सुन्दर साफ सुडोल और एक समान लिखता है।

यदि अधिक उठा हो तो व्यभिचारी, निर्लज्ज अहंकार विषयी का लक्षण है और अक्सर कानसे सुनाई कम पड़ता है या कर्ण रोग होता है।

यदि इस पर्वत का अभाव हो तो सुस्थ और स्वार्थी होता है। विपरीत फल और शुक्र रोग वाला होता है।

यदि मणिबन्ध की ओर झुका हो तो नाचने का शौक होता है।

राहु

गुरु और शुक्र के बीच में राहु का स्थान है। उच्च हो, तो चिंता शील, तार्किक गुप्त भेदों को छिपाने वाला, उपदेशक,

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

विश्वास, घाती, धोखेबाज नीच से गति नीच कर्म से धन प्राप्त करने वाला होता है।

भिन्न हों तो बड़ोंकी सम्मति नाश करने वाला, झगड़ालू अपव्ययी उदर इन्द्रीय रोग युक्त होता है।

दो पर्वतों का फल

यदि गुरू का पर्वत दबा हो तो और शनि का उठा हो तो दूसरों से घृणा करने वाला होता है।

गुरु का पर्वत और चन्द्र का पर्वत उठा हो और बुध का पर्वत दबा हो, तो सोचेगा खूब पर सफल नहीं होगा। गुरू और मङ्गल का पर्वत उठा हो तो लुच्चा और दिखावे के लिये प्रसन्न होगा पर एकान्त में उदासीन होगा।

शनि और गुरु के पर्वत उठे हों तो विचारवान, मशहूर और सज्जन होता है।

यदि ऐसा ही चिन्ह स्त्री के हाथ में हो तो हिस्टीरिया का रोग होता है।

शनि और बुध के पर्वत उठे हों तो लुच्चा होता है और एकान्त में सुस्त उदास और समाज में प्रसन्न चित्त वाला होता है।

शनि और मङ्गल के पर्वत उठे हों तो क्रोधी विषयी वृथाभिमानी होता है।

शनि और शुक्र का पर्वत उठा हो तो वेदान्ती, गुप्त विद्या का प्रेमी भोगी और धार्मिक होता है।

शनि व चन्द्र का पर्वत उठा हो तो स्वाभिमानी और काल्पनिक होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सूर्य और बुध का पर्वत उठा हो तो वक्ता, समझदार शास्त्र का जानने वाला और बुद्धिमान होता है।

सूर्य, मङ्गल या शनि का पर्वत उठा हो तो मिलनसार परोपकारी और शान्तिमय होता है।

सूर्य और गुरु का पर्वत उठे हों तो न्यायप्रिय और दयावान् होता है।

बुध और गुरु के पर्वत उठे हों तो समाज का प्रेमी तथा खेल तमाशे का प्रेमी होता है।

बुध मङ्गल के पर्वत ही केवल उठे हों तो मजाक पसंद करने वाला होता है

बुध और शुक्र के ही पर्वत उठे हों तो मजाकी और प्रसन्न चित्त वाला होता है।

बुध और मङ्गल के पर्वत उठे हों तो आनन्दी, लड़कों का मित्र और पशु-पक्षी का शौकीन होता है।

मङ्गल और सूर्य उठे हों तो सच्चा और सदाचारी और ज्ञानी होता है।

शनि और मङ्गल के पर्वत उठे हों तो द्वेष करने वाला है।

दोनों मङ्गलके पर्वत उठे हों तो भूमिका लाभ होता है।

चन्द्र और बुध का पर्वत उठा हो तो भाग्यवान और बुद्धिवान होता है।

चन्द्र और शुक्र का पर्वत उठा हो तो काल्पनिक और सुख भोगने वाला होता है।

CC-0:Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चन्द्र और शनि का पर्वत उठा हो तो डरपोक और काल्पनिक शक्ति कम होती है।

गुरु और शुक्र का पर्वत उठा हो तो चापलूसी को पसंद करने वाला और उन्नति करने वाला होता है

बतीसवाँ अध्याय
रोजगार व धन्धा

अक्सर लोग यह आ आकर पूछते हैं कि इस लड़के को किस धंधे में लगाया जाय कैसी शिक्षा दीजाय, कि जीवन में लाभ उठाये अक्सर यह होता है कि लड़के की रुचि किसी दूसरे कार्य की है और उसके माता-पिता आपनी रुचि के माफिक अन्य कार्य में लगाते हैं जिससे अक्सर असफलता होती है और लड़का जीवन में असंतुष्ट रहता है।

एक तो मनुष्य की यह प्रकृति है कि जो जिस कार्य को करता है, उसमें सन्तुष्ट नहीं रहता।

दूसरों को देखकर ललचाता है और कहता है कि फलां शख्स मजे में है। हमारा भाग्य खराब है जो इस धंधे में पड़े हैं। शुरू में जब लड़के गाने ,बजने चित्रकारी इञ्जी

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नीयरिंग आदि किसी में प्रकृति दिखावे, तभी उनके योग्य, धंधा चुन लेना चाहिये। यदि किसी तरफ प्रवृत्ति देखने में न आवे तो हस्त परीक्षा द्वारा उनके धन्धे का पता लगाना चाहिये। इससे लड़का जीवन में खुश रहेगा और उसकी मानसिक शक्ति स्वभाव और स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा और असन्तुष्ट न रहेगा।

जिसका हाथ चौड़ा, मजबूत, रेखायें कम हों अंगुली चौड़ी, उनके सिर गोल, पतले, चपटे, चौरस हों तो उस बालक को मल्लाह, सैनिक, कृषक, इञ्जीनियर या ऐसा कार्य हो, जिन में शारीरिक महनत के साथ मानसिक-महनत भी हो।

जिसके अंगूठा मजबूत, मस्तक रेखा में, सीधा, हथेली चपटी, बुध का अंगुली साची, गोल, पतली और चपटी और नाखून बड़े होंगे, वह लड़का व्यवसाय करेगा।

जिसके हाथ में गुरु की अंगूली या पर्वत आगे बढ़े हों वह हकूमत करना चाहेगा। वह जन साधारण कार्य पाठशाला मन्दिर इत्यादि का कार्य करेगा और जहाँ रहेगा, वहाँ लीडर बनने को उत्सुक रहेगा।

यदि शनि की अंगुली और शनि का पर्वत उन्नत हो तो गणित, कृषी, पैमाइश खदान का कार्य जमीन व जायदाद का प्रबन्ध करने वाला होगा।

यदि सूर्य की अंगुली या पर्वत प्रधान होगा तो कारीगर रसायनिक, चित्रकार डाक्टर और डन्टिस्ट होगा।

यदि मङ्गल का पर्वत प्रधान होगा तो सैनिक मल्लाह शिकारी पशु चिकित्सक होगा। ऐसा लड़का गाड़ी हाँकना, साईसी, मोटर ड्राइवरी, घोड़ सवार, इत्यादि का कार्य तथा इमारत बनाने का कार्य भी करेगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि बुध की अंगुली या पर्वत उन्नत हो तो वह रोजगार, विज्ञान, दलाली, अध्यापक, मुनीम, मुन्शीगीरी, इत्यादि करेगा।

यदि चन्द्र पर्वत उन्नत हो तो लिखने का कार्य, उपन्यास नाटक, कविता इत्यादि का लेखक होगा।

चिकित्सक

छोटी छोटी तीन खड़ी रेखायें हों, अंगुलियाँ लम्बी हों और प्रथम गाँठें पुष्ट हों शुक्र, चन्द्र पर्वत उत्तम हों, तो वैद्य हकीम, डाक्टर होवे।

जानवरों का वैद्य

हथेली कड़ी अंगुलियों के सिरे मोटे हों। सूर्य अच्छे सुन्दर हों।

धाय

हाथ मजबूत पतला या चपटा, बुध पर रेखाये हों शुक्र चन्द्र के पर्वत उठे हुए हों।

रसायन-वेत्ता कीमियागर

दो या तीन छोटी खड़ी रेखा बुध के पर्वत पर होवे।

मन्त्रज्ञ

यदि एक सीधी रेखा कनिष्ठा के सर्व पोरों पर दौड़ी हो, त्रिभुवन या सफेद दाग मस्तक रेखा पर बुध के पर्वत के नीचे हो।

रंगने वाला

शुक्र और बुध का पर्वत उठा हो।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नाटक में दुखान्त पार्ट लेने वाला

यदि मस्तक रेखा की शाखायें बुध पर्वत को गई हैं ; यदि भाग्य रेखा के आखीर में दो विभाग हों, शनि की अंगुली प्रधान हो और पर्वत सूर्य की तरफ झुका हो।

नाटक में सुखान्त पार्ट लेने वाला

जब मस्तक रेखा बुध की तरफ मुड़ी हो, जब मस्तक रेखा जीवन रेखा से जुदा हो, बुध का पर्वत ऊंचा हो और बुध की अंगुली का नख छोटा हो

सूत्र धार

सुन्दर, गोल, पतली, चपटी, सूर्य की अंगुली हो और दूसरी अंगुलियां करीब करीब एकसी हों और अलग हों, लम्बी हों अंगूठा बाहर को निकला हो।

सट्टे पर लगाने वाला जुआड़ी

अनामिका मध्यमा के क़रीब बराबर हो और साफ सूर्य रेखा हो या मस्तक रेखा नीचे को गिरी हो।

व्यापारी

एक शाखा मस्तक रेखा के सिर से बुध के पर्वत पर गई हो।

एक रेखा भाग्य रेखा से बुध के पर्वत पर गई हो।

एक रेखा सूर्य पर्वत पर जीवन रेखा से गई हो।

दलाल या ठेकेदार

जब एक शाखा जीवन रेखा से सूर्य के पर्वत पर जावे।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

व्यापारी जूट लकड़ी और खान के पदार्थ

जीवन रेखा से एक शाखा उठे हुये शनि के पर्वत पर जावे।

धर्माचार्य

गुरु का पर्वत उठा हो और वहीं एक खड़ी रेखा हो, गुरु शनि के बीच में लम्बी हृदय-रेखा गई हो।

ब्रह्मज्ञानी वेदान्ती

गुरु की अंगुली प्रधान हो, चन्द्र का पर्वत पुष्ट हो। बुध की अंगुली नोंकीली हो, मस्तक-रेखा लम्बी ढलवां हो।

गंधी

बुध और शुक्र का पर्वत उठा हो।

दर्जी

लम्बी अंगुलियां और सूर्य की अंगुली का पहला पोर अच्छा हो।

शराब बेचने वाला

बुध और शुक्र के पर्वत उठे हों

हस्त रेखा ज्ञाता तथा ज्योतिषी

स्वच्छ सोलोमनि रंग हो।
बुध, शुक्र, शनि के पर्वत उठे हों।

ज्योतिषी

जिसके हाथ की अंगुलियां चौकोर तथा लम्बी पोर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

को पुष्ट । बुध शनी का स्थान ऊंचा और मनोहर चन्द्र और रवि स्थान दोष रहित, युग्म, मातृ और उर्ध्व रेखा सबल हो तथा त्रिकोण इत्यादि शुभ रेखाओं से युक्तहाथवाला ज्योतिषी होता है ।

अन्तर्ज्ञानी व दिव्यदृष्टि वाला

अंगुलियां अलग अलग हों ।

बुध का पर्वत उठा हो औ उसकी अंगुली नोंकीली हों ।

गुरु की अंगुली नोंकीली हों

आन्तरिक बुद्धि की रेखा हो ।

सेवक

अंगुली छोटी हों ।

भाग्य रेखा गायब हों ।

हथेली अंगुलीयों से लम्बी हों ।

राज

सूर्य की अंगुली लम्बी, सीधी प्रथम पोर लम्बा हो ।

मस्तक रेखा सीधी और शनि की अंगुली लम्बी हो

राज दूत

गुरु का पर्वत ऊंचा, मस्तक-रेखा दु:शाखी हो ।

बुध की अंगुली लम्बी नुकीली हो और नक्ष चमकते हों ।

कारीगर

गुरु का पर्वत ऊंचा हो, सूर्य की अंगुली सीध

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लम्बी और प्रथम पर्वत हो, सूर्य रेखा उत्तम हो, चन्द्र पर्वत उठा हो, गुरु व शनि की अंगुलियों से कुछ फर्क होवे।

गवैया

सूर्य रेखा हों और सूर्य की अंगुली नुकीली हो और शुक्र पर्वत पुष्ट होवे।

गाने बजाने वाला

स्वच्छ सूर्य रेखा हो और शुक्र के कण हों, शुक्र पर्वत ऊंचा हो अंगुलियां कोमल हों, बड़ा हाथ वाला छोटा बाजा और छोटे हाथ वाला बड़े बाजे का शौक करता है।

हुंडीवाला

शनि व सूर्य की अंगुली करीब २ बराबर हों हाथगोल पतला, चपटा हो और मस्तक रेखा सीधी हो।

खेती करने वाला

लम्बी मोटी अंगुली सूर्य शुक्र और चन्द्र पर्वत उठे होवें, हथेली चौड़ी हो शनि की अंगुली लम्बी और दूसरा पोर लम्बा होवे।

जादूगर

चन्द्र पर्वत पर त्रिभुज हो या शनि का पर्वत उठा हो और उस पर त्रिभुज होवे।

गणितज्ञ

अंगुलियाँ चौकोनी लम्बी दोहरी गाँठें और पहला दूसरा पोर पुष्ट हो हथेली पतली हो और मस्तक रेखा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सीधी लम्बी शनि की अंगुली भारी हो और दूसरा पोर ज्यादा लम्बा हो या शुक्र के पर्वत पर त्रिभुज होवे।

तत्वज्ञानी

बुध की अंगुली इतनी लम्बी हो कि अनामिका अंगुली के नख तक होवे।

साहित्यज्ञाता

अच्छी मजबूत बुध की अंगुली हो और प्रथम पोर लम्बा हो और मस्तक रेखा अच्छी होवे, अंगुलियां चौकोर और मुलायम सिरे होवें।

साहित्य—समालोचक का नख छोटा गुरु की अंगुली प्रधान और चन्द्र पर्वत बहुत कम पुष्ट होवे।

उपदेशक

गुरु की अंगुली प्रधान हो और अँगूठा लम्बा तथा उत्तम होवे।

हुनर मंद

सूर्य की अंगुली नोकीली हो या सूर्य के पर्वत पर नक्षत्र होवे।

वकील

मस्तक रेखा लम्बी शखा युक्त सिरे पर हो, मस्तक रेखा जीवन रेखा अलहिदा हो, बुध का पर्वत उत्तम होवे अंगुली अंगूठा लम्बा होवे।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मुखतार

शनि की अंगुली लम्बी हो और गुरु की अंगुली सीधी होवे तो किसी तरफ से मुखतार होता है।

अधिकारी

तर्जनी और कनिष्टका अंगुली अति उत्तम हो और मंगल का मैदान ज्यादा ऊंचा न होवे।

बाबू

सूर्य का पर्वत अधिक उठा हो और अनामिका अंगुली के नीचे हो, हटा हुआ हो।

लेखक

सुन्दर मस्तक रेखा हो, या शुक्र के कण हों; सूर्य रेखा दोनों हाथ में उत्तम हो और सूर्य का पर्वत भी ऊंचा होवे और मस्तक रेखा शाखा दार चन्द्र पर्वत पर झुकी हो।

शिक्षक

गुरु सूर्य बुध शनि के पर्वत उठे हों, अंगुलियां लम्बी हों और आगे का हिस्सा मोटा हो, मध्यमा का दूसरा पर्वत लम्बा हो और सूर्य की रेखा अच्छी होवे।

यदि शुक्र का पर्वत उठा हो तो गाना बजाना रंगसाजी माली, घड़ साजी, जौहरी, बाजों को बनाने इत्यादि का कार्य करेगा।

जैसे लड़कों के हाथ देख कर पता चलता है वैसे लड़कियों का भी हाथ देख कर निश्चय किया जा सकता है और सफलता प्राप्त होगी।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

एडीटर

नाखून लम्बे होते हैं और चौड़े कम होते हैं।

एडीटर के हाथ में शुक्र के कण होते हैं।

व्याख्यान दाता

लम्बी मस्तक रेखा।

बुध के पर्वत पर त्रिभुज।

बुध की अंगुली लम्बी होती है, अनामिका अंगुली के नाखून तक पहुँचती है।

जज न्यायाधीश

हथेली बड़ी अंगुलियों की गाँठें लम्बी गुरु की अंगुली सीधी और बुध का पहला पोर लम्बा होता है।

मजिस्ट्रेट

लम्बी गांठ दार अंगुलियां, बुध का पहला पोर लम्बा और मंगल का पर्वत उत्तम होता है।

बरिस्टर

मस्तक रेखा लम्बी शाखा युक्त हो अथवा मस्तक रेखा जीवन रेखा से जुदा हो, सूर्य-रेखा लम्बी होवे।

मल्लाह

चन्द्र पर्वत ऊंचा हो, पहला पोर अंगूठे का त्तम हो, हथेली चौड़ी होवे।

सैनिक

मंगल का पर्वत बुध के पर्वत के नीचे अधिक उठा हो और वहीं पर त्रिभुज होवे।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अंगुली अक्सर छोटी अंगुलियां गोल, पतली, चपटी या चोरस हो गुरु की उँगली लम्बी व प्रधान होवे, अंगूठा भारी हो बुध का पर्वत पुष्ठ होवे।

फौजी सिपाही के हृदय की रेखा छोटी होती है और शनि का पर्वत प्रधान होता है।

इन्जीनियर

स्वच्छ मस्तक रेखा हो और मंगल, सूर्य व बुध के पर्वत।

शस्त्र क्रिया वाला

सुन्दर सूर्य रेखा का होना।

कुछ लम्बी खड़ी रेखा का बुध पर्वत पर होना। मंगल पर्वत पर बुध के पर्वत के नीचे त्रिभुज होवे।

मंगल और बुध का पर्वत जोरदार हो या उठा हो, अंगुलियां लम्बी पतली और चपटी और दूसरी गाँठे मजबूत हों।

वैद्य

उत्तम मस्तक रेखा और सुन्दर सूर्य रेखा हो, कुछ रेखायें बुध के तीसरे पर्व से दूसरे पर्व पर हो, बुध का पर्वत अच्छा हो और उसपर छोटी रेखा हो।

अन्य रेखायें।

अनायास धनपाना

चन्द्र स्थान, से कोई एक टेढ़ी रेखा लाल रंग की बुध स्थान को जाय तो गाढ़ा हुआ या किसी खान इत्यादि से विशेष धन प्राप्त होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कोई रेखा मस्तक रेखा से निकल कर सूर्य के पर्वत पर जावे तो अकस्मात धन मिलता है।

शराबी

चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो मद्यपी होता है।

जीवन रेखा में से कोई रेखा शुक्र पर्वत की ओर जावे तो मनुष्य ऊंचे स्थान पर से गिरता है।

संसारिक वासनाओं से मुक्ति

शुक्र पर्वत पर कोई चिन्ह न हो तो मनुष्य वासना विहीन होता है।

नीतिवान

मस्तक रेखा सीधी और स्पष्ट होवे, और साथ ही साथ अँगूठा सीधा और उठा हुआ होवे तो मनुष्य न्याय प्रिय होता है।

बाल्यावस्था में माता पिता कीमृत्यु

भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तों माता या पिता में से किसी कीमृत्यु होती है।

अनुचित प्रेम

दोनों हाथों में हृदय रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो नाजायज प्रेम का चिन्ह है जो प्रायः कष्टदायक होता है।

रिश्तेदार या निकट सम्बंधीसे प्रेम

हृदय रेखा पर बुध पर्वत के नीचे द्वीप का चिन्ह हो तो किसी सम्बन्धी से प्रेम होना बताती है।

CC-0 Courtesy Shri K.S.Parihar -Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मुकद्दमे बाजी में जायदाद का बर्बाद होना

दोनों हाथों में मंगल पर्वत पर काला धब्बा, तिल का होना या चिन्ह हो, तो मुकदमाबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

अकस्मात धन की हानि

बुध पर्वत पर काला तारा (तिल) हो तो एकाएक धन की हानि होती है।

विवाह में धन प्राप्ति

गुरु के पर्वत पर गुणा या तारा का चिन्ह हो तो ब्याह में धन मिलता है और सुखमय ब्याह होता है।

प्रेम में सुख

गुरु के पर्वत पर गुणा या तारे का चिन्ह हो और स्त्री के हाथ में मङ्गल रेखा हो, तो प्रेम में सुख होता है।

दीर्घायु

जीवन रेखा गहरी, लम्बी, स्वच्छ गुलाबी रङ्ग की हो और तीनों, मणिबंध रेखायें अच्छी तरह विकसित हो तो मनुष्य दीर्घायु होता है।

शान्त जीवन

सुन्दर भाग्य रेखा गुरु और शनि पर्वत के बीच में पूर्णरूप से हो तो शान्त जीवन होता है।

रोजगार में लाभ और यश

यदि अनामिका अँगुली से कनिष्ठा अँगुली में ज्यादा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ऊर्ध्व रेखा हो तो रोजगार से लाभ तथा बड़ा ही यश वाला मनुष्य होता है।

जेल

यदि शुक्र और मंगल के पर्वत पर चतुष्कोण हो या शनि के स्थान में जार हो या अंगुलीमें चौथा पर्व हो तो जेल होता है।

प्रेम हो पर विवाह न हो

प्रभाविक रेखा चन्द्र पर्वत पर हो और भाग्य-रेखा में न मिले तो प्रेम होता है परन्तु व्याह नहीं होता है।

धन नाश

लगातार धन हानि के लक्षण ये हैं। मंगल का मैदान खोखला सूर्य रेखा आड़ी रेखा से कटी हो या कई जगह टूटी हो या द्वीप सूर्य रेखा पर हो या स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप हो या भाग्य रेखा पर द्वीप हो या जीवन रेखा से रेखायें नीचे की ओर गई हों तो धन नाश होता है।

प्रेम में जीवन बर्बाद होने का लक्षण

भाग्य रेखा टूटो या नक्षत्र वाली हृदय रेखा में शनि के पर्वत के नीचे मिले, लहरदार मस्तक रेखा हृदय रेखा के आखिर में मिले दुर्बल या नक्षत्र युक्त भाग्य रेखा या सूर्य रेखा हो, या दो हृदय रेखा हों।

अन्य स्त्रियों से प्रेम

अंगूठे की जड़ और पितृ रेखा के भीतर कितनी आड़ी रेखायें हों उतनी स्त्रियों से कष्ट होगा और नाजायज प्रेम की सूचना है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जल यात्रा

मणिबन्ध रेखा से एक रेखा शुक्र पर्वतकी ओर निकल कर चन्द्र पर्वत की ओर जावे तो जल यात्रा नहीं होती है।

भलाई के लिये परिवर्तन

भाग्य रेखा टूटी हो और दूसरी स्वच्छ भाग्य रेखा उसके टूटने से पहले शुरू हो, तो भाग्य में उन्नति होती है

स्त्री की शुद्ध चरित्रता

स्त्री के हाथ में मङ्गल रेखा हो तो शुद्ध चरित्र वाली स्त्री होती है। या अनामिका के पहले पोर में क्रास हो, गुरु का पर्वत ऊँचा हो तो पतीव्रता होती है।

विदेश में मृत्यु

जीवन रेखा अन्त में दो हिस्सों में बँटी हो और उसमें से एक शाखा चन्द्र पर जावे तो विदेश में मृत्यु होती है।

अकाल मृत्यु

जीवन रेखा दोनों हाथ में छोटी हो या टूटी हो या मस्तक रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

व्यभिचार का आरोप

दोनों हाथों में भाग्य रेखा पर द्वीप हो तो व्यभिचारी होने का लक्षण है तथा अन्य व्यक्तिसे लुभाये जानेका चिन्ह है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अविवाहित जीवन

विवाह रेखा ऊपर यानी कनिष्ठिका अंगुली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

दीर्घायु

जिसकी उंगली में पर्व (पोर) से भिन्न स्थान में पर्व हों और लाल रंग की उंगलियां हों, वह मनुष्य दीर्घजीवी होता है।

रोग

हस्त परीक्षा द्वारा रोगों का भी पता चलता है, इसके गुप्त भेद भी ज़ाहिर हो जाते हैं। जैसे हाथ में बहुत रेखा हो चन्द्र का पर्वत बहुत नीचा हो, अंगुली टेढ़ी हो तो रोगी वहमी होगा और कष्ट कम हो तो उसको अधिक बतलावेगा अंगूठा छोटा हो, बुध पर्वत न हो, बुध की उंगली कमजोर हो या छोटी हो तो फिर तन्दुरुस्ती का लौटना कठिन होगा। ऐसे रोगी को कितना ही उत्साहित करो कि अच्छे हो जावोगे परन्तु वह निरुत्साही वाक्य कहेगा कि मैं अच्छा नहीं हो सकता हूं। यदि बुध का पर्वत उत्तम हो तो शीघ्र अच्छा होगा क्योंकि आशा और प्रसन्नता उसमें रहती है। यह एक साधरण बात है कि जो लोग प्रसन्न चित्त रहते हैं वे तन्दुरुस्त रहते हैं, इसलिये सदा प्रसन्न रहने की और वह विश्वास करो कि अच्छा हो जाऊँगा, ऐसी सलाह हमेशा देनी चाहिये।

जिस पुरुष के मँगल का पर्वत उत्तम होता है और अँगूठा मजबूत होता है उसमें साहस अधिक होता है और हर तरह के कष्ट बर्दास्त करता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

इसके द्वारा वंश-परम्परा की बीमारी का भी पता लग जाता है,जिस रोग का डाकृर पता नहीं लगा सकते इस विद्या द्वारा.वैद्य को रोगों के पता लगाने में सहायता मिल सकती है। इसके द्वारा यह भी मालूम होगा कि बीमार विषयी है अथवा बद परहेज है।

एक हाथ पर रोग का चिन्ह और दूसरे पर न हो तो उसका नतीजा संदेहात्मक समझना चाहिये। जैसे किसी मनुष्य के हाथ में रेखाओं से अल्प मृत्यु से मरने का योग है लेकिन दूसरे हाथ पर न हो तो उसको अरिष्ट समझना चाहिये, परन्तु मृत्यु न होगी।

किसी मनुष्य की रेखा पर काला विन्दु हो तो उसकी मृत्यु जहर देने से होगी, लेकिन यदि यह चिन्ह दूसरे हाथ में न हो तो ज़हर चढ़ जायगा मृत्यु न होगी। जब दोनों हाथ में ऐसा ही चिन्ह हो तभी मरेगा।

आंख में रोग

मस्तक रेखा या हृदय रेखा पर सूर्य पर्वत के नीचे द्वीप का या काला दाग या विन्दु हो तो आँखों में रोग होता है।

गले का रोग

गुरु पर्वत के नीचे मस्तक रेखा पर द्वीप हो तो गले में कष्ट होता है।

हिस्टीरिया

हथेली नरम हो, जंजीर के समान सूक्ष्म रेखायें हों हाथ का बाहरी भाग सिकुड़ा होवे।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बदहज़मी

नखों पर धब्बे हों और चन्द्र पर्वत बहुत उठा होवे।

बुखार

हाथ का मध्य भाग गर्म या शुष्क होवे या अनामिका अंगुली के पिछले भाग पर किसी पोर पर काला निशान हो।

जलन्धर

चन्द्र पर्वत पर नक्षत्र चिन्ह हो।

चन्द्र पर्वत का नीचे का हिस्सा उठा हुआ, कई रेखाओं से कटा हुआ, उसी जगह एक नक्षत्र हो, तो जलन्धर रोग होगा।

फोड़ा फुन्सी

स्वास्थ्य रेखा टापू हो और मस्तक रेखा घूमी हो।

पसली छाती में शूल

आयु रेखा पर टापू हो उसमें से शाखा निकल कर गुरु के पर्वत पर जावें, तो पेट या पसली में दर्द होवे।

रीढ़ का रोग

आयु की रेखा पर शनि के नीचे टापू होवे।

पागल पन

चन्द्र पर्वत पर क्रास हों या मस्तक रेखा लम्बी ढालू हो, शनि का पर्वत न हो या शनि की अंगुली टेढ़ी हो।

मृगी रोग

अंगली टेढ़ी नोंकीली हों और नीचे के पर्वत दबे हों

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

खून की खराबी

लाल नख हों या छोटे अर्ध चन्द्र हों ।

वंश परम्परागत रोग

आयु रेखा पर यव हो !

आंत का रोग

मुलायम हाथ, धब्बेदार नाखून हो या स्वास्थ्य रेखा टूटी हो ।

हृदय रोग

हृदय पर काले दाग हो या बड़ा द्वीप हो या पीली दागदार हो ।

दांत में कष्ट

शनि का पर्वत अधिक उठा हो या इस पर्वत पर अधिक रेखायें हो, भाग्य ,रेखा या स्वास्थ्य रेखा लम्बी लहरदार हो और दूसरे पोर सब अंगुलियों में लम्बे हों, दाँत में कष्ट होता है ।

टांग में कष्ट

शनि पर्वत अधिक उठा हो, या रेखायें अधिक हों मस्तक रेखा शनि पर्वत के नीचे टूटी हो ।

कमल

बुध का पर्वत अधिक उठा हो या अधिक रेखाये हों या एक दाग या नक्षत्र चन्द्र पर्वत पर हो आरोग्य रेखा पर तारा या टापू हो और वही काला दाग हो ।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आत्म हत्या करने वाला

जिस व्यक्ति के चन्द्र पर्वत पर क्रास हो और रेखा के अन्त में भी क्रास हो, तो वह आत्महत्या करता है ।

मस्तक रेखा और आरोग्य रेखा मिली हों और जीवन रेखा दूसरी रेखाओं से कटी हो और शनि का पर्वत ऊंचा हो, तो आत्म हत्या करता है ।

बीच की उँगली का पहिला पर्व लम्बा होकर चौकोर हो और बुध या मंगल के पर्वत पर क्रास हो, तो आत्म हत्या करेगा ।

उपरोक्त लक्षणों में से कोई भी लक्षण दिखाई पड़े तो समझ जाना चाहियेकि यह व्यक्ति आत्महत्या करेगाया अपने दोष से किसी के द्वारा शस्त्र से मारा जायगा ।

फिजूल खर्च वाला

अंगूठे का पहिला पोर पीछे मुड़ा हुआ, उंगलियां लचीली, अक्सर जीवन और मस्तक रेखाऐं ज्यादा चौड़ी हों और मस्तक रेखा झुकीहो, सूर्य रेखा और भाग्य रेखा अच्छी न हों और सूर्य रेखा के पर्वत साफ न हों, तो ऐसे चिन्ह वाला फिजूल खर्च होता है ।

नाम और कामयाबी

यदि गुरु के पर्वत पर नक्षत्र हो और दूसरा नक्षत्र पर उम्दा सूर्य रेखा के आखीर में एक साफ भाग्य रेखा मणि बन्ध से शनि के पर्वत तक या गुरु के पर्वत तक या सूर्य के पर्वत पर खतम हो, एक साफ रेखा हो या छोटी भागती रेखा सूर्य के पर्वत पर हों मस्तक और हृदय रेखा साफ और

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लम्बी हों सिवा शनि और चन्द्र के अन्य पर्वत उठे हुए हों तो नाम और कामयाबी होती है।

स्त्री जन्य दुःख

मंगल का मैदान चन्द्रकी तरफ नीचा हो चन्द्र पर्वत के नीचे का हिस्सा उठा हो,या ज्यादा रेखाएँ हो या एक गुणाका चिन्ह इसी पर्वत पर हो या जीवन रेखा चन्द्र पर्वत के नीचे तक गई हो तो उसको स्त्री जन्य दुःख होता है।

जीवन रेखा पर नीचे नक्षत्र हो या स्वास्थ्य रेखा बहुत तंग, रंगी हुई अक्सर टूटी हुई या मस्तक रेखा पर काले दाग हों या हृदय रेखा पर काले या नीले दाग हों तो ऐसे व्यक्ति बुखार से ग्रसित होता है।

मणिबन्ध पर पहिली रेखा पर नक्षत्र हो या त्रिभुज या कोण के भीतर गुणा का चिन्ह हो एक लम्बी दूसरी रेखा मस्तक रेखा की हो तो ऐसे व्यक्ति को धन किसी वसीयत से मिलता है।

यदि पहिली अंगुली अधिक लम्बी, लम्बे सख्त नाखून अंगूठे का पहिला पोर उभडा हुआ,गुरु का पर्वत अधिक उठा हुआ गहरी सीधी मस्तक रेखा हाथ के इस पोर से उस पोर तक या हृदय रेखा गायब हो, इनमें से कोई लक्षण होतो वह व्यक्ति निर्दय स्वभाव वाला होता है।

यदि कोई छोटे पीले नाखून, हृदय रेखा गायब हो या अंगुली या टेढ़ी खास कर चौथी अंगुली, तो वह व्यक्ति दगाबाज होता है।

यदि हथेली पतली मुलायम हो लम्बी गठीली अंगुली भीतर झुकी हुई, मंगल बुद्ध, गुरु के पर्वत नीचे हों बड़ा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चतुष्कोण तंग हो या मस्तक-रेखा जीवन रेखा से आरम्भ से दूर तक मिली हो या हाथ पर बहुत रेखा हों तो मनुष्य डर पोक होता है।

निकृष्ट भारी हाथ टेढ़ी अंगुलियां खास कर चौथी अंगुली बुध का पर्वत ज्यादा उठा हो और अधिक रेखाएँ हों और नक्षत्र हों तो चन्द्र पर्वत के नीचे का भाग बहुत उठा हो गुरु का पर्वत बिल्कुल न हो तो वह व्यक्ति चोर होता है।

हाथ में बहुत रेखा वाली स्त्री विधवा होती ही है, तर्जनी के ऊपर की रेखा टूटी हो तो विधवा होवे।

तेंतीसवाँ अध्याय

हाथ

हाथ के मुख्य दो भाग होते हैं-चौड़ा और लम्बा लम्बे हाथ वाला पुरुष मानसिक शक्ति का प्रयोग विशेष करने वाला होता है।

और चौड़े हाथ वाला शारीरिक शक्ति का मजबूत पुरुष होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हाथ के निम्न लिखित सात भेद होते हैं।

(१)समकोण (२)चमसाकार (३)दार्शकिन ४ कलाकार या व्यवसायिक (५) निकृष्ट (६)आदर्श वादी या विपस (७) मिश्रित।

सम कोण हाथ

संसार के हाथ सात प्रकार के होते हैं जिसमें से समकोण हाथ सबसे श्रेष्ठ है और उपयोगी भी है। इसको समकोण इसलिये कहते हैं कि यह चोकोर शक्ल का होता है और इसमें कलाई और अंगुलियों के बीच में, हथेली और अंगुलियां अलग २ नाप में समकोण की तरह होतो हैं। अंगुलियां सपाट मुलायम और नीचे हथेली के पास सुडोल होकर जड़ी होती हैं। मध्यमा अंगुली के नीचे की गाँठ आकार में कुछ बड़ी होती है इस प्रकार के हाथ में प्रायः नाखून छोटे और चौकोर होते हैं।

उस प्रकार के स्वभाव वाले मनुष्य स्वभाव से ही नियमित व्यवहार वाले स्वभाव के कोमल, मिलनसार, उत्स हा सबके साथ नम्रता का बर्ताव करने वाले आज्ञाओं का पालन करने वाले असभ्यता के व्यवहार को सहन न करने वाले होते हैं। बिन अधिकार वह किसी को बीच में बोलता हुआ देख चिढ़ जाते हैं और स्वयं भी किसी के बीच में नहीं बोलते हैं। वे झगडालू नहीं होते हैं शान्ति तथा समझौते को विशेष चाहते. ऊंचा पद पाने की इच्छा करते हैं। अभिमा नहीं होते और उन पुरुषों को जो असभ्य है अभिमानी हैं तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। उनमें कल्पना शक्ति का लगभग अभाव सा होता है परन्तु अपने लक्ष साधन में एकाग्र और उत्साही होने के

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कारण प्राय अपने सभी कार्यों में सफल हो जाया करते हैं। वे क्रियात्मक अध्ययन तथा सत्य विज्ञान से विशेष प्रेम करते हैं। घर के कर्तव्यों से भी स्नेह रखते हैं। वे प्रतिज्ञा का पालन करने वाले, मित्रता को निभाहने वाले उद्देश्य के पक्के और व्यापारमें नीतिमान तथा सच्चे होतेहैं। वे प्रेममें दिखावा नहीं करते। अंगलियां यदि गठीली और समकोण के आकार की हों तो सत्यवादी और शान्त स्वभाव वाला होताहै जिनकी अंगुलियां चिकनी और मस्तक रेखा झुकी हो वे तो वे सुन्दर वस्त्र पहिनने वाले साफ सुथरे होते हैं। तर्क शक्ति अधिक होती है। और अपना बहुत सा समय किसी बात को सिद्ध करने में व्यय कर देते हैं, यही एक दोष है। यदि कनिष्ठ अंगुली टेढ़ी होती है तो यह दोषकम होते हैं। उस दोष के छोड़ने के लिये ऐसे हाथ वाले से कहना चाहिए।

चमसाकार हाथ

चमसाकार हाथ की अंगुलियां मुड़ी हुई टेढ़ी सीधी होती हैं। हथेली किसी हाथ में कलाई के पास अधिक और अंगुलियों के पास कम चौड़ी तो किसी में अंगुलियां के पास अधिक और कलाई के पास कम चौड़ी होती है।

यदि चमसाकार हाथ अंगुलियों के मूल में चौड़ा हो तो वह विशेष कार्य शील तथा व्यवहार कुशलता को जाहिर करता है। यदि ऐसा पुरुष आविष्कार करता है तो अपनी बुद्धि उस आविष्कार को कार्य रूप में परिणित करने के लिए लगाता है और जीवन उपयोगी पदार्थों का निर्माण करता है। यदि हाथ मणिबन्ध की ओर ज्यादा बड़ा होता है तो ऐसे पुरुषों की बुद्धि संसार के कार्यों में उन्नति करने का तरफ

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

होती है यदि धार्मिक होगा तो नये प्रकार से पूजा या कीर्तन का प्रचार करने का अभिलाषी होगा और अपनी थोड़ी सी भक्ति से संसार भर में हल-चल मचा देने का साहस रखता है। ऐसे व्यक्तियों का संसार में होना आवश्यक है क्योंकि उन्नति के मार्ग के पथ प्रदर्शक होते है।

यह मजबूत और शख्त दोनों तरह का होता है मजबूत और सख्त हाथ में अंगुलियों का गाँठदार होना मनुष्य के परिश्रमी और उद्यम शील होने का लक्षण है। वे कभी सुस्त नहीं बैठते, कुछ न कछ करते ही रहते हैं। यदि शरीर से कुछ न करेंगे तो मन से गम्भीर बातें सोचेंगे। एक क्षण वेक नहीं बैठ सकते। वे साहसी और प्रयत्न शील होते है। स्वतंत्र कार्य करने की शक्ति होती है। स्वतंत्र बिचार शक्ति ही उनकी दूसरी के विचारों की बिरोध करने के लिए बाध्य करती है।

सरल हाथ के मनुष्य शासन करने के इच्छुक होते हैं। वह किसी के दबाव में रहना पसन्द नहीं करते हैं और लड़ाई झगड़ा करने वाले, साहसी योधा और बिप्लव कारी होते हैं ऐसे लोगों में यह आद्दत होती है कि जहाँ चार आदमी बैठे हों वहाँ पहुँच कर एक नई बात छेड़ देते है। जिससे उन लो में खल बली पड़ जाती हैं। और ऐसे लोग कुछ न कुछ नवीनां विचार तथा नव जीवन के अग्रणी होते हैं।

अंगुलियां गाँठदार हों तो मनुष्य परिश्रमी और स्वभाव से सरल, क्रोध कम करने वाले और बोल चाल के नम्र होते हैं। शरीर फुर्तीला होना है। घोड़े की सवारी शिकार खेलना, निशान मारना दौड़ने कूदने के काम वे अधिक पसन्द करते हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि अंगुलियां गाँठदार न होकर चिकनी हों तो दस्तकारी को अच्छा समझते हैं। और दूसरोंको सलाह देतेहैं परन्तु यह स्वयं कोई कुशल कलाकार नहीं होते। यदि अंगुलियां चिकनी होने के साथ लम्बी भी हों तो पेड़, पौधे, खेती के काम में रुचि अधिक पाई जाती है।

दार्शनिक हाथ।

दार्शनिक हाथ प्राय लम्बा गठीला, कोणाकार बीच से झुका हुआ होता है। अंगुलियां हड्डी ली, जोड़ उभड़े हुए तथा नख लम्बे होते हैं। इस प्रकार का हाथ सहज ही में पहचाना जा सकता है।

इस प्रकार का व्यक्ति बिखरी हुई सम्पत्ति को संग्रह करने के स्थान पर बिखरे हुए गुणों को संग्रह करता है। और तीव्र अभिलाषा वाला होताहै। ये स्वभावके विलक्षण मायाकी सीमा से भरे होते हैं। और उनके विचार पवित्र और उच्च होते हैं। स्वाभिमानी होनेके कारण यह गम्भीर अधिक रहते हैं। घनिष्ट मित्रों की संख्या अधिक नहीं रहती, धनी कम देखे गए हैं। धनी हुए तो धन को परोपकार में लगाने वाले होते हैं। मनुष्य जाति से प्रेम करना उनका स्वाभाविक गुण होता है। विचारों के इतने स्वतंत्र और स्पष्ट होते हैं। कि जब तक पूरा प्रमाण न मिले तब तक ये शंका करते रहते हैं। ऐसे हाथ विशेषतया ब्राह्मण योगी तथा ईश्वर साक्षात करने वालों के देखे जाते हैं। इस प्रकार के हाथों में यह ध्यान देने योग्य है कि उंगलियों को उन्नति ग्रन्थ विचार वान मनुष्यों का मुख्य चिन्ह समझी जाती हैं। जब कि समतल, चिकनी नोकीली उंगलियाँ उसके विपरीत होती हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

इस प्रकारके हाथ वाले किसी खास विषयके विद्यार्थी होते हैं और अपने आपको दूसरे लोगों से बिलकुल भिन्न रखना पसन्द करते हैं। और यदि प्रचारक हुए तो असाधारण बातों का प्रचार करते हैं ऐसे लोग शान्त गूढ़विचार वाले साव धान साधारण शब्दों के उपयोग में भी समझ कर बातें करते हैं।

कलाकार या व्यवसायिक हाथ

हाथ की अंगुलियाँ ऊपर सिरे पर पतली, मूल में भरी हुई और मोटी होती हैं। हाथ की लम्बाई चौड़ाई मध्यम प्रकार की होती है। इस प्रकार के हाथ वाले अपने विचारों में निर्बल होते हैं। धैर्य बिलकुल नहीं होता और इतनी जल्दी थक जाते हैं कि अपने संकल्प को क्वचित ही पूरा कर सकते हैं। किसी काम के करने में शीघ्रता करना और फिर उसे बिना समाप्त किए ही छोड़ बैठना उनका स्वभाव होताहै। किसी काम का परिणाम नहीं सोचते। मन में विचार आते ही हर काम करने को उद्यत हो जाते हैं। वे बातचीत करने में चतुर होते हैं। और किसी भी विषय के अर्थ के शीघ्र ही समझ जाते हैं। यह बहुत बोलने वाले होते हैं। इन पर दूसरों का प्रभाव बहुत जल्दी पड़ता है और छोटा २ बातों पर नाराज हो जाते हैं। तनिक सी बात को बढ़ा देने का गुन इनमें अधिक होता है। स्वभाव चञ्चल विचार अस्थिर होता है। क्रोध आने पर अपने आपे से बाहर हो जाते हैं। और क्रोधावेश में कुछ भी ज्ञान नहीं रहता है। जो मुंह पर आताहै कह डालते दूसरों के साथ उदार होते हैं। परन्तु जहाँ अपने लाभ और

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

स्वार्थ का प्रश्न आया वहाँ रूखे स्वार्थी बन जाते हैं प्रेमके बारे में यहाँ तक दृढ़ होते हैं कि यदि किसी से प्रेम हो जाय तो अन्त तक निभाते हैं। कोई भी व्यक्ति उन्हें साधारण सी बातोंमें चिढ़ा सकता है। ये दान में शीघ्र रुपया देने के लिए प्रभावित किए जा सकते हैं। यदि हाथ लम्बे मुलायम तथा भारी हो तो धोखा देना झूंठ बोलना मक्कारी धूर्तता आदि बुरे लक्षण पाए जाते हैं।

ये अपनी वासनाओं को मिटाने के लिये ही किसी के साथ सम्बन्ध करते हैं गृहस्थी से प्रेम कम होता है और अपना बहुत सा समय मित्रों के साथ चुहल करने में व्यतीत करना अधिक पसन्द करते हैं। कर्ज लेकर देना नहीं आता बातों का जमा खर्च अच्छा करते हैं।

हाथ गाँठ दार हो तो सुन्दरता के प्रेमी होते हैं दुष्ट भाव से नहीं। देखने में सुन्दर आकार वाला मोटा, छोटा हो तो धनी होने की लालसा लगी रहेगी और अनेकों प्रकार के प्रयत्न करते हैं। परन्तु भाग्य न होने के कारण सब प्रयत्न विफल होता है। और कभी २ मुसीबत में फँसजाते हैं ऐसे हाथ वाली स्त्रियाँ खुशामद पसन्द और प्रेम के बारे में अज्ञानी और उतावली होती हैं और बिना समझे बूझे प्रेम करने लग जाती हैं।

निकृष्ट हाथ

निकृष्ट हाथ आवश्यकता से अधिक मोटा भारी भद्दे आकार वाला होता है। हाथ खुरदरा अंगुलियाँ और नाखून छोटे और रेखाएं भी कम, प्रायः अंगूठा छोटा, मोटा और लग-भग चौकोर होता है ऐसे हाथ मन्द बुद्धि और दुष्टप्रकृति

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चालों के देखे गए हैं। और उनकी बुद्धि पाशविकता की ओर प्रभावित रहती है स्वभाव के क्रोधी, कम हिम्मत वाले क्रोध आने पर जो मुंह में आता है, कह डालते हैं।

सदा इच्छाओं के दास बने रहते हैं। और वासनाओं की तृप्ति में पशुओं का सा वर्ताव करते हैं। जितनी अधिक चौड़ी हथेली होगी उतना ही अधिक पाशविक शक्ति का प्रभाव होगा। ऐसे हाथ वाले खाना पीना, सोना मरना जानते हैं उनको किसी प्रकार की शुभ इच्छाएँ नहीं होती।

आदर्शवादी या विषम हाथ

आदर्शवादी हाथ देखने में सुन्दर लम्बा, तंग अंगुलियाँ सिरे पर अधिक पतली और उतनी ही नोंकदार नाजुक सिरेपर उभरी हुई और नाखून लम्बे बादामी बनावट के होते हैं। अंगुलियाँ ऊपर से पतली और लम्बी होकर नीचे की ओर से मोटी होती हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले काल्पनिक, तरह तरह के मनसूबे बांधने वाले होते हैं पर कुछ कर नहीं पाते, प्रबन्ध करने में अयोग्य होतेहैं। समय का उपयोग नहीं जानते इससे उद्यमी नहीं बन सकते। परिश्रमी के साथ काम करने का साहस नहीं करते। स्वभाव के शान्त और सन्तोषी होते हैं उन पर जो थोड़ा भी कृपा करता है उनका वे झट भरोसा कर लेते हैं। न तो वे व्यवहार कुशल न तर्क शील होते हैं। उनको समय का, आज्ञाओं का नियमों का बिल्कुल ध्यान नहीं रहता वे दूसरों के प्रभाव में जल्द आजाते हैं, शीघ्र भरोसा कर लेते हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

और धोखा खाने पर बहुत दुःख मानते हैं। राग, रंग शोक दुःख का बहुत प्रभाव पड़ता है। रंगों से प्रेम होता है। इष्टदेव को पूरा अर्जना, भजन संगीत समारोह उत्सव इत्यादि में प्रभावित होते हैं।

देवता से श्रद्धा और आराधना में तत्पर रहते हैं। कट्टर धार्मिक और इष्टदेव को प्रत्यक्ष देखने के अभिलाषी होते हैं।

मिश्रित हाथ

मिश्रित हाथ में प्रायः सभी हाथों के लक्षण होते हैं। पहिली उंगली नोंकदार, दूसरी झुकी हुई टेढ़ी. तीसरी समकोण या अन्य प्रकार की हो. इस हाथ में समकोण चमसाकार या दार्शनिक सभी के लक्षण होते हैं।

ऐसे हाथ वालों का किसी काम को बिना पूरा किये छोड़ देना और फिर दूसरे काममें लग जाना स्वाभाविक गुण है। उससे सफलता उससे दूर होती है।

यदि हाथ की उंगलियाँ समकोण होकर ऊपर से नोंकदार होनी धोखे बाज और दूसरों की आँख में धूल डाल कर स्वार्थ सिद्ध करने वाले होते हैं। निकृष्ट और व्यवसायिक हाथ के लक्षण से बे परवाह, दूसरे के सहारे काम करने वाला होता है। वे किसी विषय पर बात कर सकते हैं, पर उनका प्रभाव सुनने वाले पर नहीं पड़ता।

हाथ

जो हाथ स्पर्श करने से गरम मालूम हो, जो हाथ तांबे के ऐसा लाल हो। जिस हाथ में पसीना नहीं निकलता हो।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जिस हाथ की सब उंगलियाँ मिलाने से जिनमें छेद न दिखाई पड़े। जो हाथ चिकना और चमकदार दीख पड़ता हो जो हाथ मास से भरपूर भरा हुआ हो। जो हाथ बहुत बड़ा नहीं १—की आकृति का हो तो गले में कमजोरी हो, २—की आकृति का हो तो छाती में, ३—की आकृति का हो तो फेफड़े में, ५—की तरह की हो तो काम में कमजोरी हो। ६—की आकृति का हो तो दिल में रक्त गति बराबर न हो। ८, ६, १० की तथा शंक के आकार का हो तो पक्षाघात लकवा होता है।

हाथ देखने वाले का कर्तव्य

शुद्ध पवित्र होकर और प्रार्थना करके हाथ देखना भावी फल के कहने में सावधानी से रखनी चाहिए किसी की आशा नष्ट कर देना उसके प्राण ले लेने के बराबर है। जिस तरह वैद्य अपने रोगी को उसके अच्छा हो जाने की कठिनाई को कभी नहीं बतलाता है परन्तु यही कहता रहता है कि वह अच्छा हो जायगा और इस बात के विश्वास से वह रोगी अक्सर अच्छा हो जाता है। इसी तरह किसी मनुष्य के चित्त में सफलता प्राप्त कर सकने का विचार करा देने से सफलता प्राप्त करने में महान सहायक होता है और बलवती आशा बढ़ जाती है। उसको अपनी शक्ति पर विश्वास बढ़ जाता है। और हिम्मत धैर्य और कार्य करने की कोशिश में वृद्धि होती है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चौंतीसवाँ अध्याय

हाथ दिखाने वाले का कर्तव्य

हस्त परीक्षा कराने वाले को चाहिए कि भविष्य फल वक्ता के उपदेशों को मन लगाकर सुने, जो उसके अनुकूल हो और जितना साहस प्राप्त हो. उतना स्वीकार करे तथा अच्छे विचारों को ग्रहण करे और आने वाली अशुभ घटना के लिए पहिले से ही ऐसा प्रयत्न करे कि उसका परिणाम ज्यादा अशुभदायक न हो तथा शुभ फल जो आने वाले हैं उनको भी याद रखें। सर्व चिन्ता को चित्त से हटा कर हाथ दिखाना चाहिए।

मन एकाग्र कर काम, । क्रोध, लोभ मोहादि से रहित होकर उनको फूल, पुष्प, दक्षिणादि लेकर अति विनय पूर्वक सद्गुरु के पास जाकर पदार्थ भेंट कर याने सन्मुख रखकर। अपना हाथ दिखाते समय हाथ साफ कर या जल से हाथ धोकर दिखाना चाहिए।

परीक्षा करते समय किसी तीसरे व्यक्ति को अपने पास नहीं रहने देना चाहिए, न साथ में लेकर जाना चाहिए, क्यों-कि. परीक्षक और अधिकारी की एकाग्रता में बाधा पड़ेगी। उसके अलावा कोई दुर्गुण की बात होगी तो तीसरे व्यक्ति पर प्रकट हो जायगी और स्वयं अधिकारी भी दोष पूर्ण सत्य के अस्वीकार कर देगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आवश्यकीय नियम

हस्त रेखा देखने वालों को चाहिए कि पहले पुरुष के दाहिने हाथ और स्त्री के बाएं हाथ से शुभा शुभ फल कहें। साथ ही साथ पुरुष के दाहिने भाग और स्त्री के बाएं भाग के सभी लक्षणों को देखना चाहिए। यदि पुरुष के दाहिने अंग में चोट लगने का फोड़े का लाल या काला तिल लसा, घाव का चिन्ह हो तो शुभ और स्त्रियों के उक्त लक्षण बाएं भाग में हों तो शुभ जानना चाहिए

पहले मणिबन्ध उसके बाद दोनों हाथों का देखना और पृष्ठ भाग देखना। उसके बाद हथेली और उसके ऊपर की रेखा अंगुष्ठ, अंगुली अंगुलियों के नख के लक्षण क्रमसे देखना।

स्त्री स्वभाव वाले पुरुष का बांय हाथ और पुरुष स्वभाव वाली स्त्री का दाहिना हाथ देखना चाहिए क्योंकि स्त्री स्वभाव वाले पुरुष का बांयाँ हाथ दाहिने से बली और पुरुष स्वभाव वाली स्त्री के दहिना हाथ बाए की अपेक्षा बली होता है

बालक चौदह वर्ष का होता है तब तक उसकी प्रकृति स्त्री स्वभावानुसार होती है। इससे बालक के बाम हस्त को प्रधान और दक्षिण हस्त को गौण मान कर परीक्षा करनी चाहिए।

फल कहने में शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। खूब सोच विचार कर सब लक्षणों को मिलाकर कहना चाहिए।

स्थिर चित्त होकर हाथ देखना चाहिए। ऐसा न करने से भूल होने की सम्भावना रहती है। क्योंकि मनुष्य का हाथ मनुष्य की जन्म कुण्डली है। ठीक तौर से देखा जाय तो ठीक फल कहोगे। इससे दिखाने वाले और देखने वाले दोनों

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

को सावधान और एकाग्रचित्त होकर हस्तरेखा का निरीक्षण करना आवश्यक है।

मनुष्य के बाएँ हाथ से लक्ष्मी, राज्य, वाहनादिक का विचार और दाहिने हाथ से ज्ञान, ऐश्वर्य पुत्रादि का विचार करना चाहिए।

बड़े प्रातःकाल, सायंकाल, रात्रि में मध्यान्ह में, जहाँ हँसी हो यात्रा समय, सवारी में और रास्ते में बिना फलफूल या द्रव्य के नहीं देखना चाहिए।

धूर्त, मूर्ख, पंडित और दरिद्री को सभा में देखना निषेध है। सुन्दर स्निग्ध विहंसित मुख वाले सुन्दर पुरुष का हाथ देखना उचित है। विवाह, रोग, मृत्यु इत्यादि की रेखाओं को दोनों हाथों से ध्यान पूर्वक देखना चाहिए। हाथ स्वाभाविक दशा में होना चाहिए। हाथ मजबूती से पकड़ो और रेखा उस तरह दबाओ कि रक्त प्रवाह क । तब मालुम होगा कि रेखा किस तरफ बढ़ने वाली।

पूर्व रेखाओं पर मत प्रकट करने के पहिले हाथ की बनावट पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। हथेली सख्त है या कोमल। अंगूठे का ऊर्ध्व भाग सीधा, मुड़ा लम्बा, छोटा या ऊपर से नोंकदार या गोल है और अंगुलियां किस ओर झुक रही हैं।

देवता तथा तीर्थ

हथेली के अग्र भाग में लक्ष्मी, मध्य में सरस्वती और मूल में ब्रह्म देव का स्थान है। अंगूठे के नीचे ब्रह्म तीर्थ, कनिष्ठा के मूल में प्रजा पति तीर्थ, उंगलियों के अग्रम भाग देव तीर्थ तथा अंगूठे और तर्जनी के बीच में पितृ तीर्थ है।

———

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पैंतीसवाँ अध्याय

मुख्य रेखाएं,

हस्त रेखा–९ भाग्य रेखा १० जीवन रेखा ११ मस्तक रेखा १२ हृदय रेखा १३ सूर्य रेखा। इससे विद्या और धन देखें। १४ विवाह रेखा। १५ भाई बहिन रेखा, १६ सन्तान रेखा, १७मेष १८ वृषभ। १९ मिथुन। २० कर्क। २१ सिंह। २२ कन्या। २३ तुला। २४ वृश्चिक। २५ धन। २६ मकर। २७ कुम्भ। २८ मीन। जहाँ १ है अंगुष्ठ। जहाँ २ है तर्जनी, ३ वाली अंगुली मध्यमा, ४ वाली अनामिका ५ वाली कनिष्ठका। ६, ७, ८ को मणिबन्ध रेखा कहते हैं। इससे उन्नति और आयु का भी विचार होता है।

जीवन रेखा, पितृ-रेखा, गोत्र-रेखा, कुल-रेखा, मित्र रेखा तथा प्रेगूढ़ रेखा तर्जनी और अंगूठे के बीच से चलकर नीचे शुक्र स्थान को घेरती है। इससे आयु का ज्ञान होता है।

मस्तक रेखा, मात्र-रेखा, धन-रेखा, हथेली के बीच में होती है।

स्मरण शक्ति यानी दिमागी ताकत बतलाती है।

हृदय-रेखा, आयु-रेखा, अन्त, करण-रेखा, आत्म-रेखा, मस्तक-रेखा के ऊपर समानान्तर होती है, इससे प्रेम का ज्ञान होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

भाग्य रेखा, ऊर्द्ध रेखा, हाथ के मध्य, भाग में होकर शनि के स्थान को स्पर्श करती है इससे भाग्य का ज्ञान होता है

सूर्य रेखा, विद्या-रेखा, नीचे से चलकर अनामिका अंगुली की ओर जाती है। उसमें प्रसिद्धी और विद्या का ज्ञान होता है।

शुक्र-मुद्रिका या शुक्र के कंकण हृदय रेखा के ऊपर शनि और सूर्य के स्थान को घेरती है।

शरीर में तिल होने के शुभ अशुभ फल।

यदि स्त्री की दाएँ तरफ तिल हो तो उसका पति उस से खुश रहेगा।

माथे पर बांई ओर हो तो बांए पेट या बाहु पर भी तिल होगा परन्तु फल इसका स्त्री पुरुष दोनों को अशुभ है। बाँई भौं पर हो तो बांई छाती पर भी तिल होगा और दोनों को यात्रा करनी होगी।

दोनों भौं के बीच में हो तो पेट के बीच में होगा और बाकी श्रीघमंडी होगी।

यदि नाक पर हो तो नाभि पर तिल होगा, इससे प्रेम होगा और विवाह अच्छी जगह होगा।

कनपटी पर हो तो कुच पर होगा, दाहिनी ओर हो तो पुरुष प्रसन्न रहे, स्त्री के हो तो रांड होती है। बाँई ओर हो तो रोगी होता है।

कान के पास हो तो पेट में भी तिल होगा यह तिल स्त्री पुरुष दोनों को कष्ट दायक है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नाक के नोंक पर तिल हो तो गुदा पर भी होगा।

पुरुष अल्पायु हो और स्त्री खुदकुशी करती है।

गाल पर हो तो कूल्हे पर होगा यह तिल दाहिने हो तो शुभ और बाँए हो तो अशुभ होगा।

होठ पर हो तो गुदा पर तिल होगा लोभी होगा फल अशुभ है।

नीचे के होठ पर हो तो घुटने पर तिल होगा, ब्याह दूर होगा।

ठुडढ़ी पर हो तो पुठे पर होगा या पांव पर होगा दाए शुभ बाए अशुभ है।

तर्जनी अंगुली पर तिल हो तो शत्रु का नाशक, धनी और क्लेश का करने वाला होता है।

मध्यमा में तिल होता है, तो धन देता है- और शान्त सुखी करता है।

अनामिका में हो तो यशी पराक्रमी सुखी, और लक्ष्मी वधा युक्त होती है।

कनिष्टका उंगली पर हो तो धन पुत्र से युक्त अव्यय स्थिर चित्त तथा पर धन से धनी होगा।

अंगुष्ट पर हो तो निपुण और अधिक चलने वाला होता है।

तिल बाएं भौं पर हो तो किसी स्त्री द्वारा कष्ट हो और दाहिने आंख के भीतर हो तो अतितीव्र बुद्धि वाला हो और यदि स्त्री के दाहिनी आंख के कोने में हो तो धनी होवे तो चढती जवानी में बहुत कष्ट हो बाएं कोर पर ऊपर हो तो डूबने का ऊंचे पर से गिरे और चाल चलन पर धब्बा लगता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गर्दन में दाहिनी तरफ हो तो भक्त और बुद्धिमान हो और यदि बांई ओर हो तो पानी में डूबे या ऊंचे से गिरेगा। ठुडढ़ी पर तिल हो तो जनखापन बतलाता है।

दाहिने पांव पर तिल हो तो अच्छा ज्ञानी, स्त्री सुखी, बाएँ पर अशुभ फल होता है।

जिस स्त्री की नाक आगे वाले हिस्से में लाल मसा हो तो रानी होती है। काला हो तो व्यभिचारिणी और विधवा होती है।

कान कपोल और कंठ में बांए तरफ तिल हो तो प्रथम गर्भ में पुत्र होता है और पुरुष के दाहिने तरफ हो तो पुत्र होता है और अगर बाए तरफ हो तो कन्या प्रथम होवे और बई होती हैं।

जिस स्त्री के बाए गाल पर लाल तिल हो वह सौभाग्य वती धन-पुत्र से सम्पन्न होकर आनन्द से जीवन व्यतीत करती है।

माथे पर तिल हो तो मालिक के काम में अयोग्य होग और मालिक का रुख देखेगा।

नेत्र में तिल हो तो परिश्रम गामी होगा। कान में तिल हो तो सवसिद्धी प्राप्त होवे नाक में तिल हो तो दुष्ट होवे।

गाल पर तिल हो शोभा से युक्त हो होंट पर हो तो, लोभी हृदय में तिल हो तो सौभाग बाहु में तिल हो तो धनो लिंग में तिल हो तो स्त्री में आसक्त हो।

जंघा में तिल हो तो रसिक हो पैर में हो तो राजा की सवारी प्राप्त होवे- हथेली के बीच में हो धन बराबर मिले पीठ कमर गुप्त इन्द्रियों में तिल हो तो बेकार होता है कोई फल नहीं होता।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जिन २ हाथ की रेखाओं पर लाल या काला तिल हो तो उनके फल को और भी बढ़ाता है। और दुष्ट रेखाओं का फल नहीं होने पाता है।

मत्थे पर हो धनवान हो। मत्थे के दाहिनी तरफ—प्रतिष्ठा बढ़ती मत्थे के बांई तरफ—परेशानी में उम्र बीते। ठुड्ढी में स्त्री से मेल न रहे। दोनों भौंहों पर-यात्रा होती रहे। दाहिनी आँख पर-स्त्री से प्रेम रहे। बांई आँख पर—परेशानी बनी रहे। दाहिने गाल पर—धनवान हो। बांए गाल पर—गरीबी रहे। होठ के ऊपर—ऐय्याश हो। होठ के नीचे—गरीबी बनी रहे। कान पर—अल्पायु हो। गर्दन पर आराम मिले। दाहिनी भुजा पर—इज्जत मिले। बांई बाजू—झगड़ालू हो। नाक पर—यात्रा होती रहे। दाहिनी छाती पर--स्त्री से प्रेम रहे। बाँई छाती पर--स्त्री से झगड़ा रहे। कमर पर—परेशानी को उम्र बीते। बगल में---दूसरों को हानि पहुँचावे। दाहिनी छाती पर---परेशान न रहे। बाँई छाती पर—कामी पुरुष हो। छातियों के बीच--आराम से बसर हो। दिल पर-बुद्धिमान हो। पसली पर--डरपोक बना रहे। पेट पर--उत्तम भोजन का इच्छुक। पेट के बीच में--डरपोक हो। पीठ पर--सफर में रहे। दाहिनी हथेली पर--धनवान हो। दाहिने हाथ पर—खजन्ची हो। बांई हथेली पर--फिजूल खर्च। दाहिने हाथ की पीठ पर--कम खर्च करें। बांए हाथ की पीठ पर---बुद्धिमान हो। पांव की हथेली पर-सफर में रहें। दाहिने पैर में--बड़ा बुद्धिमान हो। बांए पैर में--खर्चा ज्यादा करे।

शंख चक्र तथा सीपी का फल।

परमात्मा ने शरीर में सब वस्तु दरसाई हैं परन्तु बहुत

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सी ऐसी बातें हैं जो गुरु के बताए बिना समझ में नहीं आ सकती हैं।

शंख--अँगुलियों के अग्र भाग पर शंख चक्र और सीपी के आकृति के चिन्ह होते हैं ये दो प्रकार के होते हैं। वामावर्त बायें तरफ मुँह को दक्षिणावर्त दाहिनी तरफ मुँह हो शंख अपनी ही आकृति का होता है। आकृति १ उनका नं० १ चक्र गोल बीच में कटा होता है। नं० ३ सीपी झाड़ की तरह नीके गिरी हुई सीपी होती है। नं० १ में जल्दी नहीं दिखाई देते, खास कर हाथ से कार्य करने वालों के निशान घिस जाते हैं। इस लिए दो पहर में और हो सके आतशी शीशा से देखना चाहिए।

जिसके हाथ में एक शंख हो अध्ययन शील, शूर वीर होता है।

जिसके हाथ में दो शंख, दरिद्र साधू।

जिसके हाथ में तीन शंख हो वह स्त्री के लिए झगड़ता है। होता है धूर्त।

जिसके हाथ में चार शंख हो वह राजा के समान सुखी हो या दरिद्र भी होता है।

जिसके हाथ में पांच शंख हो वह विदेश में प्रभुता होवे। माननीय होवे।

जिसके हाथ में छः शंख हों वह बड़ा बुद्धिमान होवे।

जिसके हाथ में सात शंख हों वह दरिद्र होवे। आठ वाला सुख से जीवन बीते।

नौ वाला हिजड़ा या स्त्री सा स्वभाव हो। दश वाला राजा या योगी हो।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सीपी—जिसके हाथ में एक सीपी हो वह राजा हो । और यदि एक ही जगह दो सीपी हों तो वह दरिद्री होता है।

जिसके हाथ में दो सीपी हों तो अमीर हो। तीन सीपी हों तो योगी हो।

चार सीपी हों तो दरिद्र हो। पाँच सीपी हों तो धनी हो!

छः सीपी हों तो योगी हो। सात सीपी हों तो दरिद्र हो। आठ सीपी हों तो धनी हो। नव सीपी हों तो योगी हो। दस सीपी हों तो दरिद्र हो।

चक्र

जिसके हाथ में एक चक्र हो तो चतुर हो। दो चक्र हों तो सुन्दर हो। तीन चक्र हो तो ऐय्याश विलासी हो। चार चक्र हों तो दरिद्र हो। पाँच चक्र हों तो ज्ञानी हो छै चक्र हों तो पंडितों में चतुर हो। जिसके हाथ में सात चक्र हों पहाड़ों पर विहार करने वाला। आठ चक्र हों तो राजा हो। दस हों तो राजा का सेवक हो। तर्जनी में चक्र हो तो प्रतापी राजा होता है। अंगुलियों में होने से भ्रमण करने वाला होता है। जिसके चारों अंगुलियों में एक शंख चक्र गदा हो तो वह ईश्वर के तुल्य माननीय होता है।

दाहिने हाथ के अंगूठे के मध्य में यव हो तो शुक्ल पक्ष में और दिन में जन्म होता है। और बाएं हाथ के अंगूठे में यव हो तो कृष्ण पक्ष में रात्रि के समय जन्म होता है। और दोनों हाथों में अंगूठों में यव हों तो कृष्ण पक्ष में दिन में जन्म होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दाहिने हाथ के अंगूठे में यव हो तो गुप्तेन्द्रि के दाहिने तरफ तिल और बांए हाथ में अंगुष्ट पर यव हो तो गुप्तइन्द्रिय के बांए तरफ तिल होता है।

अंगुष्ठ के मूल में जितने यव हों उतने ही उसके पुत्र होते हैं। जिसका अंगूठा छोटा हो, उसमें इच्छा शक्ति कम होती है और लिखने में साफ नहीं लिखता।

छतीसवा अध्याय।

पोर पाश्चात्य मत

हर एक अंगुली के भाग त्रय को पोर कहते हैं। जिसमें नख है, प्रथम पोर है उसमें अध्यात्मिक ज्ञान तथा स्वाभाविक बुद्धि का हाल जाना जाता है।

इसके नीचे द्वितीय पोर है उससे तर्क शक्ति का विचार और उसके नीचे जो करतल से जुड़ा है। उसको तीसरा पोर कहते हैं। उससे संसारिक व्यवहार की सूचना मिलती है।

यानि प्रथम पोर लम्बा मोटा हो तो उच्चाभिलाषी ईश्वर पर भरोसा रखने वाला होता है। मानसिक रुचि का ज्ञान होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तीसरा पोर लम्बा मोटा हो तो खाने पीने पहिनने में अधिक प्रीति रखने वाला होता है।

इसमें तर्जनी के प्रथम पोर में मेष, द्वतीय में वृष तृतीय में मिथुन, अनामिका के प्रथम पोर में कर्क, दूसरे मे सिंह, तीसरे में कन्या, मध्यमा अंगुली के प्रथम पोर में मकर दूसरे में कुम्भ, तीसरे में मीन, कनिष्ठा के प्रथम पोर में तुला दूसरे में वृशिचक, तीसरे में धन माया है। पोर्वात्यों ने अंगुलियों की पोरियों पर राशियों के स्थान को कल्पित किए गए हैं। उनके ठीक विपरीत पाश्चात्यों ने राशियों के स्थान माने हैं। पौर्वात्यों ने कनिष्ठा के तृताय, द्वितीय प्रथम पर्व में क्रम से मेष, वृच, मिथुन, माना है। अनामिका के तृतीय में कर्क द्वितीय में सिंह, प्रथम में कन्या माना है।

मध्यमा के तीसरे में तुला, दूसरे में वृशिचक, प्रथम में धन माना है। तर्जनी के तृतीय में मकर, दूसरे में कुम्भ, और प्रथम में मीन माना है। इसलिये राशियों के स्थान निर्णय में पूर्वीय में और पश्चिमी पद्धति में मत भेद है।

स्त्री रेखा विचार

स्त्रीयों के दाहिने हाथ के हृदय रेखा से पति का विचार और मातृ रेखा से सांस का और पितृ रेखा से श्वसुर के सुख दुख का विचार करना चाहिए।

अँगूठे के मूल में जितनी खड़ी रेखाएं हों उतने जार (यार) उस स्त्री को कहना। यदि उपरोक्त रेखाएं दाहिने झुकें तो सहेलियां कहना चाहिए, दाहिने हाथ के अंगूठे के मूल की रेखाओं से जेठ और देवर की सखाओं तथा सुख का विचार करना चाहिए।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

स्त्रियों के दाहिने हाथ की आयु रेखा में जितने पल्लव हों कनिष्ठा अंगुली के नीचे की रेखाओं से सौत का विचार दाहिने हाथ की भाग्य रेखा से पति के भाग्य का विचार करना बाएं हाथ की हृदय-रेखा छोटी हो तो पुरुष से पहिले स्त्री की मृत्यु समझना चाहिए। यदि दाहिने हाथ की हृदय रेखा बांए हाथ की हृदय रेखा से छोटी हो तो पति मृत्यु स्त्री से पहिले समझना चाहिए।

स्त्री के अग्रभाग में लाल मसा हो तो अति भाग्यशाली, काला हो तो व्यभिचारिणी, कान, कपोल कंठ के बाँए तरफ मसा या तिल हो तो प्रथम गर्भ में पुत्र होता है। ओठ पर मसा हो तो सर्वस्व नष्ट करने वाली और एक सन्तान वाली होती है। प्राय काला तिल अशुभ और लाल तिल शुभ होता है। जिस रमणी के माथे की रेखांए साफ मनोहर और गम्भीर हों तथा बाएं गाल पर लाल तिल हो तो सौभाग्यवती धन पुत्र से सम्पन्न होकर आनन्द मय जीवन व्यतीत करती है।

सधवा स्त्री के हाथ का चित्र

मणी बन्ध शुद्ध रूप से, भाग्य रेखा शुद्ध और सरल मणी बन्ध से शनि स्थान तक। पितृ रेखा शुद्ध रूप से। आयू रेखा गुरू स्थान तक। कमल यूक्त आयूष्य-रेखा। यव संयूक्त आयूष्य रेखा। पुष्प-रेखा शुद्ध। मातृ-रेखा शुद्ध। अंगुष्ठ मूल में यव। अंगुष्ठोदर में यव। उच्च स्थान में सन्तान रेखा काननरेखा। त्रिशूल, शँख, चक्र, सीप, मत्स्य, स्वास्तिक जाल, पति।

उपरोक्त सब शुभ रेखाओं में से जो २ हों उनसे स्त्रियां के पति, पुत, भाई, माता, पिता, सास, ससुर, धन आदि का सब फल कहना चाहिए।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

स्त्रियों के बाएं हाथ का चिन्ह

मणी बन्ध भिन्न भिन्न पितृ-रेखा छिन्न भिन्न, आयु रेखा शनि स्थान छोटी छोटी रेखाओं से युक्त, मात्र रेखा छिन्न भिन्न पुष्प रेखा, त्रिधा, तीन स्थान से भाग रेखा व सौ भाग्यरेखा व पति रेखा टूटी हुई। भाग्य रेखा में डंड, भाग्य रेखा के समीप छोटी छोटी ऊर्ध्व रेखा' हिंसा रेखा पति घातिनी रेखा शंख, मस्तक-रेखा छिन्न भिन्न।

जिस स्त्री की अंगुलियाँ टेढ़ी चपटी, रेखाएं छिन्न भिन्न हों, वह स्त्री विधवा हो और जीवन दुखमय होता है। अंगुलियां छोटी पतली टेढी विस्तृत बहुत पर्वों से युक्त हों तो जीवन दुखमय होता है।

सधवा स्त्री के लक्षण

जिस स्त्री के पाँव का अंगूठा पूर्ण गोल हो तो वह पतिव्रता होती है। स्त्री की अंगुलियाँ छोटी घनी और पुष्ट हों, कोमल कर कमल सुन्दर उत्तम और थोडी रेखाओं से युक्त हों, अंगूठे और अंगुलियां सीधी हों और रक्त वर्ण रेखा कर कमल में रक्त शोभित हो। रेखाएं सूक्ष्म साफ और गम्भीर चिकनी और गोलकार हों। हाथ में मत्स्य और पदमरेखा तथा स्वस्तिक —रेखा हो। भाग्यरेखा सुन्दर बिना कटी कुटी हों हाथ का मध्य ऊंचा हो, अंगुलियों के मिलने पर छिद्र न दिखाई पड़े, पैर शरीर के वर्ण समान हों, केश सूक्ष्म हों, भौं मिले न हों, दाँत घने हों, बिना रोम के गोल जाँघे हों, नख चिकने वृत्ताकार हों, रोम रहित हाथ का पृष्ठ भाग हो तो वह स्त्री सधवा होती है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

विधवा स्त्री के लक्षण

जिस स्त्री के बाएं हाथ में मोटी, चौड़ी, सफेद या काली विरल और भद्दी बहुत सी रेखाएं हों, भाग रेखा छिन्न भिन्न हो या दंड रेखा से युक्त हो तो बाल मुख पीले रंग का का कान मोठे मुंह लम्बा हो, जिसके कन्धे बैल के समान और कंठ मोटा हो पेट स्तन लम्बा' चलने में पृथ्वी से शब्द हो, नख चिपते और फीके हों, अंगुलियाँ बहुल पर्वों से युक्त हों, हाथ का पृष्ट भाग गहरा कर्कश भाषण हो और रेखाएं छिन्न भिन्न हों, तो वह स्त्री विधवा होती है।

पुंश्चली स्त्री का लक्षण

हाव भाव कटाक्ष करने वाली, लज्जा से रहित, गाल बैल के समान निकले हों, भौहें मिली और चौडी हों, अंग प्राय खुले रहते हों, नेत्रादि प्रसिद्ध अंग से रहित हो, आंखें बड़ी हों, हाथ पैर छोटे हों, स्वर तीखा हो, विवाह करने वाली हो सूर्य पदम इत्यादि उत्तम रेखा से रहित हो या छिन्न भिन हो, पेट भालू के समान हो, भाग रेखा से छिन्न या दंड से युक्त हो या नाक पर तिल हो या बारह वर्ष के भीतर ही युवावस्था के स्तनादि सब चिन्ह देख पडें, जो सुन्दरी पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख वाली लज्जा शून्य दूसरे पुरुषों से वार्तालाप करने वाली हो वह स्त्री पुंश्चली होती है।

१६ वर्ष तक की स्त्रियाँ वाला, १७ से ३० तक जवान-इसके बाद ५० वर्ष तक प्रौढा, इसके बाद वृद्धा कहलाती है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सैंतीसवाँ अध्याय ।

हाथ देखने का तरीका

इस हाथ में मस्तक रेखा हाथ की गद्दी के आखिर तक गई है, जिससे यह सूचित होता है कि यह व्यक्ति धुन वाला, काम पूरा करने वाला और कंजूस, नीच स्वभाव का होता है ।

इस हाथ में शुक्र रेखा साफ है, यह सूचित करती है कि यह व्यक्ति अखबार का सम्पादक होगा ।

आयुरेखा पर त्रिभुज है, जिससे यह व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से उपार्जन करके गृह बनाएगा । वृहस्पति के स्थान में चतुष्टकोण है जो यह सूचित करता है कि यह व्यक्ति किसी आफत से बचेगा पितृरेखा काफी लम्बी होने से यह दीर्घायु होगा । परन्तु यह चन्द्र स्थान तक जाती है, इससे इसको स्त्री जन्य क्लेश रहेगा ।

इस हाथ में मँगल रेखा है, इससे यह आरोग्य रहेगा हर मुसीबत से यह रक्षा करेगा । इस हाथ में स्वास्थ्य-रेखा नहीं है, इससे यह चपल, वाचाल और आरोग्य रहेगा । मंगल के स्थान में और शुक्र के स्थान पर चतुष्कोण का चिन्ह है, इससे इसको एक बार जेल होगी ।

मंगल के स्थान पर एक दाग है' इससे मुकदमे बाजी में जायदाद बरबाद होगी ।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

शुक्र के स्थान से रेखा पितृ-मातृ और हृदय रेखा को भेद रही है, इससे इस व्यक्ति को धर्म पत्नी की मृत्यु की सूचना है।

गुरु के स्थान पर नक्षत्र है, इससे प्रेम में सुख होगा।

शुक्र के स्थान पर जाल का सा चिन्ह है; इससे यह व्यक्ति ऐय्याश होगा।

भाग्य रेखा पर द्वीप है' इससे यह व्यक्ति स्त्री द्वारा प्रलोभन होगा।

सूर्य स्थान पर वृत है इससे धनी और नामी होगा। भाग रेखा के आदि में द्वीप है, बाल अवस्था में पिता या माता में से एक की मृत्यू होगी, स्त्री के हाथ में हों तो भगाई हुई स्त्री समझना चाहिऐ।

शुक्र स्थान में ऐसी रेखा हो तो स्त्री द्वारा कष्ट हो और पराई निन्दा करने वाला हो। अन्य व्यक्ति द्वारा लुभाई जाने का चिन्ह हो!

सूर्य रेखा छिन्न भिन्न या रक्त खराब हो तो शत्रु की वृद्धि होती है। बुध और चन्द्र ऊंचा हो, वहाँ जाल और गुणक चिन्ह हों, मात रेखा शाखादार हो तो भक्त होने का चिन्ह है।

कनिष्ठ के तीसरे पोर में जाल हो तो चोर स्वभाव होता है। मस्तक रेखा पर शनि के स्थान के नीचे काला दाग हो तो दांत पीड़ा हो, चन्द्र स्थान पर तारा हो तो गठिया का रोग होता है। मातृ-रेखा शाखा युक्त हो, या सूर्य के स्थान में वृत्त हो तो जीवन में कामयाबी होती है।

मणि बन्ध से सूर्य के स्थान को एक रेखा जावे तो इज्जत, पदवी, धन, प्राप्त हो। मणि बन्ध रेखा में त्रिकोण हो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तो वृद्धावस्था में धन और सम्मान प्राप्त होता है।

चन्द्र स्थान में आड़ी रेखा हो तो समुद्र यात्रा होती है।

भाग्य रेखा में द्वीप हो तो स्त्री के द्वारा पुरुष और पुरुष द्वारा स्त्री भुलाए जाते हैं।

शुक्र के स्थान से या पितृ रेखा से कोई रेखा जावे तो धन नाशक होती है।

आयु रेखा गुरु के स्थान तक और उसकी शाखा शनि तक हो तो धनवान, शत्रु रहित और सुख से जीवन व्यतीत करेगा।

आयु रेखा पर यव हो तो उस वर्ष में अति कष्ट बाद में त्रिधन सुख (स्त्री सन्तान द्रव्य) होता है।

स्वास्थ्य रेखा छोटी छोटी रेखाओं से कटी हो तो अग्नि मन्द होती है।

शुक्र के स्थान से लहरदार शुरु में हो एक रेखा हृदय मस्तक रेखा को काटे तो स्त्री की मृत्यु हो।

भाग रेखा एक रेखा सूर्य स्थान को जावे तो एकाएक आप्त हो।

यदि वर्ग का चिन्ह भौम और शुक्र स्थान पर हो या चौथा पर्व हो तो कारागार होता है।

हृदय रेखा पर द्वीप हो तो नाजायज प्रेम होता है।

यदि शुक्र स्थान पर जाल हो तो अधिक व्यभिचारी होता है।

मंगल रेखा के होने से जवानी का सुख, कष्ट बरदाश्त करने की शक्ति, प्रेम में सुख होता है। यदि स्त्री के हाथ में हो तो शुद्ध चरित्र वाली होती है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यदि मध्यमा अँगुली में रेखा हों तो खाने के काम में कामयाबी होती है।

यदि बुध के स्थान पर तिल का काला दाग हो तो एकाएक धन हानि हो।

भस्थ रेखा से एक रेखा गुरु के स्थान को जावे तो व्यवहार सुखी हो।

सब अँगुलियों में यव हो तो दुराचारी हो और जल में डूब कर मरता है।

अनामिका के प्रथम पर्व में तृतीय पर्व तक रेखा हो तो सर्व श्रेष्ठ पद लाभ हो आयु रेखा दो हों तो ईश्वराराधना में तत्पर रहे।

शनि स्थान और मध्यमा के तीसरे पर्व में नक्षत्र हों, मातृ रेखा शनि के नीचे भग्न हो तो फांसी पाता है।

गुणक चिन्ह गुरु के स्थान में हो तो सुखमय विवाह और धन मिलता है।

वर्ग का चिन्ह आपत्ति में रक्षा करता हैं।

पितृ रेखा में कोई रेखा उठ कर सूर्य के स्थान को जावें तो सम्मान पूर्वक प्रतिष्ठा पाकर पूजित होता है।

भाग्य रेखा के शुरू में तारा और दूसरे मंगल के स्थान में जाल और गुणक का चिन्ह हो तो आतम हत्या करता है।

शनि और गुरु-स्थान ऊँचा हो, सूरज-रेखा शुद्ध हो, तो योगी होवे, भाग्य-रेखा से कोई शाखा मणि बन्ध को जाय और सूरज स्थान में गुणक चिन्ह हो तो अन्य धर्म को ग्रहण करता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बुद्ध स्थान पर त्रिकोण हो तो व्याख्यान देने की शक्ति वाला होता है।

अंगूठे के दूसरे पोर पर तारा हो तो स्त्री फलवती होती है।

पितृ रेखा से कोई रेखा शुक्र स्थान को जावे तो किसी स्त्री के धन का उत्तराधिकारी होकर सुखी होता है।

सूर्य के स्थान में वृत्त हो तो कीर्ति और धन प्राप्ति होती है।

चन्द्र स्थान पर दाग हो तो दिवालिया होता है।

कनिष्ठा उंगुली पर एक रेखा लहरदार हो तो लुच्चा होता है।

भाग रेखा कटी हो, टेढ़ी हो तो जिस वर्ष में ऐसा चिन्ह हो, उसमें विपत्ति होती है। यदि पुरुष के यही चिन्ह हो तो वह अपनी स्त्री को दुख देगा और उसके जीवन की परवाह न करेगा।

पैतृक रेखा पर त्रिकोण पैतृक सम्पति देगा।

कुठार रेखा से प्राणी अत्यन्त दुखी होता है।

आयु रेखा पर त्रिकोण होने से मनुष्य अपने पुरुषार्थ से गृह, वाटिका आदि बनाता है।

कनिष्ठा के तीसरे पोर में गुणा का निशान हो तो अज्ञानी और चोरी करने वाला होता है।

यह सन्तान रेखा विवाह रेखा पर खड़ी रहती है। लम्बी गहरी पुत्र और पतली टेढी पुत्री, छोटी या द्वीप युक्त गर्भ गिराने या सन्तान मरने की सूचना देती है।

आधी उम्र में जोड़े का वियोग होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

उपरोक्त फल होता है, लेकिन इसमें मुसीबत अचानक आती है।

इस रेखा से यानी चन्द्र पर्वत पर हो तो समुद्र यात्रा होती है।

इस तारा से यानी मणि बन्ध पर हो तो अजनबी मनुष्य से धन प्राप्त होता है।

अंगूठे पर ... रेखा झगड़ालू होना बतलाती है। और कभी २ धनी भी होता है।

शुक्र के स्थान पर कानन रेखा से प्राणी अच्छे स्वभाव का होता है।

भाग्य रेखा पर रुक जाने से मनुष्य स्वयं अपनी बुद्धि से गलती करता है, नुकसान उठाता है, और दिवालिये की हालत हो जाती है।

हिंसा रेखा से प्राणी गौ, बालक, स्त्री, धन आदि से दुखी शत्रुओं से पीड़ित हो, मत्स्य-रेखा से प्राणी श्रेष्ठ और सब का स्वामी होता है।

मातृ-रेखा पर तिकोण होने से ननिहाल की जायदाद मिलती है।

दो पैतृक रेखा हों तो दूसरों की सम्पत्ति मिलती है।

पितृ रेखा से एक नीचे को यानी शुक्र के ऊँचे उठे हुए भाग मे जावे तो ऊँचे से गिरनेका वा कभी कभी रोग-गृस्त हो पीड़ा पाने का चिन्ह है।

स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप हो तो डिष्पेपिया (मन्दाग्नि) काम में मन का न लगना, पेट में घवड़ाहट आदि होता है।

चन्द्र स्थान पर तिकोण होने से जादूगर होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

एक रेखा आरोग्य रेखा को छूती हुई नीचे चन्द्र स्थान तक जाय तो प्राणी जुआ झगड़ा इत्यादि से सब धन शीघ्र नष्ट कर डालता है।

जार-रेखा से मनुष्य पर स्त्री गामी होता है।

(क) मस्तक रेखा सूक्ष्म पतली हो तो धूर्त, धोकेबाज होता है।

(ख) आयु रेखा मलिन श्रृंखलाकार हो तो धूर्त ढोंग होता है।

सूर्य रेखा बहुत रेखाओं से युक्त हो तो शिल्प-विद्या प्राप्त होने से भी धन की प्राप्ति की इच्छा नहीं होती है।

भाग्य रेखा पर त्रिकोण हो तो अनायास धन मिलता है।

भाग्यरेखा के समाप्त होने से पहिले दूसरी रेखा बलवान शुरू हो तो आत्म गजन यानी पिता माता स्त्री का योग होना है।

सूर्य रेखा पर त्रिकोण होने से उत्तम कारीगर होता है।

शुक्र स्थान पर त्रिकोण होने से गणित जानने वाला होता है।

पितृ रेखा से एक रेखा बुध या सूर्य के स्थान को जावे तो रोजगार में काफी तरक्की होती है।

अनामिका अंगुली मध्यमा के बराबर हो तो मनुष्य जुआ व्यापार में सफल हो।

दो सूर्य रेखा से एकाएक धन मिलता है।

सूर्य रेखा के नीचे मस्तक रेखा पर दाग आंखों को दुख देता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

डंड-रेखा से राजश्री का भोगने वाला और विद्वानों में श्रेष्ठ होता है।

टूटी हृदय रेखा से प्रेम में वियोगी होता है।

मोटी भद्दी विवाह रेखा से विवाह कष्ट प्रद होता है।

मस्तक रेखा पर तारा एकाएक मृत्यु की सूचना है।

शुक्र के स्थान पर जाल, तर्जनी के तीसरे पर्व में तारा और मध्यमा के तीसरे पर्व में त्रिकोण होतो आदमी व्यभिचारी होता है।

भाग रेखा मध्यमा के तीसरे पर्व तक हो तो अभागा और पुरुषार्थ हीन होता है। (पर्व की गणना ऊपर से करना चाहिए)

भाग्य रेखा के समीप कोई खण्डित रेखा हो तो पुत्र पौत्र से रहित पशू की तरह रहता है।

यदि रेखा शुक्र स्थान से चलकर पितृ रेखा और भाग रेखा को काटकर मगल के स्थान को जाय तो प्राणी अपने हाथ से अपनी सम्पत्ति नष्ट करता है।

आयु और मातृ रेखा के बीच में गुणा का चिन्ह हो या भाग रेखा के पास हो तो असामयिक मृत्यु होती है।

यदि अंगुष्ठ यव-रेखा से शून्य हो तो यश हानि होता है।

स्वास्थ्य रेखा मातृ-रेखा से युक्त होकर त्रिकोण बनजाय तो कांतिमान प्रभावशाली, दैवी बुद्धि वाला और गुप्त विद्याओं का ज्ञान होता है।

हिंसा रेखा से धन, पुत्र, स्त्री से दुखित रहता है।

मंगल के स्थान में त्रिकोण हो तो जर्राह होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कनिष्ठा के मूल में एक रेखा हो रेखाओं से कटी हो तो व्यभिचारी होता है, यदि स्त्री के हाथ में हो तो वैश्या होती है।

यदि माता की रेखा के समीप गुणा का चिन्ह हो तो स्त्रियों से बातें करने में बड़ा चतुर होता है।

माता की रेखा के ऊपर से सर्पाकार चिन्ह पिता की रेखा तक हो तो सीधे स्वभाव वाला, बेहया तथा साहसी होता है।

यदि पाँच रेखा अँगूठे के मूल से निकलें तो सुखी व धनी होवे और यदि तीन रेखा हों तो फल का नाश होता है।

यदि बहुत सी छोटी २ रेखाएं चन्द्र पर हों तो दरिद्र और भयंकर रोगी होता है।

हृदय-रेखा नीचे की तरफ से छोटी रेखा से कटी हो तो चंचल हत्यारा और पिता का वध करने वाला होता है।

भाग्य रेखा मस्तक रेखा से मिलकर एक कोना बनाएं तो कसरती तथा जल में डूबने वाला होता है।

पितृ-रेखा यदि छोटी छोटी रेखाओं से कटी हो तो रोगी जिस वर्ष में यह पितृ-रेखा को काटे उस वर्ष में होगा।

जिस भागरेखा के पास मियाना (पालकी) सा चिन्ह हो वह गान विद्या में निपुण हो और मित्रों से अनादर पाकर मरे।

मणि बन्ध और भागरेखा के पास सर्प का चिन्ह हो तो अपने अपराध से जेल हो।

नक्षत्र का चिन्ह शुक्र के पास हो तो रंडीबाज और निन्दित होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कनिष्ठा के तीसरे पर्व में तीन रेखाएं हों तो तीन पुत्र होते हैं। जितनी सीधी रेखा उतने पुत्र, जितनी टेढ़ी हो उतनी ही कन्याएं होती हैं।

ऊपर के हिस्से में अगर पिता की रेखा छोटी २ रेखाओं से कटी साफ, भारी हो तो सबका प्यारा और विनय स्वभाववाला होता है।

अनामिका की जड़ में साफ चन्द्राकार निशान हो तो इज्जत वाला रहता है और शौकयुक्त होता है।

चन्द्र स्थान में तिरछी रेखा से मोह का त्यागी और जल यान से भ्रमण करता है।

बुद्ध स्थान में दो रेखाएं हों तो विद्वान,ज्ञानी, प्रसिद्ध और बांह में चोट लगती है। डाक्टर के हाथ में अक्सर यह रेखा दिखाई पड़ती है।

हृदय रेखा की एक शाखा तर्जनी के मूल में हो तो धर्मी होता है।

शनि के स्थान पर दो गुणक निशान हों तो सम्पत्ति तथा सौभाग्यशाली का लक्षण है पाश्चात्य विद्वान लोग इस निशान को लकवा, असाध्य रोग आकस्मिक मृत्यु तथा फांसी पर चढ़ने वाले खूनियों के बताते हैं।

जिसकी मातृरेखा नीचे टेढ़ी हो भगनी रेखा के साथ हो तो गुण ज्ञाता, घमन्डी, चोर की नीयत वाला और बुरे मत का वाला होता है।

पितृ रेखा के ऊपर के हिस्से में दो रेखा हो तो बिरादरी में विरोध करने वाला और घबड़ा जाने वाला होता है।

अंगूठे के मध्य में तीन रेखा हों तो क़ैद पाता है।

कनिष्ठा के तीनों पैरों के बीच में तीन रेखाएं हों तो विद्वान विचार शील, तथा नमानी माननीय होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मातृ रेखा में सूर्य के आकार वाली रेखा मणिबन्ध तक आवे तो अपने दोष से व्याकुल हो और जेल जाता है।

मध्य अंगुलियों के तीसरे पोर में यवकार चिन्ह हों तो शिक्षा हीन, विषयक्त, और जल में डूबता है।

गुरु के स्थान पर सीधी दो रेखाएं तिरछी रेखाओं से कटी दिखाई पड़े तो आचरण हीन, गर्वी, जार जात लड़का या लड़की पाता है।

मातृ तथा पितृ रेखा के बीच में तीन गुणक के चिन्ह हों तो विकारी , वेश्या-गामी पर- वित्तहारी, और उत्पाती होता है।

शुक्र के स्थान से रेखा पितृ तथा मातृ रेखा को काट कर आयु रेखा के पास जावे तो ७० वर्ष के बाद सौभाग्य शीला तथा सुखी होता है।

भाग्य रेखा के नीचे के भाग में दो रेखा हों तो दुर्जन विश्व सथ ती [illegible] षयी होताहै।

अड़तीसवां अध्याय

विशेष चिन्हों का फल

मीनोमकर, शंख पदमो वांतमुख', सध्यफलद। पार्श्वे बहिर्मुखो यदि तत्फलं पश्चिमोऽप्यासि मजली मगर शंखकमल,

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हाथ में भीतर मुख छिपे हों सदा फल देते हैं, और जो मुख बाहर हो तो पिछली अवस्था में फल देते हैं।

मीन रेखा से धनी, विज्ञेय, काम सिद्धि का करने वाला व्यापारी और बहुत पुत्र वाला होता है।

१ तुला, ३ ग्राम, ४ वज्र हो तो व्यापारी और जयसिद्धि प्राप्त होती है।

५ कमल ६ चाप ७ खंग ८. अष्ट कोण हों तो धनवान सदा सुखी हो ९ शंख १० चक्र ११ ध्वजा हो तो विद्वान बुद्धिमान और सुखी होवे १२ त्रिशूल से राज्य-भोग करता है, और धार्मिक, दानी भक्त होते हैं। ग्राम का मालिक राज काज में रहने वाला और सर्व आनन्द के भोगने वाला होता है।

शक्ति, तोमर, बाण, रथ, चक्र, ध्वजा से राज का लाभ होता है। अंकुश, कुंडल, चक्र, महाश्रेष्ठ राज का भोगी होता है। और इनमें से एक भी हो तो धनाढ्य ज़मींदार होगा।

गिरि कंकण, नरमुंड, घड़ा, यह राजमंत्री होने का लक्षण है। सूर्य चन्द्र, नेत्र अष्ट, कोण, त्रिकोण, मन्दिर, गज घोड़ा, सुखी और धनी होने का लक्षण है।

अंगुष्ठ में यव हो तो ऐश्वर्यशाली भोगी, खाने वाला सुखी होता है।

मध्यमा तर्जनी के मूल में यव हो तो धनी, सुखी भोगी बेटा स्त्री भ्रातादि के साथ सुखी होंगे।

उपरोक्त लक्षणों में से अधिकांश मेरे देखने में नहीं आए हैं परन्तु शास्त्रों में लिखा है इसलिए यह सम्भावना है कि संसार में ऐसे पुरुष हों तो जिनके हाथों में होगा, इसलिए पुस्तक की कमी पूरी करने के लिए उपरोक्त लक्षण लिखे हैं। "मायायांसर्व सम्भव", के सिद्धान्त को मानते हुए यह निश्चय

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

है कि उपरोक्त लक्षण अवश्य किसी के हाथ में होंगे जो लेखक की दृष्टि में नहीं आए हैं।

शुभाशुभ चक्र

नीचे लिखे चक्र से शुभ-अशुभ सही मालुम होता है, उस चक्र से सुख दुख की अवधि का पता चलता है।

इस चक्र में पूछने वाले व्यक्ति का वर्ष ठीक ठीक पूछना चाहिए, चाहे एक ही दिन नये वर्ष को लगे हुए हों, वर्ष लेना चाहिए, यदि पूछने वाला गलत उम्र बताएगा तब जवाब सही नहीं निकलेगा वरना अगर उसने उम्र ठीक बताया है, तो शुभ अशुभ ठीक निकलेगा।

इस चक्र से शुभ या अशुभ जानना हो तो पांच बड़ी रेखाओं को लो। ये इसलिए ली जाती हैं कि जब बालक गर्भ में ही रहता है। तब यह हाथ में बनजाती है। यानी ब्रह्मा आयू, कर्म, वित्त, विद्या, मृत्यू और इसका कारण पांच रेखा लिख देते हैं, इसलिए यह पांच रेखा यानी पांच का अंक लेना चाहिए, उम्र को संख्या १ पुकारने का नाम जिस वर्ग में पड़े दो उसके ध्रुवों की संख्या जो चक्र में दी है, उसे जोड़ो जो सब को जोड़ कर आवे, उसे ८ से भाग दो। जो बाकी बचे उसको आधी से ज्यादा संख्या वाला समझना चाहिए औ कम को आने वाला समय जानना। वह वर्ष हुआ, उसको चक्र के वर्ष के कालम में देखे, जो वर्ष हो उससे फल कहो।

उदाहरण के लिए बलदेव प्रसाद शुक्ल लेखक का नाम है अब ५ बड़ी रेखाएं, यानी पुण्य, आयू, मातृ, पितृ रेखाएं और उम्र ५४ वर्ष है, नाम का ध्रुव है १ उनका जोड़ साठ है। उसका आधा दो है आधे से ज्यादा ढ ई वर्ष हुए, अब यदि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अशुभ झगड़ा, चिंता, भय, दुख पहिले २॥ वर्ष में होगये हैं तो १॥ में अति सुख की प्राप्ति होगी। यदि पिछले समय में अशुभ नहीं हुआ हो तो आगे होगा, शुभ होगया हो तो आगे नहीं होगा।

नोट—अ वर्ग धूवा का ८, क वर्ग का ५, च वर्ग का ६ ट वर्ग का ४, त वर्ग का ७, प वर्ग का १, य वर्ग का ३, श वर्ग का २, धुवा होता है। उनके ग्रह सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु क्रम से हैं।

उनतालीसवां अध्याय

समय का ज्ञान

एक डोरे से जीवन रेखा को आदि से अन्त तक नापो और उस नापे हुए डोरे को दुहरा दो और स्याही से उस मुड़े हुए हिस्से में निशान लगा दो। इस तरह जो दो हिस्से मिले, उनमें से हर एक के ५ बराबर-बराबर हिस्से करो और उसे हाथ पर फैलाने से आयुष्य का और होने वाली घटनाओं का लग भग पता चल जाता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

इनमें से १ से २ निशान तक हुए एक ६ वर्ष का समझना चहिये। सातवा निशान ४२ से ५२ वर्ष तक की उम्र का, आठवा ५२ से ६० वर्ष तक का और ६० से ७० वर्ष तक का और दसवां ७० से ऊपर की आयु का समझना चाहिये।

दूसरा तरीका—समय के ज्ञान का यह है कि जीवन रेखा को सात सात के विभाग में बाँटो और उसी तरह भाग रेखा को भी सात सात वर्ष के विभाग में बांटो, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

तीसरा तरीका जीवन रेखा का और हृदय रेखा का यह है कि एक सीधी रेखा तर्जनी और मध्यमा के बीच में खींचो। जहाँ पर जीवन रेखा से मिले, वहां पर २५ वर्ष होंगे, दूसरी रेखा मध्यमा और अनामिका के बीच में खीचो जहां मिले, वह ५० वर्ष के ऊपर होगा। तीसरी रेखा अनामिका और कनिष्ठा के बीच में खींचो वह ८० वर्ष से होगा। कमल हृदय रेखा नापने के लिए यह भी है।पुसाँमायुभ'ग प्रत्येक पांच विशति शरदाम कल्पया कनिष्टकाँगुलि मूला दिह तर्जनी परत, मनुष्यों की आयु के हिस्से में इर एक अंगुली के नीचे तक २५ वर्ष और कनिष्ठका के मुल से धनी कनिष्ठका और अनामिका के मध्य से और दूसरी अनामिका मध्यमा के बीच से और तीसरी मध्यमा और तर्जनी के बीच तक कल्पना करना चाहिए। हृदय रेखा नापने के लिए उलटा क्रम चलेगा यानी एक रेखा कनिष्ठा और मध्यमा से खीचो तो ३० वर्ष होगा, दूसरी मध्यमा अनामिका के बीच से खींचो तो ६० वर्ष होगा तीसरी मध्यमा और तर्जनी के बीच से खींचो। तो ९० होगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पौर्वात्य मत वाले हृदय रेखा को ही विशेष कर आयु निर्णय करने वाली रेखा मानते हैं। यदि कनिष्ठा अंगुली के मूल से तर्जनी अंगुली के अन्त पर्यन्त जाती है, तो १०० वर्ष की आयू होती है। और यदि मध्यमा के अन्त तक हो तो ८० वर्ष और यदि अनामिका के अन्त तक हो तो ६० वर्ष और कनिष्ठा के अन्त तक हो तो १५ वर्ष या ३० वर्ष का आयू होता है।

हृदय रेखा जब तर्जनी तक हो तो १०० वर्ष का नाप समझो और कनिष्ठा और अनामिका के बीच से एक लकीर हृदय रेखा पर खींचो तो १५ वर्ष होगा। अनामिका और मध्यमा के बीच से एक लकीर हृदय रेखा पर खींचो तो ५० वर्ष होगा, तीसरी लकीर मध्यमा और तर्जनी के बीच से खींचो तो ७५ वर्ष होंगे।

जिस वर्ष में नक्षत्र त्रिकोण, बिन्दु क्रास, यवादि चिन्ह हों या अन्य रेखा से कटा हो, टूटा हो उस वर्ष में शुभाशुभ होगा जो ऊपर से लकीर खींचने से वर्ष का अन्दाजा लगसकता है।

मस्तक रेखा नापने के लिए हृदय रेखा का उलटा क्रम रखना चाहिये।

तर्जनी मध्यमा के बीच से एक लकीर खींचो तो ३० वर्ष की उम्र पर रेखा मस्तक को छुएगी। मध्यमा और अनामिका के बीच से रेखा खींचो तो ६० वर्ष पर गिरेगी। अनामिका और कनिष्टका के बीच से रेखा खींचो तो ९० वर्ष पर गिरेगी। यह मेरे अनुभव की बात है। कुछ आचार्य मस्तक रेखा की हथेली के सिरे से नाप शुरु करते हैं, और जीवन मस्तक रेखा के मिलने के स्थान पर समाप्त करते हैं। मैं उससे

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सहमत नहीं हुँ क्योंकि मैं मस्तक रेखा और जीवन रेखा के मिलने के स्थान को उसका उद्गम मानता हूँ।

यह ध्यान में रहे कि जहां पर भाग रेखा मस्तक को काटती है, वहाँ ३५ वर्ष होता है।

हाथ की शकल उतारने की तरकीब

प्रथम एक लकड़ी का मोटा टुकड़ा रंदा कर साफ बनवाओ, जो बीच में कुछ ऊँचा उठा हुआ हो जिसे हाथ पर रखने से अंगूठा अंगुलियाँ तथा हाथ की रेखाएं साफ साफ आसानी से आसकें उस लकड़ी के टुकड़े पर कपड़ा ढक कर और उस पर नरम कागज धरना एक छोटा रूमाल सरेसयाजिलेटाइन का बनवालो। उस रूला से एक छोटे चौरस मोटे काँच, लोहा, रबड़ या लकड़ी, पत्थर के टुकड़े पर छापने की स्याही थोड़ी सी डालकर खूब घोटना जब रूलर से घोटते २ स्याही की चड़ चड़ बोलने का शब्द न हो तब उस रूलर पर लगी स्याही को हाथ पर इस तरह लगाना कि उस पर की सब रेखा अंगुली अंगूठा मणीवन्ध आदि समूचे हाथ की छाप पूरी आसकें। उसके बाद उपरोक्त लकड़ी के टुकड़े पर हाथ को धीरे से रखकर दबाना कि किसी अवयव की रेखा बाकी न रहे। और पेंसिल से हाथ के चारों तरफ की आकृति या निशान बनालो और हाथ को धीरे से उठालेना

कपूर के धूएँ से छाप लेने की तरकीब

पहिले एक कागज पतला जैसा टाइप राइटिंग में कैमाल होता है लेलो, दूसरे एक टुकड़ा कपूर का एक तस्तरी में रखो। तीसरे कपूर को जला दो और उस पर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कागज को जल्दी जल्दी बुझाओ, जब तक कि खूब काला कागज न हो जावे। ध्यान रखो कि कागज जले नहीं न उस पर पीले धब्बे ज्यादा देर रखने पड़े। चौथे एक छोटी गद्दी बनाओ जो कागज की हो लचीली हो और बहुत मुलायम न हो या एक लकड़ी का मोटा टुकड़ा रक्खा पर ऐसा बनाओ जो बीच में उठा हुआ हो। पांचवें एक छोटी गद्दी जो अंडे की शक्ल की हो कागज की बनी हो उसके ऊपर रक्खो, इससे हथेली की खाली जगह भर जावेगी।

छटे उस कागज को रक्खो जो कपूर से तैयार किया है और देखो कि गद्दी कहाँ है। तब इसके ऊपर हाथ को रक्खो अंगुलियाँ फैली हों मुलायमियत से लेकिन मजबूती से दबाओ।

सातवें हाथ उठाने के पहिले एक नौकीली पेन्सिल से हाथ के चारों तरफ निशान लगादो।

आठवें हाथ जल्दी से उठालो ताकि धब्बे कागज पर न पड़ें। नवें ब्लो पाइप या बेपोरीज़र से फिक्सेट दूर से छिड़को ताकि छाप जो लिया है पक्का हो जावे।

दसवें। दोनों हाथों का छाप लो और जब तक छाप साफ न उतरे इसको फिर दुहराओ।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मनुष्य का पैर

चित्र——२१

इस पैर को देखकर पूरी तरह इन रेखाओं को ध्यान से देख लेने की कोशिश करो ताकि रेखाओं के लक्षणों की पहचान पूर्ण रूप से ख्याल में रहे।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चालीसवां अध्याय

मनुष्य का पैर

शारीरिक लक्षण

बाहु

जिस पुरुष के बाहु लम्बे घुटने के नीचे तक हों वह आजानुबाहु होता है। इसके फल स्वरूप वह महा पुरुष होगा। जिसके बाहु कमर तक के हों वह क्षुद्र और नीच प्रकृति का होगा। जिसके बाहु कटी के नीचे और जांघों के मध्य तक के हों वह कार्य शील व्यवसायी और सिद्धि हस्त होगा। जिसके बाहु घुटनों से कुछ ही ऊपर रहें वह समृद्धि शाली होगा, परन्तु लोभी तथा बेईमान होगा। कभी कभी. वह पुरुष हिंसक भी हो सकता है। जिसके बाहु कमर से नीचे और जंघा के मध्य से ऊपर ही तक हो, वह दीन होता है।

जिसके बाहु की कुहनी के नीचे का भाग ऊपर के भाग से बड़ा हों वह कार्य शील और आस्तिक भक्त होता है. जिसका ऊपर का भाग बड़ा हो वह क्षुद्र और दस्यु प्रकृति का होता है वह मनुष्य स्वच्छन्द विषयी और विलासी होता है। जिसके दोनों भाग बराबर हों वह अपने ही अंगुलियों से नापे जाते हैं। बाहु का आदि भाग कोंख के ऊपर से और अन्तिम भाग पहुंचे तक होता है, वह व्यवसायी एवं परिश्रमी होता है। उसे पैतृक सम्पत्ति प्राप्त नहीं होती है। वह अपने श्रम से ही सब कुछ करेगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जिसका हाथ लम्बा और भद्दा होता है वह दरिद्री होता है। जिसका हाथ लम्बा परन्तु देखने में सुडोल होता है और गठीला होता है वह आलसी होता है। वह अधिक धनी नहीं होता है, जिसका हाथ लम्बा गसीला और सुन्दर होता है वह मनुष्य भागशाली होता है पान के आकार वाला हाथ समृद्धि शाली और कीर्त्तिमान होता है। भद्दे यानि बुरी आकृति वाला हाथ नीच का होता है, चौकोर हाथ दस्यू का होता है। गोल हाथ व्यवसायी का होता है, बन्दर की आकृति वाले हाथ यानी जिसकी हथेली कसाई की त्वचा के समानान्तर हो वह मनुष्य क्षणबुद्धि और कुविचारी विषयी तथा मूर्ख होता है, परन्तु आस्तिक होता है।

गहरी हथेली वाले को सदैव धन लालसा लगी रहती है, जिसकी अंगुलियां लम्बी व हथेली छोटी हो वह मनुष्य मूर्ख होता है जिसकी हथेली बड़ी हो वह मनुष्य चतुर और भाग मान होता है, जिसके दोनों भाग बराबर हों वह व्यवसायी धनी होता है।

जिसकी अंगुलियां मोटी लम्बी और गठीली हों वह परिश्रम करने से सुखी रहेगा वह भागशाली भी होगा। जिस की अंगुलियों के पैरों की कुल रेखाएं मिलाकर १५ हों वह नीच क्षण स्थायी दस्यू और विश्वास घातक होता है। ऐसे मनुष्य को मित्र न बनावें सोलह वाला मध्यम पिता के समान अठारह वाला सुपुत्र और १६ वाला पिता तथा स्वकुल की कीर्ति को बढ़ाता है और धनवान होता है। बीस वाला धनी परन्तु क्रूर होता है इक्कीस व बाईस वाला उद्यमी एवं विचारवान होता है तथा प्रतिभाशाली भी होता है। इससे अधिक

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar. Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

वाला दरिद्री व मूर्ख होता है। अंगूठे की पोर की रेखाएं नहीं गिनी जातीं।

जिसके नखों की बनावट बिल्कुल गोल हो और नख छोटे हों वह व्यवसायी होता है। जिसके नख छोटे गोल और अर्द्धचन्द्राकार कटे हों वह राज प्रतिनिधि वैद्य अथवा आक्षरशत्रु को पालन करने वाला होता है।

जिसके नख लम्बे और गोल कटे हों वह आदमी दीन होता है। जिसके लम्बे परन्तु अर्द्ध चन्द्राकार कटे हों वह उद्यमी और विद्वान तथा विश्वासनीय होता है।

जिसकी अंगुलियाँ टेढ़ी और मिलाने पर झिझिरी हों वह अच्छा नहीं होता। जिसकी उंगुली हाथ के विचार से गढ़ी हुई सुन्दर एवं सुन्दर हो वह अच्छा होता है। जिसका अंगूठा लम्बा और बीच की गांठ की चौड़ाई के आगे की तरफ पतला और गोल हो वह मनुष्य भक्त और शान्त चित्त होता है। जिसका अंगूठा गाँठ के समान चौड़ा और छोटा तथा अर्द्धचन्द्राकार हो वह मनुष्य मध्यम रहता है, जिसका अंगूठा पीछे को ओर झुका हुआ हो, वह अच्छा होता है।

छाती और पेट

जिस उरस्थल पर रोम यानी बाल नहीं होते वह मनुष्य देखने में साधा परन्तु कलुषित हृदय का होता है। वह मनुष्य प्रायः बेईमान और विश्वास-घाती होता है। इसके साथ ही साथ वह मनुष्य कार्यशील तथा अध्यवसायी होता है। जिसके उस उरस्थल से नाभि तक की सेली बालों की एक सुन्दर बीच में एक लकीर सी होती है। भली भांति बनी हो और वह मनोहर हो तो वह मनुष्य देखने में सीधा परन्तु

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—३२

अगले पृष्ठ पर रेखाओं को उनमें पूर्ण फल के साथ दिखाया गया है। इनको देखकर अच्छी तरह से उनकी स्थिति और चाल जानना चाहिये।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दंगाबाज़ होता है यानी दो व्यक्तियों को लड़ाकर उसका आनन्द अनुभव करता है। कम बालों वाला सामान्य होता है। अधिक बालों वाला विषयी होता है। सुनहले बालों वाला भाग्यवान परन्तु व्यसनी होता है। जिसकी मुछें सुनहली हों वह अधिक भाग्यशाली होता है। लम्बे पेट वाला बहु आहारी क्रोधी परन्तु सच्चरित्र व भाग्यवान होता है। छोटे व मोटे पेट वाला दरिद्र होता है। मोटी कटि वाला आदमी अधिक विलासी तथा पतली कटी वाला आदमी साहसी तथा वीर है। पतली कटी की स्त्री प्रायः सच्चरित्र एवं सुन्दर होती है।

दो कटी फटी रेखाओं वाला अकर्मण्य होता है। जिसके भाल में एक ही रेखा हो और वह भी कटी फटी हो तो वह कुविचारी होता है। जिसके भाल में इन तीनों रेखाओं के समान अन्य अनेक रेखायें हो वह त्यागी होता है।

ग्रीवा

जिसके गले में तीन रेखायें क्रमानुसार समानान्तर बड़ी रेखायें (तीन) हो, वह राजा होता है। रेखायें छिन्न भिन्न नहीं होनी चाहिये दो रेखाओं वाला भाग्यवान किन्तु आलसी होता है, एक रेखा वाला कुविचारी और नास्तिक होता है। बिना रेखा वाला भक्त और दृढ़ प्रतिज्ञ होता है।

जिसकी गर्दन में खड़ी रेखायें हों वह धनी और प्रतिभा सम्पन्न होता है, कटी फटी रेखाओं वाला सदैव विपत्ति के चक्कर में रहता है।

उदर

जिसके उदर में तीन रेखायें समानान्तर पड़ी हों वह विलासी एवं भाग्यवान होता है। जिसके दो हों वह परिश्रमी

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

और सिद्ध हस्त होता है। एक वाला दुखी होता है, चार वाला लोलुप और अधिक वाला अभागा होता है। जिसके अंदर में खड़ी रेखाएं हों, वह चक्रवर्ति होता है।

इकतालीसवां अध्याय

दाहिना पैर

पुस्तक में दाहिने पैर के ६ चित्र और बाएं के १९ चित्र क्रमश दिये गये हैं। चित्र में रेखाओं पर उनका क्रम नम्बर दिया हुआ है। नीचे उसी क्रम चित्रों की रेखाओं का वर्णन किया जाता है। पाठकों को चाहिये कि रेखाओं का वर्णन पढ़ते समय चित्रों पर भी ध्यान रखें ताकि सब बातें उनकी समझ में आसानी से आसकें।

१ यह रेखा सामान्य होती है, प्रायः सभी के पैरों में होती है, यदि इसके हाथ पैर और कोई बड़ी उत्तम रेखाएं न हों तो वह मनुष्य अपनी ही उन्नति पर निर्भर रहेगा। यह मनुष्य आस्तिक कार्य शील तथा दीन बन्धु होगा। यह रेखा हल्की होती है, इससे मनुष्य तीर्थाटन, अथवा सुन्दर सुन्दर नगर व देशों में भ्रमण करता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पैर

लम्बे और मोटे तथा देखने में सुडौल पांव वाला मनुष्य कार्य शील होता है। पतले और लम्बे भद्दे पैर वाला दरिद्री होगा है, चौकोर और छोटे पैर वाला भाग्यवान होता है। वह मनुष्य चालाक और गम्भीर भी होता। छोटे और पतले पैर वाला आदमी या स्त्री अच्छी नहीं होती है।

भाल रेखा

जिसके भाल में तीन रेखायें समानान्तर रूप से एक सी चली बिना टूटी फूटी हुई चली गई हों वह आदमी महाहस्त होगा, वह आदमी भाग्य शाली भी होगा। जिसकी ऊपर की रेखा कटी फटी हो और दो नीचे की ठीक हों वह अध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकता, वह धनवान होगा। जिसकी बीच की कटी फटी हो वह स्त्री आदमी का सुख नहीं भोग सकेगा, परन्तु वह कुविचारी व विलासी होगा। जिसकी नीचे की रेखा कटी हो वह अत्यन्त दीन होगा।

जिसके भाल में यह एक ही रेखा हो वह धनवान न होगा परन्तु विपत्ति बहुत उठायेगा। दो रेखाओं वाला सीधा और परिश्रमी होगा तथा भाग्य शाली होगा। जिसकी भृकुटी के ऊपर अर्द्ध चन्द्राकार रेखायें हो वह महःस्या होता है। जिसकी दोनों भृकुटि के बीच में और नाक के ऊपर देखिये चित्र रेखा नं० ७१० में रेखा नं० ५ इसी प्रकार का चिन्ह हो वह आदमी प्राय भाग्य शाली होता है, इस चिन्ह वाली स्त्री प्राय विधवा होती है अथवा जीवन में विपत्तियां बहुत उठाती है। इस चिन्ह वाला आदमी सिद्ध हस्त होता है यदि इस चिन्ह

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

की केवल एक ही रेखा दाहिनी तरफ हो तो उसकी स्त्री पतिव्रता होगी। यदि यह बांई तरफ हो तो उसकी स्त्री कर्कशा होगी।

जिसके भाल में उक्त स्थान पर भौंहों के बीच में दो समानान्तर रेखायें [॥] चित्र नं० ७ में हो तो वह आदमी अध्यवसायी परिश्रमी तथा अपनी धुन का पक्का होता है। यदि वह रेखा एक दाहिनी ओर हो तो वह सरल और विश्वासी व चतुर होता है। जिसके एक बांई तरफ हो वह आदमी झूठा और क्रूर होता है। जिसकी भकुटीं के अन्त से उठ कर ऊपर की ओर रेखायें हो वह आदमी बुद्धिमान होता है।

भाल की यह तीनों रेखायें नं० १, २, ५, जिसकी टूटी फूटी हो वह अभागा होता है।

३-यह रेखा दोहरी होती है। यह सपुत्र वान होता है।

४-यह भी दोहरी होती है, यह आदमी विचारवान व सफल यात्री होता है।

५-यह आदमी दरिद्री होता है।

६-यह आदमी अखण्ड विद्वान प्रतिभा शाली व धनवान होता है केवल अपने ही बल और बुद्धि से उन्नति करता है।

७-यह गज रेखा होती है इस रेखा वाला पुरुष धनी, भाग्यशाली प्रसन्न चित्त और आस्तिक होता है, परन्तु बुद्धि का दृढ़ नहीं होता। क्षण क्षण में विचार बदलेगा।

८-यह रेखा दीन के होती है।

९-यह गदा रेखा यदि सीधी हो तो आदमी शूरवीर होगा यदि इसी प्रकार यानी उलटी होगी तो रण में शत्रु के सामने भागेगा और हार कर प्राण देगा।

१०-ध्वजा रेखा को धारण करने वाला पुरुष चक्रवर्ती राजा होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

११-त्रिशूल धारण करने वाला प्रधान राज्य मान्य होता है।

१२-यह धारण करने वाला संसार में पुरुषोत्तम होगा। यह आदमी रोगग्रसित होकर न मरेगा। वह इस चमके फटने अथवा आघात करने पर मरेगा।

१३-यह रेखा विद्वान के होती है।

१४-यह धनी होता है।

१५-यह रेखा वाला पुरुष सुपुत्र वान होता है।

१६-यह दरिद्र होगा यदि सत्रहवी रेखा भी इसके साथ हो तो वह अत्यन्त दरिद्र होगा।

१७-यह रेखा वाला अनन्य भक्त होगा।

१८-यह शख रेखा धारण करने वाला योगीश्वर होगा।

१९-यह रेखा वाला स्वभाग्योदय में प्रसन्न होगा यह पहली रेखा के प्रथम और अधिक गहरी होगी।

२०-मच्छ रेखा को धारण करने वाला महा प्रतिमा शाली और मनोनीत फल प्राप्त करने वाला होगा।

२१-यह आड़ी रेखा बीच तलुवे तक जाती है यह पुरुष परम विद्वान होगा।

२१-यह स्वस्तिक रेखा धारण करने वाला बाहरी शत्रुओं को क्षण में पराहत करेगा। परन्तु पंच भूतों के वश में होगा। साथ ही साथ संसार का महा पुरुष भी होगा।

१३-यह रेखा दरिद्र के होती है।

१४-यह रेखा वाला पुरुष दूसरे का धन हरण करेगा।

१५-यह रेखा वाला दूसरे की एकत्रित सम्पत्ति प्राप्त करेगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

२६—यह रेखा वाला शोकवान होता है, और शीघ्र ही दरिद्र हो जाता है।

२७-यह रेखा वाला चित्र नं० २ देखिये प्रदेश में अकाल मौत से मरता है।

२८—यह रेखा वाला कटनीतिज्ञ होता है।

२९-यह रेखायें दो प्रकार की होती हैं। एक जो रेखा टूट कर कनिष्ठा की ओर जाती है, वह पुरुष पैतृक सम्पत्ति कुछ न पावेगा और दरिद्र से धनवान, यशवान और कीर्तिवान होगा तथा शुद्ध और स्पष्ट चित्त का होगा, परन्तु भोगी व विलासी अधिक होगा। दूसरी भांति वह जिसमें एक रेखा निकल कर अंगूठे की ओर जायेगी, वह पुरुष अत्यन्त सुयोग्य प्रतिदिन वंश का और कीर्त्तिवान व धनवान होगा। लोभी अवश्य होगा।

३०-यह आदमी यती होगा। अथवा कुल माया मोह छोड़ कर वैरागी होगा और सिद्ध होगा।

३१-यह आदमी परस्त्री गामी और सदैव विषय तृषा से दुखित रहेगा।

३२-यह अल्पायु होगी अत्यन्त यशवान होगा तथा अपने समय का महा पुरुष होगा

३३-यह आदमी झूठा और पाखण्डी होगा।

३४-यह मनुष्य आत्म हत्या करेगा।

३५-यह मनुष्य पूर्ण योगी होगा अथवा राजा होगा।

३६ यह रेखा अपने ऊपर की रेखाओं से सब से नीचे होगी। यह रेखा वाला अपने वंश में एक मात्र पुरुष होगा।

३७-यह आदमी सज्जन और उदार होगा।

३८-यह आदमी सत्यप्रिय होगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar . Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

३९- यह क्रूर नीति विशारद होगा।

४०- यह झूठा और विश्वास हन्ता होगा।

४१- यह आदमी धनी और उदार होगा।

४२- यह आदमी प्रखर ज्योतिषी या वेदज्ञ होगा, स्त्री वेश्या या कुटनी होगी।

४३- यह आदमी अल्पआयु परन्तु सच्चरित्र होगा।

४४- यह माया चावर होगा।

४५- यह आदमी चंचल होगा।

४६- त्रिकोण यह आदमी पेट के लिए परदेश घूमेगा।

४७- यह आदमी तार्किक होगा और नास्तिक अथवा वेदान्ती होगा।

४८- यह रेखा जो कोण बनावे तो वह आदमी अतियन्त चतुर होता है, गणित में दक्ष होता है।

४९-यदि यह रेखा उक्त कोण को काट कर त्रिभुज सा बनावे तो वह अदमी निश्चय कारावास में जायेगा।

५०- यह जो एक चतुर्भज यदि किसी के पैर में इसी प्रकार हो तो वह मठाधीश होगा यदि केवल चतुर्भज मात्रा हो तो वह आदमी किसी का राज्य धनादि सम्पत्ति पावेगा।

५१- यह रेखा इसी प्रकार टेढ़ी हो तो वह राजसी सुख भोगे और अचानक पददलित किया जाये।

५२- यह अदमी आडम्बरी और पाखन्डी होता है।

३- यह रेखा वाला चतुर और छोटे से बड़ा होता है

४अपनी समझ में वह अपने को सर्व श्रेष्ठ समझेगा।

५४- यह रेखा वाला भाग्यशाली होगा।

५५- यह आदमी दरिद्री होगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—३२

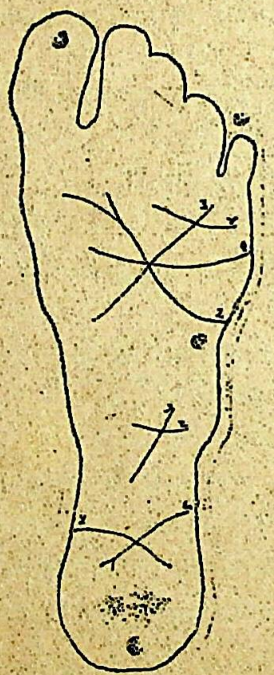

जिस प्रकार हाथ की रेखायें एक दूसरे से काटे जाने से अपने कार्य में कुछ खटाई कर देते हैं उसी प्रकार पैर की रेखाओं का फल होता है इसलिये उनकी स्थितियों का पूर्ण ज्ञान करने की अधिक आवश्यकता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

५६-इस प्रकार की टेढ़ी रेखा वाला मीमांसा तथा आयुर्वेद का ज्ञाता होगा।

५७-यह विदेशी प्रतिमा का भक्त होगा।

५८-यह अत्यन्त ही उदर और राजसी होगा।

५९-यह आदमी सदैव भक्त होगा और देव दर्शन प्राप्त करेगा।

६०यह रेखा वाला पाखन्डी और क्रर तथा ईर्ष्यालु होगा।

६१-यह आड़ीरेखा दोहरी होती है। यह बड़ी सम्पत्ति का अधिकारी होगा।

६ -यह रेखा दोहरी होने से विदेश में मौत होगी।

६३-यदि यह दोहरी रेखा कोण बनावे तो वह निर्वासित किया जायगा। यदि यह रेखा ६२ वीं रेखा से मिले तो वह लोट कर कभी न आवे।

६४-यह रेखा वाला बड़ा यशस्वी होता है यदि वह इकहरे रेखा हो तो वह बड़ा कीर्त्तिवान होगा। इसे सुअवसर कार्य करने को बहुत मिलेगे। वह कामी अधिक होगी।

६५-यह तुला रेखा है। व्यवसाय में अधिक लाभ उठायेगा

६६-यह चार के अंक के सदृश होती है यह आदमी वेदाध्ययी और पारगत होगा।

६७-चतुरकोण यदि बीच में कटा हो तो वह अपनी सम्पत्ती को खो बैठेगा।

६८-यदि यह रेखा अंगूठे की ओर से चल कर एडी की ओर जाकर पैर को दो भगों में बांटे तो वह आदमी गिरकर मरेगा।

६९-यह पुरुष विरागी होगा।

७०-नेत्र रेखा-यह आदमी दूसरों के नेत्रों से देखेगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

७१-यह आदमी आलसी होगा और अपने पूर्वजों के माष को मेटेगा।

७२- इसके उदय होने पर आदमी बीमार होगा। यदि चार मास में न मर गया तो बाद में अच्छा होकर वह अधिक कीर्त्ति प्राप्त करेगा परन्तु आप मारकट होती है।

७३- यह अर्द्ध चन्द्रकार रेखा उदय होने पर परदेश ले जाती है और धनी वान कर लाती है। यदि जन्म से हो तो वह अत्यन्त भाग्यशाली होगा।

७४- यह अदमी धर्म विवेचक होकर सदैव भ्रम में रहेगा और उसी सन्दिग्ध बुद्धि होगी।

७५- यह सब जिसके होगा अत्यन्त धन अर्जन करेग परन्तु यह व्यासनी भी होगा।

७६ यह दोहरी रेखा धर्म रक्षक के होती है।

७७- यह रेखा वाला पुरुष कुटिल होता है।

७८- यह रेखा उदय होने पर कीर्त्ति व यश बढ़ाती है।

७९- यह रेखा पद बढाती है यदि जन्म से हो तो वंश को वृद्धि और कीर्ति की दाता होती है।

८०- यह पुरुष कुचक्री होता है।

८१- यह रेखा अखण्ड विद्वान के होती है।

८२- यह आज कल वाले सुधारकों के होती है।

८३- इसके उदय होने पर आदमी को हानी होगी और रोगी होगा।

८४- यह उदय होने पर रोगी आदमी को स्वस्थ्य रखती है और साधारणतय पुत्र उत्पन्न कराती है। जन्म से होने पर भाग्य शाली होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

८५- यह रेखा धर्म सुधारकों के होती है। यह लोग सनातन प्रथा को मेंटते हैं।

८६- यह रेखा पतली लम्बी तथा सीधी होती है यह आदमी सरल चित्त तथा दूसरों के कानों से सुनने वाला होता है।

८७- यह आदमी पाखण्डी और बात का रोगी होता है।

८८- वृश्चिक रेखा यह आदमी जल में डूब कर मरेगा और अधिक धनी होगा।

८९-सर्प बैठा हुआ यहआदमी विश्वास हन्ता और कुटिलहोताहै।

९०- सर्प खड़ा हुआ यह आदमी प्राय भेदिया होता है।

९१-यह आदमी सरल चित्त अत अस्थिरस्त्रीजाति से घृणा करेगा

९२- यह रेखा उदय होने पर माता पिता आदि वंश में सब से बड़े को घतक होती है। यदि जन्मसे हो तो यहव्यक्ति उत्तम पद पावेगा।

९३- यह आदमी साधु होगा।

९४- यह कुकर्मी होगा।

९५- यह सज्जन परन्तु विलासी होगा।

९६- यह रेखा दोहरी बाला नेता होगा।

९७- यह रेखा उदय होने पर विपत्तिलाती है।

९८- यह आदमी विरागी होगा। साथही माया को छोड़कर पुन माया में पड़े गा।

९९- यह पुरुष सत्य की खोज जन्म भर करता रहेगा।

१०० यह पुरुष नया धर्म चलायेगा।

१०१-यह प्रत्येक वस्तु को सुधर और शंका की दृष्टि से देखेगा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—३४

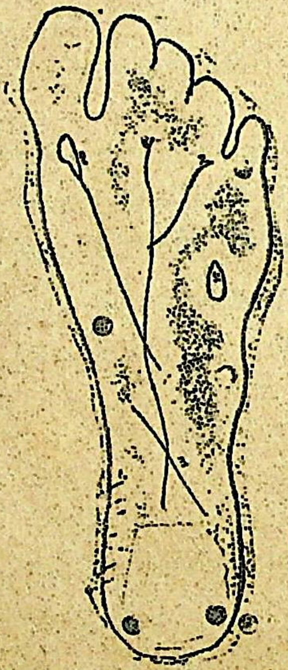

ऊपर के दिये हुये पैर में रेखाओं से अपनी स्थिति बदल दी है। अत इनके बारे में पूरा हाल जानने के लिये इनका विवरण, अधिक, आवश्यक है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१०२-यह पुरुष निपुत्र होगा।

१०३-यह पुरुष जीर्ण काय और रोगी होगा। परन्तु धनी होगा।

१०४-यह आदमी सद्भावी और प्रभु का भक्त होगा।

१०५-यह आदमी मूर्ख और नीच सेवी होगा।

१०६-यह आदमी सदैव कर्कश रहेगा।

१०७-यह आदमी दयालू और आस्तिक होगा।

१०८-यह सभी कामों को सूक्ष्म रूप में चाहेगा और कुछ न कर सकेगा अधोगति को प्राप्त होगा।

१०९-यह आदमी अत्यन्त विलासी होगा और अनाचार करेगा

११०-यह अत्यन्त सुशीला और यथोचित धर्म अनुयायी तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होगा।

१११-यह आदमी विद्वत प्रेमी तथा अन्वेषक होगा।

११२-यदि यही एक मात्र रेखा हो (११, ११) आदि न हों तो वह आदमी अत्यन्त दरिद्री होगा।

११३-बारह के साथ होने से यह रेखा वाला आदमी शान्ति प्रिय होगा।

११४-यह भी तो विशेष धनी होगा।

११५-इसके भी होने से अक्षय कीर्त्तिवान होगा।

११६-यह रेखा वाला बड़ा प्रतिष्ठित होगा और उसके यहाँ मान सवापियां रहेगी और सदैव प्रतिष्ठित रहेगा।

११७-यह आदमी असाधारण पुरुष होगा।

११८-यह आदमी तर्क शास्त्र का ज्ञाता होगा।

११९-यह आदमी अभागा होगा।

१२०-यह आदमी मायावर आक्रमण-कारी होगा।

१२१-यह सत्यप्रिय होगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१२२ यह विवादी यानी झगडालू होगा।

१२३ यह आदमी रसवादी यानी दो आदमियों को लड़ाकर स्वयं मज़ा देखेगा।

१२४ यह धनाड्य होगा।

१२५ यह आदमी अत्यन्त दीन स्वभाव का मधुभाषी और आस्तिक होगा।

१२६ यह आदमी अत्यन्त उदार होगा।

१२७ यह पाखण्डी होगा।

१२८ यह आदमी विवेकी होगा।

१२९ यह आदमी या तो सेनापति होगा अथवा प्रसिद्ध दस्यु होगा।

नोट—१२५ से ११९ तक की यदि सभी रेखायें हों तो वह आदमी अत्यन्त धनी और असाधारण पुरुष होगा सैकड़ों आदमी उसके पीछे चलेंगे।

१३० यह आदमी बडा विचारवान और सात्विक होगा।

१३१ यह आदमी प्राय नहीं होते। यदि कोई हो तो वह महा पुरुष होगा।

१३२ यह आदमी अत्यन्त चतुर और कूटनीतिज्ञ होते हैं।

१३३ यह पुरुष सुहृद होते हैं।

१३४ यह सरल और उदार होता है।

१३५ यह जिज्ञासु और मुमुक्षु होना है।

१३६ इस आदमी की सभी सदिच्छाएं पूर्ण होती रहेंगी।

१३७ यह आदमी देखने में भोले परन्तु बड़े कुविचारी विलासी और रक्षक बन कर भक्षक होते हैं।

१३८ यह अत्यन्त उदार और संयमी होते हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—३५

यह चित्र बांये पैर से समानता रखने वाली रेखाओं के क्रम के लिये बनाया है। इसका रेखाओं का क्या असर होता है उनका हाल जानने के लिये इसको समझ लेना अति आवश्यक है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१३९-यह पुरुष अत्यन्त धनवान और स्त्री दीन परन्तु विदुषी होगा।

१४०-यह रेखायें यदि दो हों तो धनी तीन हो तो कुविचारी, चार हों तो चोर और यदि एक हो तो योगी, पांच हो तो राजा और ६ हो तो अभागा, सात हों तो सिद्ध होता है।

१४१-यह पुरुष चतुर और प्रखर बुद्धि का होता है।

१४२-यह रेखायें यदि हों तो दानी एक हो तो लोभी, तीन हों तो विलासी और चार हों तो धनी होता है।

१४३-यह रेखा वाला दीर्घजीवी तथा विचारवान होताहै। वह आदमी विरक्त होना चाहेगा परन्तु न हो सकेगा।.

१४४-यह रेखायें यदि तीन हों तो वह अत्यन्त भाग्यशाली एक हों तो साधारण और यदि दो हों तो दूर दर्शी होगा।

१४५-यह आदमी तीन रेखा वाला उदार, दो वाला कुटिल और एक वाला कामी होगा।

१४६-यह आदमी तीन रेखा वाला क्रोधी दो वाला धनी, एक वाला व्यवसायीव सिद्ध हस्त होगा।

१४७-यह आदमी अत्यन्त प्रतिभा शाली होता हैं।

१४८-उंगली व पैर के जोड़ पर एक रेखा होना अच्छा है यवाकार है तो अति उत्तम, और यदि जंसीरेदार हो तो दरिद्र का चिन्ह है।

१४९-यह आदमी बड़ा विद्वान होगा।

१५०-यह आदमी कामातुर होकर सभी कुछ कर सकताहै

१५१-यह आदमी अत्यन्त आस्तिक परन्तु प्राय लोभी होते हैं।

१५२-यह आदमी सदैव व्यर्थ की उधेड़बुन में पड़कर जीवन नष्ट करते हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१५३ यह आदमी या घर और सुखी रहेगा।

१५४ यह आदमी दरिद्र होगा।

१५५ यह आदमी जिसकी यह रेखा गज रेखा से जाकर मिले और वह वहीं समाप्त हो जाय तो उसका भाग्योदय उसकी स्त्री के भाग्य पर निर्भर है। उसका विवाह प्राय भाग्यवान स्त्री से होगा।

१५६ जिसकी यह रेखा ऊंची उठ कर गज रेखा से मिल जाये और समाप्त हो जाये तो वह आदमी धनी गुण ग्राही और सौहार्द होगा।

बियालीसवाँ अध्याय

बाँया पैर

१५७ व १५९ रेखायें यदि दोनों हो तो अच्छा है। इसी तरह १५८ व १६० रेखायें अच्छी होती हैं।

बांये पैर के चित्र नं० में रेखाओं का क्रम १६ न० १ से आरम्भ किया गया है न० १ से लेकर १५ तक की रेखाओं का वर्णन अलग से किया गया है इनका चित्र से सम्बन्ध नहीं है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१-यदि बांये पैर और दाहिने पैर में एक सी रेखायें हों तो वह आदमी साधरण रहेगा।

२-यदि दाहिने पैर की अपेक्षा बांयें पैर में अधिक रेखायें हों तो वह आदमी स्त्रैण होगा तथा अपनी स्त्री अथवा अन्य स्त्री के कारण यश धनादि पावेगा। यह उक्ति अपनी माता व प्रमाता के नैहर से पाई हुई सम्पत्ति पर भी लागू होगी।

३-यदि राज चिन्ह जैसे शंख, चक्र, गदा पद्म, पताका आदि बांये पैर में हों तो वह ठीक नहीं। वह आदमी पददलित किया जावेगा।

४-यदि पाम वाद में सब त्रिकोण हों तो वह भाग्यशाली होता है।

५-बांये पैर में यदि चतुष्कोंण हों तो वह अभागा होता है। वह अपनी पैतृक सम्पत्ति वेचकर परदेश निकल जायेगा।

६ बांये पैर में यदि गज रेखा हो तो उसे गृहस्थी में शान्ती नहीं मिलती, जीवन कलह पूर्ण रहता है।

७ बांये पैर में यदि उलटी गदा रेखा हो तो वह दुश्मन से कभी न दबे और बड़ा वीर हो, परन्तु धोके से मारा जायगा

८ बांये पैर में यदि मच्छ रेखा हो तो उसकी मनोकामनायें बहुत बड़ी हो और वह कभी पूर्ण न हों इसकी मनोकामनायें सभी पूर्ण होनी चाहियें।

९ इस बाँये पैर में यदि वृश्चिक रेखा हो तो उसकी स्त्री अपने मामा अथवा पितृ भगिनी के हाथों द्वारा पाली पोसी गई होगी और वहाँ से धन पावेगी।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१०-यदि सर्प रेखा होय तो वह आदमी अत्यन्त उदार परन्तु क्रोधी भी अधिक हो। यह आदमी सर्प द्वारा काटा जावे अथवा स्त्री के षडयन्त्रो द्वारा मारा जावेगा।

११-जिसके बांये पैर की उंगली टेढ़ी हों वह आदमी अपनी स्त्री से कभी सुख न पावे।

१२-जो आदमी अपने बांये पैर को लथेड़ कर चले वह आदमी धनवान होगा।

१३-जिसके पैर में नेत्र रेखा हो वह आदमी पर स्त्री गामी होगा।

१४-जिसके पैर में गोल शून्य हो वह आदी अत्यन्त धनी मानी हो परन्तु अन्त समय में सब कुछ खो बैठेगा।

१५-बांये पैर में यदि मीन रेखा उलटी यानी उसका मुख ऐड़ी की तरफ हो तो वह आदमी अत्यन्त विलासी और सदैव कामनाओं में रत रहेगा।

१६-इस रेखा वाला पुरुष अत्यन्त निर्धन होगा।

१७-यह पुरुष धर्म कार्यों में चित्तशान्त करेगा।

१८-यह सदैव दुष्टता करेगा।

१९-यह आदमी हिंसक होगा।

२०-यह मनुष्य अत्यन्त सीधा और कोमल तथा मृदुभाषी होगा।

२१-से २५ तक की रेखायें यदि सब हों तो वह अत्यन्त धनी और प्रतिष्ठित हो। यदि मध्य की तीन हों तो पुत्र हीन हो एकाध हो तो अभागा होगा।

२३-से ३० तक की सभी रेखायें हो तो वह भाग्य-वान हो जो कार्य जिस समय चाहे वही कार्य पूर्ण पावे। इसके साथही साथ वह बड़ा कूट नीतिज्ञ होगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

३१ रेखा वाला मनुष्य अत्यन्त नास्तिक होता है ।

३२ यह घोर कुकर्मी होगा ।

३३ कुमार्ग गामी के यह रेखा होती है ।

३४ यह पहले नास्तिक रहेगा, पश्चात फिर सद्धर्म पालक बनेगा ।

३५ यह दोहरी रेखा वाला आदमी सदैव कपोल कल्पनायें कहा करेगा । व्यर्थ के तर्क और बात २ पर शंका करेगा, सदैव नई चालें सोचा करेगा ।

३६ यह आदमी अत्यन्त श्रेष्ठ होगा ।

३७ यह आदमी ऋण लेने में सिद्ध हस्त होगा तथा दूसरे की चीजों की ताक में रहेगा ।

३८ यह आदमी सदैव सत्कर्मों का पालन करेगा लेकिन ईर्ष्यालू होगा ।

३९ यह आदमी उदार पुत्रवान और कीर्तिवान होगा ।

४० यह आदमी अत्यन्त ही कामी परन्तु दीन बन्धू होता है ।

४१ यह आदमी स्त्रियों के पास बैठने योग्य नहीं है । यदि यह अवकाश पवेगा तो पूज्य स्त्रियों से भी विहार करेगा, यदि यह रेखा स्त्री के दाहिने पैर में हो तो वह भी कुलटा होगी ।

४२ यह आदमी आस्तिक होता है लेकिन मन चाहने पर प्रभू सेवा करता है आलसी बहुत होता है ।

४३ यह आदमी समय का मूल्य जानने वाला होता है ।

४४ यह आदमी सदैव दूसरों को कुमार्ग में ढकेलने वाला होता है ।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—३६

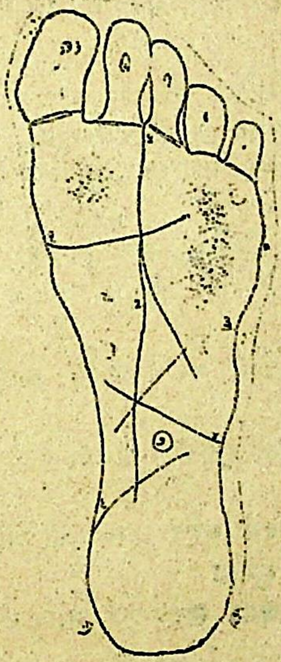

: चुद का पैर में होना जीवन सम्बन्धी कार्यों से कितनी समानता रखता है इसे जानने के लिये इस पैर को देखकर उस की दशा को जानना अति लाभदायक है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

४५-यह आदमी दूसरों के वैभव को न देख सकेगा, उसे हड़पने की घात में रहेगा।

४६-यह आदमी सदैव मन मोहक खायेगा और सफली-भूत किसी कार्य में न होगा सदैव आलस में रत रहेगा विज्ञासी अधिक होगा।

४७-यह तीर्थटन करेगा।

४८-यह सुन्दर दो नगर देखेगा।

४९-यह स्थिर चित्त न होगा, कार्य आरम्भ करके छोड़ देगा।

५०-इसकी रेखायें यदि ४९ वी रेखा को काटकर चौकोण बनावें तो यह मनुष्य अत्यन्त भागवत और कुल दीपक होगा।

५१-यह आदमी तर्क शस्त्र का ज्ञाता होगा और सुन्दर स्त्री पावेगा।

५२-यह श्रेष्ट कुलकी स्त्री पावे तथा साथ साथ सम्पत्ति भी पावे।

५३-यह आदमी सदैव दूसरे की आँखों से देखेगा और दूसरों के कानों से सुनेगा।

५४-यह आदमी सदैव क्रूर चाले सोचेगा और अपने समीपवर्त्तियों को उनमें फंसावेगा

५५ यह दूसरों के कहने में आकर अपना सर्वस्व स्वाहा करेगा।

५६-यह रेखा वाला सदैव गम्भीर, दूरदर्शी समय को न छोड़ने वाला और चालाक होता है।

५७-यह आदमी लड़ाका होगा।

५८-यह आदमी मायावर होगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

५६-यह आदमी घर से बाहर ही सुख पावेगा।

६०-यह आदमी सुन्दर स्त्री पावेगा।

६१-यह सुन्दर पुत्रवान होगा।

६२-इसका पुत्र कुकर्मी होगा।

६३-यह ऊंचा पद पावेगा।

६४-यह आदमी प्राय सौदागर होते हैं ऊंचा व्यौपार करते और बड़े २ उच्चाधिकारियों के कृपा पात्र होते हैं।

६५-यह आदमी प्राय रोगिणी स्त्री पाता है।

६६-यह आदमी संक्रामक रोगों से ग्रसित रहता तथा निम्न श्रेणी की स्त्रियों से प्रेम करता है।

६७-यह आदमी प्राय स्त्रियों का क्रय विक्रय करके धनार्जन करता है।

६८-यह आदमी बड़े उदार और भगवतय भक्त होते हैं।

६९-यह आदमी सदैव पराया अन्न खाता है।

७० यह दूसरों की कमाई खाते हैं और आलसी होतेहै।

७१-यह झूंठा लबार होता है।

७२-यह दूसरों की स्त्रियों को बुरी दृष्टि से सदैव देखेगा।

७३-यह कुलटा स्त्रियों के कुचक्रों में पड़कर अपना सर्वनाश कर लेता है।

७४-यदि यह आदमी ब्राह्मण हो तो वंश का कलंक होगा यदि अन्य वर्ण हों तो अच्छा होता है।

७५-यह आदमी प्राय कामी होते हैं।

७६-यह आदमी सदैव पराई सम्पदा को तकते हैं और अभागे होते हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

७७-यह आदमी पुत्र हीन होगा।

७८-यह आदमी अनेक विद्याओं का जानकार होता है

७९-यह आदमी सदैव दूसरों के बल पर गरजता है कुधान्य ग्रहण करने में आगा पीछा कुछ न सोचेगा।

८०-यह आदमी प्राय योगी होते हैं।

८१-यह आदमी इस रेखा के उदय होने पर ऊंचा पद पावेगा।

८२-इसके उदय होने पर कहीं से गिरेगा या पदच्युत होगा।

८३-इसके उदय होने पर गडा हुआ धन मिलेगा।

८४-इसके उदय होने पर पुरुष अपने मित्र या स्त्री से और यदि स्त्री हो तो पति से मिलेगी।

८५-यदि यह यवाकार पांचों उंगलियों में हो तो वह आदमी राजसी सुख भोगेगा।

८६-यह आदमी शरीरिक परिश्रम करके धन पैदा करेगा।

८७-यह कवि होगा।

८८-यह विद्वान होगा।

८९-यह विचार वान होते हुये भी स्त्रैण अधिक होगा।

९०-यह सौन्दर्य का उपासक और कवि या चितकार होगा।

९१-यह जिस कार्य को करे उसे पूर्ण ही करके छोड़ेगा।

९२-यह मनुष्य न्यायधीश होगा।

९३-यह आदमी परम भागवत होगा।

९४-यह तांतिक होगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—३७

रेखा जाल अर्थात जंजीर का पैर में दोनों आदमी के लिये किस अवस्था में लाभदायक या हानिकारक है इसका महत्व जानने के लिये इसके लक्षण और स्थिति का ज्ञान परम आवश्यक है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—३६

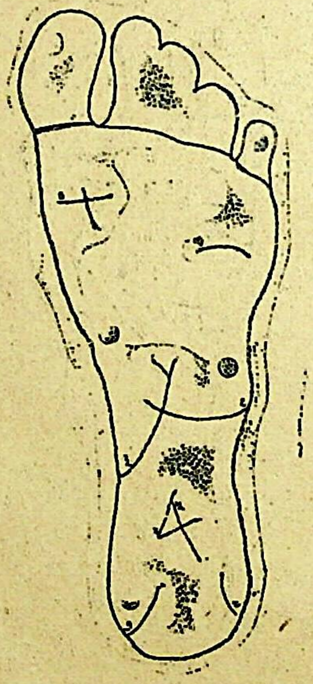

सीधी रेखायें पैर में होकर जीवन पर किस तरह का प्रभाव डालती हैं इसका विवरण तो अगले पेज पर है परन्तु उसकी स्थिति का ज्ञान इस चित्र से करना बहुत ही आवश्यक है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

९५-यह आदमी प्रेतों का भक्त होगा।

९६-यह उच्च पद पावेगा।

९७-यह दीर्घ जीवी होगा।

९८-यह स्त्री के कारण प्राण देगा। इसे जल से बचना चाहिये।

९ -यह बड़ा भाग्यशाली होगा।

१००-यह बड़ा, धनवान होगा परन्तु कुपुत्रवान होगा।

१०१-यह रेखा वाला अपने भाइयों को नष्ट है।

१०२-यह आदमी बड़ा ही कीर्तिवान परन्तु ईर्षालू होगा

१०३-इसके कन्यायें अधिक होंगी।

१०४-इसके पुत्र व कन्यायें बराबर होंगी।

१०५-यह आदमी दूसरे की स्त्रियों को वीर्यदान देकर दूसरों के पुत्रोपित्पति करेगा तथा स्वयं निपुत्र रहेगा।

१०६-यह आदमी विकारी दूसरे वंश के वीर्य से उत्पन्न हुआ होगा।

१०७-यह आदमी श्रद्धालु धनी भागवत परन्तु कामी होगा।

१०८-यह आदमी तुरन्त दण्ड देने वाला, कडुये चित्त का होगा। इसके यार कम होंगे।

१०९-बड़े बड़े उच्चपदाधिकारियों का कृपा योग तथा समाज में प्रतिभाशाली व्यक्ति होगा।

११०-इसके दुशमन बहुत होंगे परन्तु शीघ्र ही नष्ट होते जांयगे।

१११यह आदमी भिखारी होगा।

११२-यह दुर्व्यसनी होगा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

११३ यह कुलकलंक होगा। यह आदमी चतुर और गुण ग्राहक होगा।

११५ यह चतुर परन्तु ईर्षालु होगा।

११६ यह उपकार के बदले तिरस्कार और वरी करेगा।

११७ वह कंगाल से धनी नम्र होगा।

११८ यह बड़ा ही घमण्डी होगा तथा हानि उठायेगा।

११९ यदि यह श्वेत वस्तु का व्यापार करे तो लाभ उठायेगा।

१२० यह आदमी सरल चित्त तथा योगी होगा।

१२१-यह सदैव प्रपंचों से निकलने की कोशिश करेगा परन्तु और भी फंसेगा।

१२२ यह आदमी बात बात पर विवाद करे और सदैव युद्ध के हेतु तत्पर रहेगा।

१२३ यह स्वतंत्र विचार के होते हैं। दूसरे की प्रभुता स्वीकार नहीं करते।

१२४ यह आदमी सदैव दूसरे के कहने में चल कर अपना सर्वनाश कर बैठते हैं यद्यपि यह स्वयं उन्नतिशील होते हैं पर तो भी इनके यार व उपदेष्टा कुमार्गी होते हैं।

१२५ यह आदमी विद्वान और गान विद्या के प्रेमी होतेहैं,

१२६ यह निशाचर प्रकृति के होते हैं।

१२७ यह आदमी दूसरे और नीच वंशीय वीर्य से उत्पन्न होगा।

१२८ यह उद्यमी होगा।

१२९ यह सदैव अपनी प्रभुता बखान करने वाला और कामी होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१३० यह सदैव दूसरे की बुराई करने में रत रहेगा।

१३१ यह पहले बैरागी रहेगा, परन्तु फिर गृहस्थ बन जावेगा।

१३२ यह कृपण होगा।

१३३ यह सदैव घोर रोगी रहेगा।

१३४ यह स्वगृहिणी को छोड़ पराई स्त्री से प्रेम करेगा।

१३७ यह बहुत ही विद्वान होगा।

१३८ यह आदमी बड़ा परिश्रमी और चतुर होगा।

१३९ यह सदैव परमुखापेक्षी रहेगा।

१४० यह सरल चित्त तथा उदार होगा।

१४१ यह मनुष्य उदार, कीर्तिवान तथा पुत्र वाला होगा।

१४२ यह संयमी परन्तु नास्तिक रहता है।

१४३ यह संयमी और निरन्तर प्रभु सेवक रहता है।

१४४ तीन दोहरी आड़ी रेखाओं से मिलने पर यदि त्रिकोण बने तो तीन सुयोग्य बेटा हों, तीनों सिद्ध हस्त होंगे। मध्य का कुछ लबार होगा।

१४५ यह ईर्षालु होता है।

१४६ यह विद्वानों को देखकर प्रसन्न होने वाला तथा चार बेटों वाला होता है।

१४७ यह कृपण और अधिक कन्याओं वाला होता है।

१४८ यह धनी मानी और उच्च अभिलाषाओं वाला होता हैं।

१४९ यह अपने कुटम्बियों को आपस में लड़ाकर उनका नाश करता है। देखने में गम्भीर परन्तु बड़ा कुचक्री होता है। और बड़ा धनी भी होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—३६

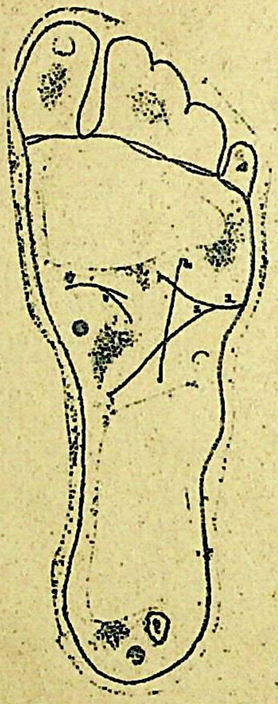

रेखा द्वीप का चित्र नं० २ की रेखा से ज्ञात हो सकता है। इसे देखकर इसकी स्थिति तथा उसके परिणाम को ज्ञात लेना जरूरी है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१५०-वह मृदु स्वभाव वाला, धनी होता है। यदि अकेला हो तो धन संचय न कर पावेगा।

१५१-केवल यही चक्र हो तो बड़ा मितव्ययी होगा।

१५२-केवल यही चक्र होगा तो अपव्यय करेगा।

१५३-केवल यही चक्र हो तो दूसरों से शत्रुता करावे और विजय करेगा।

१५४ अकेला यही चक्र हो तो दूसरे को आश्रित बनावेगा

१५५-यदि अंगूठा व पहली उंगली में दो चक्र हों तो धनी होगा। यदि अंगूठे व दूसरी अंगुली में दो चक्र हों तो धनी। यदि अंगूठे व तीसरी अंगुली में दो चक्र हों तो सुन्दर स्त्री मिले। यदि अंगूठे व चौथी उंगली में दो चक्र हों तो हठी हो। यदि पहली उंगली व दूसरी उंगली में दो चक्र हो तो सुन्दरी स्त्री वाला व पुत्रों के लिये नेष्ट है। यदि पहली व तीसरी उंगली में चक्र हो तो हठी और मदान्ध रहेगा। यदि पहली उंगली व चौथी में चक्र हो तो कीर्तिवान तथा यदि केवल पहली में ही चक्र हो तो सुन्दर योग है। यदि दूसरी उंगली ही में चक्र हो तो ठीक नहीं। यदि तीसरी में या चौथी में भी है तो वह सुपुत्रवान होगा। यदि तीसरी में ही चक्र हो तो धनी और यदि चौथी के साथ है तो राज कर्मचारी होगा। और यदि केवल चौथी में ही हो तो विलासी होगा।

१५६-से १५९ तक यदि पांचों शंख हों तो मनुष्य साधु प्रकृति का होता है। चार होने से दुखी तीन सुखी, दो से पुत्रहीन और यदि एक हो तो धनी परन्तु पुत्रहीन होता है।

१६०-यदि इसमें तीन रेखायें हों तो धनी, एक या चार (तीन से अधिक) ठीक नहीं होता।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१६७-इस रेखा वाले आदमी हमेशा अपने जीवन को दूसरों की भलाई में व्यतीत कर देते हैं।

१६८-यह आदमी कभी दूसरों के धन की आशा न करेगा व व्यापार में सन्तुष्ट रहेगा।

१६९-यह आदमी कभी अपनी स्त्री से सुखी न रहेगा।

१७०-यह आदमी अत्यन्त विषयी परन्तु अविवाहित रहेगा।

१७१-यह शिल्पजीवी होगा।

१७२-यह बड़ा ही कौतुकी, हंसमुख तथा विदूषक होगा

१७३-इसे बन्दीगृह में जाना होगा।

१७४-इसके उदय होने पर शारीरिक कष्ट हो, अच्छा होने पर पुत्र उत्पन्न कराती है। यदि जन्म से ही है तो पुत्रवान जानो।

१७५-इससे पुत्र शोक मिलता है।

१७६ इससे श्वसुर पुर से सम्पत्ति मिलती है।

१७७-इससे बन्दीगृह में जाना पड़ता है।

१७८-इसके विवाह बहुत हों पर स्त्रियां मर मर जांय।

१७९-इसे समय समय पर दैवी मदद मिलती रहेगी।

१८०-यह स्वतंत्र धर्म और नीति का मानने वाला होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१८१-यह दो प्रकार की होती हैं। एक की शाखा फूट कर अंगूठे की ओर जाती है, और एक की कानष्ठिका की ओर पहली कटी हुई वाला धन तो खूब अर्जन करे परन्तु संचय न कर सकेगा। दूसरा आदमी सुन्दर परन्तु कर्कशा स्त्री वाला होगा।

१८२-यह रेखा यदि उदय हो तो दो मास तक कठिन आपत्ति अथवा रोग रहे। जन्म से होने पर रेखा इधर उधर भटकाती है। पहली दशा में बीमारी के बाद शान्ति देती है।

१८३-यह तीन मास तक दुःखी रख कर मौत करे, यदि कोई अच्छे ग्रह हों तो भले ही बचे जन्म से होने पर कर्कशा स्त्री मिले व पुत्र शोकादि पड़े।

१८४-यह आदमी तत्वज्ञानी और विरक्त होता है।

१८५-यह आदमी इसके उदय होते ही विरक्त हो जाताहै

१८६-यह आदमी मोक्षदा पुरियों में परम पद को प्राप्त होता है।

१८७-यह आदमी अत्यन्त लम्पट होगा। इसके उदय होने पर अन्न का दुख पड़े।

१८८-यह आदमी कर्कश होगा स्वयं लड़ेगा दूसरों को लड़ायेगा तथा सदैव लड़ने व लड़ाने की युक्तियां सोचेगा।

१८९-यह आदमी अधिक दयार्द्र अधिक होता है, इसके उदय होने पर इसके पुत्री उत्पन्न होगी।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१९०-यह मनुष्य दीन, प्रभी परन्तु विलासी अधिक होगा। उदय होने पर पुत्र व धन देगी, अन्त होने पर शारीरिक पीड़ा देगी।

१९१-यह अत्यन्त ही विलासी तथा श्रृंगार रस का प्रेमी व गान विद्या का विशारद होगा।

१९२-यह कोमल व मृदु स्वभाव का अति धनी होगा इसके उदय होने पर बड़ा भारी वज्रपात सम दुख पड़े।

१९३-यह अत्यन्त कृपण होगा व इसके पुत्र जीवित न रहेंगे।

१९४-यह प्रेत भक्त और हिंसक होगा।

१९५-यह अत्यन्त सुशील होगा। उदय होने पर स्त्री की मौत होगी।

१९६-यह अत्यन्त ही निठोर होगा। उदय होने पर इस की चोरी व अन्त होने पर इसकी मौत होगी।

१९७-उदय होने पर मनुष्य को बड़े कष्ट देगी। यह मनुष्य अल्पायु और अभागा होगा। यह रेखा स्त्री को अटल सौभाग्यदायनी है।

१९८-यह मनुष्य पीले रंग की चीज व्यापार बढ़ायेगा।

१९९— यह कुचक्री, कुचली होगा। उदय होने पर अपने कुचक्र से धन पावेगा, अस्त होनेपर सर्वनाश होगा।

२००— यह अत्यन्त चतुर व उन्नतिशील होगा, परन्तु झूटे अपराध से जेल जायगा।

२०१—यह व्यापार में हानि उठावेगा। इसके उदय होने पर हानि ही हानि होगी। (स्त्री के नाम से व्यापार करे तो लाभ हो)

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चित्र—४७

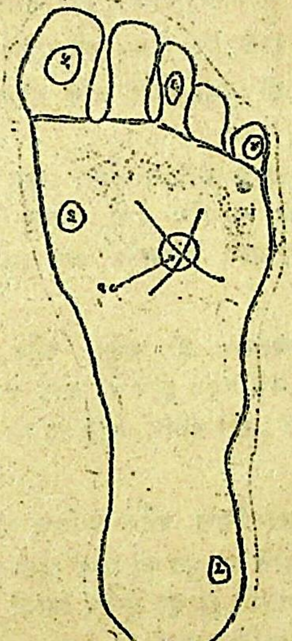

वृत में यदि दो रेखायें आकर एक दूसरे को काटे तो उनका क्या परिणाम होता है इसे पूरी तरह से जान लेना बहुत जरूरी है।

C-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGango

२०२ — यह स्वाभिमानी व धनी होगा, विश्वासघाती व अस्थिर बुद्धि का होगा

२०३ — यह कुकर्मी होगा

२०४ — यह अत्यन्त गुणवान और सभा चतुर राजकर्मचारी होगा। उदय होने पर उच्चपदस्थ राजकर्मचारी हो। पहले तो यह अस्त ही नहीं होती, यदि हो तो अनिष्ट नहीं करती।

२०५—यह मनुष्य धनवान होगा। यह अपने कर्म के फल स्वरूप किसी से सम्पत्ति पावे, परन्तु मिलने के समय कोई उसमें से आधा भाग बटवाले, अत उसे आधा भाग मिले।

२०६—यह अत्यन्त ही चतुर और व्यवसाय में उन्नतिशील होगा। इसके उदय होने प. कोई अच्छा रोजगार हाथ लगे। यह अस्त नहीं होती, यदि हो तो अनिष्ट नहीं करती।

२०७—यह सरल चित्त और अधिक कन्याओं वाला होता है इसके उदय होने पर पुत्र की मौत होती है।

२०८—यह आदमी सुन्दर सुन्दर स्त्रियों से रमण करे धनीमानी हो तथा राज-चिन्हधारी हो।

२०९—यह सरल विश्वासी होगा। यदि यह दोनों पैर में हो तो निश्चय देव दर्शन प्राप्त करे।

२१०—यह आदमी संगीत व धनर्वेद का ज्ञाता होगा। इसके उदय होने पर इसे कोई कोष प्राप्त हो।

२११—यह आदमी कठोर प्रकृति का होता है तथा सुनिश्चत्र चित्त का होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

२१२-सरल विश्वासी और अनेकों जन्म का भक्त होता है। इस जन्म में भी भक्त ही रहे देव दर्शन की आशा नहीं, आगे हरि इच्छा।

२१३-यह भक्त और देव दर्शन का लालची रहे सत्कर्म करे। इस रेखा के उदय होने पर कहीं से इसे घर मिले।

२१४-यह आदमी दुर्व्यसनी और विश्या प्रेमी रहें।

२१५-सुन्दर स्त्री वाला और सुन्दर विचारों वाला होता है इसके उदय होने पर इसे कुछ दैवी अनुभव प्राप्त हो।

२१६-यह कलह प्रिय होगा तथा प्रेतादिकों द्वारा पीड़ित भी किया जावेगा।

२१७-यह आदमी कुबुद्धि वाला व पूर्वजों की मान मर्यादा का नष्ट करने वाला होता है। इसके उदय होने पर आदमी कोई असाधारण निन्द्य कर्म करे।

२१८-खड़े सर्प वाला आदमी अपने समान किसी को न जाने न किसी का आदर सत्कार करें, सदैव दूसरों को नीचा दिखाने की घात में रहे।

२१९-पत्ते की भाँति यह आदमी स्त्री के नाम से व्यौपार करे व अधिक काम करे तो लाभ और सफली-भूत हो, अन्यथा नहीं इसके उदय होने पर स्त्री की मौत हो।

२२०-यह आदमी नीच सेवी व धनी हो।

२२१-यह कुमार्गी व निंद्य कर्म करे। यह धनी अवश्य हो

२२१-सदैव दूसरों के आश्रित रहें उदय होने पर धन जन सभी का नाश हो।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

२२३-यह आदमी सदैव नीचों को मित्र बनावे और नीच कर्म करे उदय होने पर वह जाती व कुल धर्म के विरुद्ध कार्य करे। यह जाति भ्रष्ट होता है। इसका जाति से बहिष्कार करना चाहिये ।

२२४-यह शान्त वाशिष्ट स्वभाव का होता है। जहाँ रहे, वहां अपने साथ सबका कल्याण करे । यह श्रेष्ट आदमी होगा ।

२२५-यह उच्च पदाधीश होगा ।

२२६-यह अति सरल निष्ठावान व धैर्यवान तथा सुयोग्य चार पुत्रों वाला होता है ।

२२७-यह दो सुयोग्य पुत्रों वाला हो । यह भाग्यवान होता है ।

२२८-यह सुन्दर विचारों वाला तथा इन्द्रियजीत रहेगा ।

२२९-यह आदमी जिसके अंगूठे के नखों से यवाकार रेखेती हो, वह धनी होता है। प्रथम अंगुली वाला रोगी होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तेतालीसवां अध्याय

भिन्न भिन्न ग्रहों के गुण वाले व्यक्ति।

गुरु के गुण वाले।

सामान्य कद मझोला बनावट रंग साफ मांस से भरा हुआ आंखें बड़ी चहरे पर मुस्कराहट पुतली बड़ी गोल और सफेद पलकें मोटी बरोनी लम्बी बाल लम्बे मोटे और मुड़े हुए भौंहें कम नोदार नाक सीधा मुंह बड़ा ओंठ मोटा गोल मांस से भरा हुआ ठुड्डी लम्बी शरीर में बाल अधिक और माथे में पसीना अधिक आता है वे खामोशी से शान के साथ चलते हैं अंगुली समकोण होती हैं। वाणी भी साफ मधुर ठाट ऊपर के साथ होती है।

स्वास्थ्य पित्त प्रकृति संगीन मिजाज गठिया अकसर होती है। खूब खाने पीने वाले और इन्द्रियों के वशी भूत बुरी वासना नहीं होती। गुरु का शासन सिर फेफड़ा व गले पर है इससे बहुधा फेफड़े व गले में शिकायत होती है।

मानसिक शक्ति। जन साधारण का कार्य करने वाले ऊंचे पद पर पहुंचने वाले और विशेष आत्माभिमानी अतिथी सत्कार अच्छे भोजन के खाने व खिलाने के शौकीन नेक स्वभाव उदार चित्त धन खूब खर्चने वाले और हर नीच और कंजूमी के कार्य से घृणा करने वाले होते हैं धार्मिक और शान के साथ बोहदा सज धज के साथ रीति रसम को करने वाले राजसी ठाठ और पुरानी रिवाज को मानने वाले कानून और हुकूम

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

की पावन्दी करने वाले शान्ती चाहने वाले परन्तु धोका और दंगों से घृणा करने वाले और जो उनके प्रियतम को तंग करे उनसे लड़ने वाले होते हैं वे सहज ही प्रसन्न हो जाते हैं और मित्रता निभाते हैं।

यदि अशुभ चिन्ह वाले हों तो घमंडी किफायतशार स्वार्थी शेखींबाज़ और अय्याश होते हैं ६० वर्ष की आयु होती है।

शनी के गुण वाले

लम्बे, पतले, पीले बाल का चहरा लम्बा गालों में गढ्ढे, हड्डियां उंची भौंहें काली जुड़ी हुई आखें छोटी घंसी काली रंजीदा होती हैं। आँखों की सफेदी कुछ पीली काम बड़े नाक पतली और नुकीली नथने कुछ खुले हुये होते हैं। मुंह बड़ा ओठ पतला दाँत सुन्दर जो जल्दी खराब होते हैं। डाढ़ी काली ठुडी लम्बी और कष्ट दायक होते हैं। और गर्दन लम्बी होती है। अंगुलियाँ लम्बी गठीली और अंगूठे का पहला पोर ज्यादा बड़ा और चपटा होता हैं। वाणी गहरी धीमी होती है। शनी के खराब किस्म के लोगों के बाल थोड़ और ज्यादा पतले किस्म के होते हैं। अपने शक्ल का लापरवाह होता है।

स्वास्थ्य—उनके टांग और पैरा में चोंट लगती है, शनी वाले बहुत से लफंगे होते हैं। ज्यादातर मेलनकोलिया, जो दीवानगी की तरह होती है से प्रसित होते हैं। वे पानी से घृणा करते हैं, और गन्दे रहते हैं। शनी का अधिकार कान दांत व पिंडली पर है। इस लिये पित्त बात ज्याधी व लकवा व बधिरत्व होता हैं। दांत कष्ट देने के बाद जल्द गिरते हैं। गिरने से आत्म घात से दबने की घटना होती है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मानसिक शक्ति-वे सक्ति, गमगीन, गम्भीर, धर्म में दृढ़ किन्तु कट्टर संगीत व गा गु क प्रेमी बुद्धिमान होते हैं। वे अपने तरीके से खुश होने, और समयनुसार धार्मिक विषय पर बहस करते और गुप्त विद्याओं क प्रेमी होते हैं। वे आज्ञाकारी नहीं होते, और दूसरों को भी भड़कते हैं। काले रंग की वस्तु पसन्द होती हैं। और जीवन के प्रति दिन आनन्द के शायद नहीं होते, और दूसरों की संगत पसन्द नहीं होती है। कड़े मिजाज के होते हैं। व कम खर्च और कनजूस होते हैं। सुस्त धूकते ही एकान्त प्रिय और अकसर मनुष्यों से घृणा करते हैं, सख्त दिल लड़के बच्चों को सताने वाले होते हैं। जेल में ज्यादातर ऐसे ही मनुष्य हैं। शनी के पर्वत का प्रभाव हो या शनी की अंगुली कमजोर हो तो वह आदमी स्वर्थी चिड़चिड़ा द्रोही बाद विवाद या झगड़े करने वाला भयानक दुशमान और धूर्त होता है। ७० वर्ष की आयु होती हैं।

"सूर्य के गुण वाले"

सूर्य के प्रभाव वाले भड़कीले स्वभाव कारीगर सुन्दरता के प्रेमी, होशियार समझदार होते हैं।

मामूली कदके, कुछ ऊंचे सुन्दर सुनाले रंग अच्छी चमक वाले, दाढ़ी ज्यादातर, माथा ऊंचा परन्तु चौड़ा आँखें बड़ी बादाम की शकल की चमकती हुई, बोली साफ और मीठी पुतली भूरे रंग की और बौरानी लम्बी होती है। गाल गोल और मजबूत, नाक सीधी और भौंह सुन्दरता से मुड़ी हुई होती है। मुंह बड़ा नहीं होता, आवाज मजबूत नहीं, लेकिन प्यारी और ठु गोल उमड़ी हुई नहीं होती, गर्दन लम्बी, सान

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

से युक्त और सुन्दर मुखी हुई और शरीर में बाल नहीं होते। वे मजबूत कम होते हैं। उनके शरीर में चर्बी ज्यादा नहीं होती उंगली चिकनी और समकोण वाले, अंगूठा औसत दर्जे और दूसरा पोर कुछ बड़ा होता है। हथेली और अंगुलियां करीब करीब बराबर और अनामिका गठीली होती है।

स्वास्थ्य-स्वाथ अच्छा होता है। आशावादी होता है आग से भय खाता बुद्धिमान और किसी किस्म की बुराई की तरफ नहीं जाता।

सूर्य की प्रधानता वाले को नेत्र विकार जोड़ों में रीढ़ की हड्डी में हृदय में पीड़ा होवे सम्भव है। सूर्य का प्रभाव नेत्र अंग जोड़ रीढ़ और हृदय पर होता है।

अशुभ हाथ वाले अन्धे हो जाते हैं। और अपनी जन्म भूमि से दूर जाकर मरते हैं। दिल की धड़कन बुखार का आना और लू लगने का भय होता है।

मानसिक शक्ति—आन्तरिक ज्ञान और कम मेहनत से हर बात सीखते हैं। वे नई ईजाद बड़ी होशियारी और चतुरता से करते हैं। प्रकृति और हुनर के प्रेमी होते हैं। और सुन्दर वस्तु और सम्मान की इच्छा रखते हैं। वे शीघ्र ही लोगों को आकर्षित करते हैं और मित्रता तथा शत्रुता पैदा कर लेते हैं। दुश्मन उनका कीना के साथ मुकाबला करते हैं। वे बहुत से मामलों को चाहे किस किस्म के हों आसानी से समझते हैं। और अक्सर ऊंची जगह पर पहुच कर धन पैदा करते हैं। इनकी कमजोरी यह है। कि वे अपने मनकी बात को जल्दी और साफ साफ कह देते हैं। धर्म में वह जिद्दी ही नहीं होते, लेकिन आसानी से विश्वास कर लेते हैं। और कुछ शक नहीं रह

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जाना । आन्तरिक शक्ति से वह गुप्त विद्यायें सीख लेते हैं, और उनकी दिमागी शक्ति कठिन समस्याओं को हल करने में उत्सुक रहती है उनका स्वभाव, खुश मिजाज दयावान, और सुन्दरता को ही चाहता है।

सूर्य वर्ग वाला चित्रकारी से घिरा रहना पसन्द करता है। धार्मिक कार्यों में धूपदान व संगीत पसन्द करता है। और पीला रंग पसन्द करता है।

स्त्रियाँ उनके सीधे स्वभाव को ताना देती हैं और वह कामयाब खाविन्द नहीं होते हैं। वह जल्द नाराज होता और तुरन्त ही शान्त हो जाता है। वह कभी कीना नहीं रखता। और खराब से खराब दुश्मन को मित्र बनाता है। लेकिन उसकी तेजी इस कदर डाह पैदा करती है कि उसके मित्र कम होते हैं। वह स्वच्छ वायु व्यायाम पसन्द करती है। वह भारी सफर करने वाला होता है। उसमें घमन्ड नहीं होता और न अभिलाषा ही होती है। उच्च प्रकार की इच्छा होती है।

बुद्ध के गुण वाले

बुद्ध की प्रधानता वाले में व्यवसाय कार्य की योग्यता, प्रत्येक विषय में प्रवेश करने की शक्ति होती है।

ये कद के छोटे गमोले प्रसन्न मुख कुछ लम्बा चेहरा और काठी के अच्छे होते हैं। रंग हल्का काला बाल अखरोट के रंग के आखिर में घूमे हुये, चमड़ा मुलायम और चेहरे का रंग जल्द बदलने वाला और माथा उठा हुआ होता है। ठोड़ी छोटी बालों से ज्यादा काली, भौंह पतली मुड़ी हुई जुड़ी हुई

होता है। आंखें गहराई में बैठी हुई तेज चुभती हुई और कभी-कभी चंचल, पीला, सफेद और पलकें पतली होती हैं।

नाक लम्बी सीधी गोलशिरा, होंठ पतले, ऊपर का भाग [illegible] हुआ मुंह आम तौर से आधा खुला हुआ, दाँत छोटे और हड्डी लम्बी और नुकीली, कभी-कभी मुड़ी हुई।

गर्दन [illegible] मजबूत, साना चौड़ा पट्टे बाजू [illegible] ठी ते। हड्डियाँ [illegible] और [illegible] कमजोर होते हैं।

[illegible] लचीली अंगुलियाँ मिले जुले किस्म [illegible] बुद्ध [illegible] अंगुलियाँ हमेशा नोकीली होती हैं। अंगुलियाँ बिना [illegible] का पहिला पोर गठीला, अंगूठा लम्बा और खास [illegible] दूसरा पोर लम्बा होता है।

अशुभ [illegible] में काले रंग का चन्चल घुसी आँखों वाले सुन्दर नहीं होते। हाथ अति ढीला अंगुलियां लम्बी और पीछे मुड़ी हुई होती हैं।

स्वास्थ्य—घबड़ाहट वाला स्वभाव जिगर और हाजमा कमजोर हाथ और बाजू में चोट या कष्ट और अक्सर टांगों में भी कष्ट होता है।

बुद्ध मस्तिष्क, कलेजा, गुरदा पर बुद्ध का शासन है। इससे मनुष्यों को उन्माद बाणी रुकने व कलेजा तथा गुरदे सम्बन्धी रोग होते हैं।

मानसिक शक्ति—कार्य में और ख्यालात में जल्द बाजी खेल कूद में होशियार और व्याख्यान देने में चतुर, इन्सान की पहिचान और अच्छे इन्तजाम कार होते हैं। नये २ मनसूबे के संचालक और अपने साथियों पर प्रभाविक होते हैं। जीवन

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

की चरित्र को भली प्रकार जानने वाले गणितज्ञ वैद्यिक और गुप्त विद्या के ज्ञाता, हुनर और साहित्य में आनन्द लेने वाले और व्यौपार में धन उपार्जन की सोंचने वाले होते है । ऐसे पुरुष डाक्टर लेखक हिसाबी व्यौपारी तथा वकील होते हैं।

और उसको बहस वकायत के साथ तर्क युक्त होते हैं । यह रोचक और नकल करने की शक्ति, प्रेमी, प्रसन्नचित, हसने वाला, यात्रा का अभिलाशी और प्राकृतिक सुन्दरता का उपासक होता है। पचिमी, बातूनी, चंचल, समझदार आशावान होते हैं। इनसे लाभ उठाना कठिन होता है। वे सदा चौकन्ने और अन्तर्ज्ञान की शक्ति रखते हैं । ८० वर्ष की आयु होती हैं।

जब अशुभ हाथ हो तो धोकेबाज अविवेकी चालाक द्रोही झूठा दगाबाज और हर बात का जान कारक बनता है और लोगों को धोखा देने के लिये और मूर्खता युक्त शक्ती होता है। और कभी २ अपने मनसूबों पर इतना विश्वास करता है । कि खुद धोखें में पढ़ कर मुसीबत उठाता है। चौरी की तथा अपने लाभ की फिक्र ज्यादा रहती है।

मंगल के गुण वाले

मंगल के वर्ग वाला रीति रस्म नहीं मानता, साहसी व उद्योगी होता है।

खुरदारा (लाल) चमड़े वाला, चौरस कन्धा, पहिला पोर अंगूठे का गोल, चपटो और अंगुलीं के तीसरे पोर भीतर चढे हुये होते हैं। कुछ ऊंचा मज़बूत छोटा, मोटा शिर खुले भौंह, गोल चहरा बाल छोटे, बडी चमकीली आंखे,

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

भूरे रंग की प्राकृतिक और लाल छींटों से युक्त मुँह बड़ा, पतला होंठ नीचे का मोटा दाँत छोटे पीले, भौंह सीधी मोटी होती है। नाक लम्बी नोक वाली चोंच की तरह मुड़ा ऊपर उठा, ठुड्डी सख्त कान छोटे पर शिर से दूर गाल मोटे हड्डी उठी। गर्दन छोटी मजबूत सीना उठा हुआ कंधा चौड़ा जाँघ छोटी टाँगे सुन्दर, चाल शान के साथ तेज रफ्तार आवाज कठोर व भारी होती हैं। हाथ सख्त मोटा अंगुलियाँ छोटी अंगूठे के पहले और दूसरे पोर न बड़ा होता है। हर काम में उतावले होते हैं।

अशुभ हाथ वाले का छोटा कद मुँह फूला मुँह बदरा डरावनी शकल भौंहें चढ़ी हुईं, आवाज घुरघुराहट दार कान लम्बे हाथ छोटे मोटे होते हैं।

स्वास्थ्य-संतोषी मिजाज खून की ज्यादती और चर्म रोग अन्दरूनी अवयवों का सूजना होता है। लड़ाई झगड़े में चोट खाता है। क्योंकि यह लड़ाका स्वभाव का होता है। स्वयम् ही अपनी लड़ाई लड़ा करता है। और अशुभ हाथ निर्दयी विषयी क्रोधी शराबी बेचैन होने भयंकर वार करने वाला जिसने जेल या फाँसी की सजा पाता है। बहुधा नीचों संगतमें जाता है। और फाँसी भी हुआ करती है।

मंगल के स्वभाव वाले पुरुषों को तीव्र ज्वर तथा अन्य भीतरी आघात होते। और अग्नि सम्बन्धी घटनायें होती हैं।

मानसिक शक्ति—यह उदार बल का गर्व करने वाला दाता और सच्चा मित्र होता है। धन अपने व पराये के लिये बरबाद करता है। और निडर होता है। अतिशय शक्ति वाला सख्तवाला और हद दर्जे का शैतान-सा खतरे में डाल देने वाला

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कामयाबी के मामले में होता है। यह प्रेम के मार्ग में जुर्रत का कार्य करने वाला और किसी की दलील को न सुनने वाला और खाने-पीने में शायक होता है। सरकस मेंढ़ों की लड़ाई भयानक खेल पसन्द करने वाला होता है। घमंड वाला, शान-शौकत वाला और हमेशा आगे आने वाला शान्त चित्त से कार्य करने वालों को घृणा से देखने वाला और यदि चित्रकार हो लड़ाइयां जंगल के शिकारों का चित्र बनाने वाला और यदि गवैया हो तो फौजी गान नाच इत्यादि यदि साहित्य प्रेमी हो तो युद्ध के किस्से कहने वाला होवे। यह सरदार होता है। और भीड़ में प्रशंसा का पात्र बनता है। यात्रा करना या घर के बाहर रहना पसन्द करता है। चमकीला लाल व नीला रंग पसन्द करता है। अशुभ हाथ वाला कातिल डाकू भारी बदमाश होता है।

७० वर्ष की होती है। ऐसे की मृत्यु अकसर शस्त्र अग्नि से होती है। चन्द्र की प्रधानता वाले कल्पना एकांतवास उदासीनता, कविता, गुप्त रहना, भविष्य सम्बन्धी स्वप्न देखते हैं।

चन्द्र के गुण वाले

लम्बा कद, गोल चौड़ा सिर, कनपटी के ऊपर भौंहें थोड़ी होती है सफेद रंग मुलायम मांस बड़े पुटठे और पतले बाल, शरीर पर बाल नहीं होते नाक छोटी और सिरे पर गोल होती है। मुंह छोटा, ओठ मोटे दांत बड़े पीले रंग के बेतरतीब और जल्दी खराब हो जाते हैं, मसूढ़े अक्सर पीले रंग के होते हैं।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आंखे गोल बड़ी और उभरी हुई पुतली चमकती भूरे रंग की होती हैं। पलकें बड़ी और मोटी ठुडी बड़ी और चर्बीदार और कान शिरके पास चपटे होते हैं गर्दन लम्बी मांस युक्त और कई झुरियां होती हैं सीना मांस से भरा, ढीला बदनुमा होता है। पेट निकला हुआ टांगें भारी टकनों के पास मोटा और पैर बड़ा होता है। अंगुली छोटी चिकनी और नुकीली होती है। अंगूठे का पहला पोर औसत दर्जे से कम होता है। बोली धीमी बिना जान के होती है।

अशुभ हाथों में बदबूदार पसीना चर्म सफेद और दाग भी होते हैं, पाखण्डी धोखेबाज डाही अयोग्य असंतुष्ट अन्ध विश्वासी होते हैं। स्वास्थ्य-खून की कमी लगतार काम करने को शक्ती नही होती। हमेशा बड़े सोच विचार में रहना है और स्वास्थय की चिन्ता हमेशा लगी रहती है लकवा, मिर्गी मूरछा का भय रहता है। डूबनेका भय, किडनी ब्लेंडर जननेन्द्रिय गठिया और अंतड़ियों की बीमारी रहती है चन्द्र प्रधानता वाले को जल धर यक्ष्मा उन्मादादि तथा जलसम्बन्ध की घटना होती है।

मानसिक शक्ति—चंचल अविश्वास विचारों में तन्मय हो जाने वाले खुद गरज और घूमनेके शायक होते है। शक्की ज्यादातर और भावुक कविता साहित्य और गाना पसन्द करते हैं, चन्द गुण वाले आदमी शकल से और स्वाद में कम सखुन होते हैं। स्त्रिया नेक चलन कम और प्रेमी की भक्त होती है। एक कार्य में कम लगने वाले और वादा करने वाले लेकर पूरन नही करते एकान्त में सखा होते हैं लेकिन कार्य में नही होते। खाते खूब हैं पानी कम पीते हैं। और गहरा नशा पसन्द करते हैं उनको सफेद और जर्द सफेद रंग पसन्द होता

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

है। अक्सर व्यापार ना पसन्द करते हैं। चित्रकारी के प्रेमी होते हैं। रंग गहरा सफेद, पीला पसन्द होता है। वायु से बजने वाले जैसे अलगोजा बांसुरी पसन्द करते हैं।

अशुभ हाथ वाले बेपरवाही मूर्खता युक्त बातूनी चुगलखोर अक्सर नटखट और वास्तविक कामी नहीं होते सिर्फ नई खलबली पैदा करने वाले होते हैं। ये बेशरम खुदगरज गुस्ताख होते हैं।

शुक्र के गुण वाले

स्वरूपवान इन्द्रियों के सभी सुखों को पसन्द करने वाले प्यार करने वाले तथा आकर्षण करने वाले होते हैं। रूप सुन्दर सफेद रंग गुलाबी लिये हुये मुलायम और नाजुक औसत दर्जे से ऊंचा गोल चिकने भौंहें सुन्दर झुकी हुई और तंग होती हैं। बाल काले लम्बे और बहुतायत से होते हैं मुलायम लहरी हों, भूरे हो या काले बाल हों आयु के साथ नही बदलने वाले होते हैं। नाक सुडौल लम्बा जड़ पर चोड़ी लेकिन सुन्दर और सिर पर गोल होती है।

आखें बड़ी स्वच्छ और सुन्दर मीठे चितवन कुछ उठे हुये और भूरे रंग की होती है। पुतली चौड़ा पलकें रेशम की तरह उम्दा और नीली नसें दिखाई पड़ती है।

मुह छोटा सुडोल ओठ लाल कुछ ही मोटा, खास कर नीचे का ओठ और दांत चिक्कन घने सुन्दरता से सजे हुऐ। ठुडडी लम्बा गोल, कान छोटे नाजुक शक्ल के, गर्दन साफ शानदार ताख से यक्त कंधे तंगे और सुन्दरता के साथ उतार चढ़ावदार सीना चौड़ा नही होता परन्तु स्वस्थ और भरा हुआ होता है। कमर पतली होती है। हाथ मुलायम छोटा चिकना अंगुलियां तुल्य, पञ्जे मोटा और अंगूठा छोटा होता है।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

वाणी मधुर आकर्षण करने वाली होती है।

हाथ में अस्वस्थ सफेद रंग, मांस गढ़ी आँख बाल ललाई लिये हुए भारी चपटी नाक ओंठ बहुत मोटे मास कर नीचे वाला बड़ा तथा बड़ा पेट चलने में मुश्किल आवाज भारी हाथ ढीला भद्दा और बद शक्ल अंगुली मोटी चिकनी और छोटी होती है।

स्वास्थ्य—मजबूत प्रसन्नचित्त प्रेम से उत्पन्न होनेवाली बीमारी के शिकार और गुप्तइन्द्रियाँ में कष्ट होता है। प्रमेह आतशक की बीमारी होती हैं। शुक्र का अधिकार जननेन्द्रियों पर है इससे हिस्टीरिया व स्त्रियों के अन्यरोग होते हैं।

मानसिक शक्ति—प्रसन्नचित्त सोहबतदार दूसरों को प्रसन्न करने में इच्छुक और सबका प्रिय, हाजमा उत्तम लेकिन बहुत खाने पीने वाला नहीं होता। सुगन्ध गाना बजाना प्रकृति की सुन्दरता पसन्द और कामी होता है। और कामिना उसके जीवन में विशेष असर डालती है। सच्चाई-पसन्द अक्सर धोखा खाता है। और जल्द क्षमा कर देता है। वह लड़ाई दंगा न पसन्द करता है और प्रेमी के लिये सब कुछ करने को तैयार होता है और अगर लेखक या चित्र कार हो तो लोगों के दिल को खींच लेता है। यात्रा प्रिय जवाहिरात रेशमी वस्त्रादि संग्रह करने का प्रेमी और सुगन्धों व पुष्पोंमें आनन्द आता है गुलाबी व नीला पीला रंग पसन्द करता है बाजों में बड़ी सारंगी पसंद करता है अशुभ हाथ में शक्की व्यभिचारी फिजूल खर्च पागल गन्दे अश्लील विचार और परिणाम में जेल होती है।

मुद्रक-देवीदास गोपालदास वर्मा भारत प्रिंटिंग प्रेस, भरतपुर।

C-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGar

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri